# हिन्दी और अंग्रेज़ी की व्याकरणिक संरचना
# अनुवाद के सन्दर्भ में

# HINDI AUR ANGREZI KI VYAKARANIK SANRACHANA
# ANUVAD KE SANDARBH ME

THESIS SUBMITTED TO

COCHIN UNIVERSITY OF SCIENCE AND TECHNOLOGY

FOR THE DEGREE OF

DOCTOR OF PHILOSOPHY

BY

DARLY MATHEW

DEPARTMENT OF HINDI
COCHIN UNIVERSITY OF SCIENCE AND TECHNOLOGY
COCHIN 682 022
1995

# DECLARATION

I hereby declare that the thesis entitled "Hindi aur Angrezi ki vyakaranik sanrachana anuvad ke sandarbh me" has not previously formed the basis of the award of any degree, diploma, associateship, fellowship or other similar title or recognition.

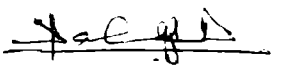

Darly Mathew
Department of Hindi
Cochin University of Science and Technology
Cochin - 22
20/03/1995

# CERTIFICATE

This is to certify that this thesis is a bonafide record of work carried out by Darly Mathew under my supervision for Ph.D Degree and no part of this thesis has hitherto been submitted for a degree in any University.

Devaki
20-3-95

Dr. N. G. Devaki
Reader
Department of Hindi
Cochin University of Science and Technology
Cochin - 22
20/03/1995

# AKNOWLEDGEMENT

This work was carried out in the Dept. of Hindi, Cochin University of Science and Technology, Cochin - 22 during the tenure of scholarship awarded to me by DoE, Govt. of India and the Cochin University of Science and Technology. I sincerely express my gratitude to Cochin University of Science and Technology for this help and encouragement.

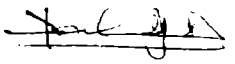

Darly Mathew
Dept. of Hindi
Cochin University of Science and Technology
Cochin - 22

# भूमिका

बाह्य जगत से संपर्क स्थापित करना शुरू करते ही मनुष्य को कई तरह के सवालों का जवाब देना पडा। वह अपनी सहजीवियों की आशा-आकांक्षाओ को जानने में उत्सुक हो गया। इससे उन्हें विचारों के विनिमय की आवश्यकता महसूस हुई। इसके परिणामस्वरूप भाषा का उद्‌भव हुआ। इसी प्रकार कई देशों में भिन्न-भिन्न भाषाओ का आविर्भाव हुआ। उन्हें नियमित करने के लिए व्याकरण का स्वरूप भी निर्धारित किया गया।

समय के बीतते ही एक भाषा-भाषी जनसमूह दूसरी भाषा-भाषी जनसमूह से विचारों के विनिमय करने लगा तो समस्यायें उत्पन्न हो गई। इस बहुभाषिक स्थिति की विडम्बनाओ से बचने के लिए अनुवाद का आविष्कार किया गया। इससे ही संस्कृति, सभ्यता, ज्ञान -विज्ञान के क्षेत्र में आदान-प्रदान संभव है। भारत जैसे विकासशील बहुभाषा-भाषी राष्ट में प्रशासन, कानून, शिक्षा, व्यवसाय, विज्ञान एवं कृषि के क्षेत्र में प्रगति पाने के लिए अनुवाद की सख्त जरूरत है। भावात्मक एकता को कायम रखने के लिए तथा विज्ञान और प्रौद्योगिकी के नूतन आविष्कारों को आम जनता तक पहुँचाने में भी अनुवाद का योगदान अत्यन्त ही महत्वपूर्ण रहा है। भाषा की स्तरीयता, उपयोगिता, तथा संवहनक्षमता अनुवाद से बढ जाती है। अत: अन्तर्देशीय पैमाने पर जानकारी अर्जित करने का माध्यम होने के कारण भारतवर्ष में अनुवाद का महत्व दिन-व-दिन बढता जा रहा है।

राष्टभाषा हिन्दी का विकास संपर्क भाषा के रूप में द्रुतगति से हो रहा है और वह विदेशों में भी भारतीय संस्कृति के सशक्त माध्यम के रूप में ख्याति-प्राप्त है। विश्व की तीसरी सबसे अधिक बोलीजानेवाली भाषा होने के कारण अन्य भाषाओ से हिन्दी में अनुवाद का महत्व निर्विवाद है।

ज्ञान-विज्ञान के नये स्पन्दन अंग्रेजी के द्वारा ही हमें उपलब्ध होते हैं। राष्टभाषा हिन्दी की

समग्र तथा प्रगामी प्रगति केलिए अंग्रेज़ी से हिन्दी में वैज्ञानिक साहित्य के अनुवाद की जरूरत पडती है। प्रशासन के सभी क्षेत्रों में हिन्दी के साथ अंग्रेजी का भी प्रयोग होने के कारण इन दोनों भाषाओ में परस्पर अनुवाद का महत्व और भी बढ जाता है। यह हिन्दी के प्रयोजनमूलक पक्ष के विकास की एक पहलू है।

अनुवाद की समस्यायें मुख्य रूप से दो स्तर पर आती हैं। पहली समस्या अर्थपक्ष से जुडी हुई है तो दूसरी भाषावैज्ञानिक पक्ष से। भाषावैज्ञानिक समस्याओ में व्याकरणिक समस्या ही मुख्य है। अर्थपक्ष से जुडी हुई समस्या का समाधान समानार्थी शब्दों की खोज, नये शब्द निर्माण, लिप्यन्तरण आदि से एक हद तक हो सकता है।

प्रत्येक भाषा के व्याकरण में कुछ-न-कुछ भिन्नता अवश्य रहती है। यह भाषा की अस्मिता की पहचान है। विभिन्न भाषाओ की वाक्य रचना, रूप रचना, शैली आदि में विविधता होने के कारण स्रोतभाषा में अभिव्यक्त विचार लक्ष्यभाषा की प्रकृति के अनुरूप रूपान्तरित करने केलिए अनुवादक को व्याकरण का सम्यक ज्ञान होना चाहिए।

अंग्रेज़ी व्याकरण और हिन्दी व्याकरण की कई पहलुओ पर अध्ययन हो चुका है। लेकिन अनुवाद के सन्दर्भ में इन दोनों भाषाओ के व्याकरण का समग्र रूप से अध्ययन अभी तक नहीं हुआ है। अत: प्रस्तुत शोध प्रबन्ध का विषय "हिन्दी और अंग्रेजी की व्याकरणिक संरचना अनुवाद के सन्दर्भ में" रखा गया है। प्रस्तुत विषय का महत्व, उसकी आवश्यकता एवं मौलिकता स्वयं विदित है। वर्तमान युग विशेष अध्ययन (specialization) का युग है। इस अध्ययन में दोनों भाषाओ की व्याकरणिक विशेषताओ की चर्चा करके उनमें से अनुवाद में सबसे अधिक प्रासंगिक पक्षों को लेकर अध्ययन किया गया है। इनमें से एक -एक पक्ष एक -एक शोध प्रबन्ध का विषय हो सकता है। यह अध्ययन मशीनी अनुवाद के लिए 'मेटालैंग्वेज' (Metalanguage) तैयार करने की दिशा में भी सहायक सिद्ध होगा। व्याकरणिक ग्रन्थों से,

प्रकाशित हिन्दी और अंग्रेजीश अनूदित ग्रन्दों से तथा अपनी ओर से उदाहरण देकर अनुवाद के संदर्भ में आनेवाली प्राय: सभी व्याकरणिक समस्याओ को सुलाझाने का प्रयास किया गया है।

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध पाँच अध्यायों में विभक्त है।

प्रथम अध्याय - "भाषा, अनुवाद और व्याकरण" है। इसमें इनसे संबन्दित सामान्य बातें, अनुवाद की सीमा, अंग्रेजी और हिन्दी की व्याकरणिक विशेषताएँ आदि पर संक्षिप्त रूप में विचार किया गया है। इन व्याकरणिक विशेषताओ में से अनुवाद के सन्दर्भ में विशेष ध्यान देने योग्य तत्वों को लेकर आगे का अध्ययन संपन्न होता है।

"हिन्दी और अंग्रेजी के वाग्भाग-पहला खण्ड" शीर्षक द्वितीय अध्याय में संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण और क्रिया का अध्ययन है। इसमें इन वाग्भागों के अनुवाद में आनेवाली कठिनाइयों पर उदाहरणों के द्वारा विचार किया गया है। हिन्दी की जटिल लिंग-व्यवस्था, वचन और कारक के कारण अनुवाद में उत्पन्न होनेवाली कठिनाइयों पर यहाँ चर्चा की गई है। सर्वनाम संख्या में कम होने पर भी अभिव्यक्ति-क्षमता में सर्वाधिक सक्षम है यहाँ नौ प्रकार के सर्वनामों का प्रयोग और उनके अनुवाद की समस्याओ पर चर्चा की गई है। अंग्रेजी में विशेषण का विकार नहीं होता, तुलनावस्था में ही उनपर कुछ परिवर्तन होता है। दोनों भाषाओ के विशेषणों के प्रकार्यगत विशेषताओ की ओर भी अध्ययन हुआ है। क्रिया वह धुरी है जिनसे सम्बद्ध होकर वाक्य में संज्ञा अपना रूप ग्रहण कर प्रतिफलित होती है। हिन्दी में क्रिया की अकर्मकता  सकर्मकता के कारण आनेवाली संरचनात्मक विशेषताएं और प्रेरणार्थक क्रिया के अनुवाद की समस्यायें आदि प्रस्तुत अध्ययन के विश्लेषण का विषय है। दोनों भाषाओ की सहायक क्रियाओ के विशेष प्रयोग, यौगिक, संयुक्त तथा मिश्र क्रियाओ पर भी अध्ययन किया गया है।

तृतीय अध्याय भी दोनों भाषाओ के वाग्भागों से सम्बद्ध है। इसमें अव्ययों की चर्चा की गई है। यहाँ अंग्रेजी के सम्बन्ध सूचकों और हिन्दी के परसर्गों का अध्ययन विस्तार से किया गया है। अंग्रेजी के उपपद (Articles) और उनके अनुवाद में जो कठिनाइयों उत्पन्न होती हैं उनपर भी प्रकाश डाला गया है।

चौथा अध्याय - "हिन्दी और अंग्रेजी की वाक्य संरचना" है। इस अध्याय में वाक्य के अर्थपरक और संरचनापरक प्रकार्य के आधार पर विश्लेषण हुआ है। निषेधवाचक वाक्यों पर इस अध्याय में काफी चर्चा होती है। सरल, संयुक्त तथा मिश्र वाक्य यहाँ चर्चित है।

"साहित्यिक और साहित्येतर अनुवाद तथा मशीनी अनुवाद की संभावनाएँ" शीर्षक पाँचवें अध्याय में निबन्ध, कहानी, कविता, कार्यालयीन सामग्री आदि से उदाहरण देकर अनुवाद का विश्लेषण किया गया है। इसके बाद मशीनी अनुवाद पर विचार किया गया है। मशीनी अनुवाद आज बहुचर्चित क्षेत्र होने के कारण इसके लिए आवश्यक रूपनातरित व्याकरण पर भी संक्षिप्त रूप में अध्ययन प्रस्तुत किया गया है।

अन्त में इस अध्ययन का निष्कर्ष उपसंहार में दिया गया है।

शोध की वैज्ञानिक प्रणाली पंचसूत्री कार्यक्रम के अनुसार अंत में सहायक ग्रन्थसूसी प्रस्तुत की गई है।

इस शोधकार्य संपन्न करने के लिए शोधार्थिनी ने जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली, ऐ.एस.डी.एल., तिरुवनन्तपुरम, अंग्रेजी संस्थान और भाषा विज्ञान विभाग, केरल विश्वविद्यालय से सहायक सामग्री एकत्र की।

प्रस्तुत विषय से सम्बद्ध शोधार्थिनी के प्रपत्र `अनुवाद' त्रैमासिक शोध पत्रिका और `अनुवाद

चिन्तन के सैद्धान्तिक आयाम' (संपादक डॉ. गार्गी गुप्त, भारतीय अनुवाद परिषद शीर्षक पुस्तक में प्रकाशित हुआ। और एक प्रपत्र द्रविड भाषावैज्ञानिकों की अन्तर्देशीय संगोष्ठी में `युवा वैज्ञानिक पुरस्कार' (Young Linguist Award) के लिए चुन लिया गया।

प्रस्तुत शोधप्रबन्ध के प्रणयन में निर्देश और सहयोगिता देने में कार्यरत डॉ० एन० जी० देवकी के प्रति शोधार्थिनी विशेष आभार व्यक्त करती है। डॉ० एम० ईश्वरी (विभागाध्यक्षा), डा० पी० वी० विजयन (भूतपूर्व विभागाध्यक्ष), डा० एन० रामन नायर (भूतपूर्व विभागाध्यक्ष), डा० एन० ई० विश्वनाथ अय्यर (भूतपूर्व विभागाध्यक्ष), डा० के० मुरुकेशन (रीडर, विदेशी भाषा विभाग) और विभाग के अध्यापकों, अध्यापकेतर कर्मचारियों, साथियों, बन्धुजनों और उन लोगों को जिन्होंने इस शोधकार्य में प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप में प्रेरणा और सहायता दी हैं, उनके प्रति भी शोधार्थिनी आभार व्यक्त करती है।

व्याकरण, भाषाशास्स्त, अनुवाद जैसे विषयों के प्रति रुचि रखनेवाले अध्येताओ के लिए प्रस्तुत प्रबन्ध सहायक होगा तो शोधार्थिनी अपने को धन्य मानूँगी। अंत में, अपने इस प्रयास में कहीं कमियाँ, त्रुटियाँ या अभाव हो तो शोधार्थिनी उनकेलिए क्षमाप्रार्थी हूँ।

विनीता,

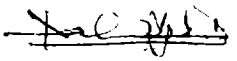

डार्ली मेत्यू

# विषयानुक्रम

अध्याय - 1 भाषा, अनुवाद और व्याकरण 1-14

1.1 भाषा

1.2 अनुवाद

1.2.1 अंग्रेज़ी - हिन्दी अनुवाद का महत्व 1.2.2 अनुवाद की सीमाएँ 1.2.3 आदर्श या सफल अनुवाद 1.3 व्याकरण 1.3.1 अंग्रेज़ी और हिन्दी की व्याकरणिक विशेषताएँ

निष्कर्ष।

अध्याय - 2 15-121

हिन्दी और अंग्रेज़ी वाग्भाग - I

2.1 विकारी शब्द

2.1.1 संज्ञा 2.1.1.1 लिंग 2.1.1.2 वचन 2.1.1.3 कारक

2.1.2 सर्वनाम 2.1.2.1 पुरुषवाचक सर्वनाम 2.1.2.2 संबन्धसूचक /अधिकारबोधक सर्वनाम 2.1.2.3 निर्देशवाचक/निश्चयवाचक सर्वनाम 2.1.2.4 अनिश्चयवाचक सर्व नाम 2.1.2.5 सम्बन्धवाचक सर्वनाम 2.1.2.6 प्रश्नवाचक सर्वनाम 2.1.2.7 आश्चर्यसूचक सर्वनाम 2.1.2.8 निजवाचक और अवधारक सर्वनाम 2.1.2.9 विभक्तीय सर्वनाम 2.1.2.10 संयुक्त सर्वनाम 2.1.2.11 सर्वनाम के रूप में `one' 2.1.2.12 `it' और `they' का विशेष प्रयोग

2.1.3 विशेषण 2.1.3.1 विशेषणों का संरचनात्मक प्रकार्य 2.1.3.2 सार्वनामिक विशेषण 2.1.3.3 `-वाला' प्रत्यययुक्त विशेषण 2.1.3.4 सादृश्यवाची विशेषण 2.1.3.5 द्विरुक्त विशेषण 2.1.3.6 विशेषणों की तुलना

2.1.4 क्रिया 2.1.4.1 मुख्य क्रिया 2.1.4.1.1 सरल धातु 2.1.4.1.1.1

अकर्मक क्रिया 2.1.4.1.1.2 सकर्मक क्रिया 2.1.4.1.1.3 प्रेरणार्थक क्रिया 2.1.4.1.2 सामासिक धातु 2.1.4.1.3 मिश्र धातु 2.1.4.1.4 संयुक्त धातु 2.1.4.1.5 यौगिक धातु 2.1.4.1.6 नाम धातु 2.1.4.1.7 अनुकरणात्मक धातु 2.1.4.2 सहायक क्रिया 2.1.4.2.1 मुख्य सहायक क्रियाएँ 2.1.4.2.2 वृत्यात्मक सहायक क्रियाएँ 2.1.4.2.3 अर्धवृत्तिबोधक सहायक क्रियाएँ 2.1.4.3 काल 2.1.4.3.1 भूतकाल 2.1.4.3.1.1 सामान्य भूतकाल 2.1.4.3.1.2 तात्कालिक अपूर्ण भूतकाल 2.1.4.3.1.3 पूर्ण भूतकाल 2.1.4.3.1.4 अपूर्ण भूतकाल 2.1.4.3.1.5 आसन्न भूतकाल 2.1.4.3.2 वर्तमानकाल 2.1.4.3.2.1 सामान्य वर्तमानकाल 2.1.4.3.2.2 तात्कालिक वर्तमानकाल 2.1.4.3.3 भविष्यत् काल

निष्कर्ष।

अध्याय - 3 122-169

हिन्दी और अंग्रेज़ी वाग्भाग - II

अविकारी शब्द / अव्यय

3.1 क्रियाविशेषण

3.1.1 सरल / साधारण क्रियाविशेषण 3.1.1.1 कालवाचक क्रियाविशेषण 3.1.1.2 आवृत्तिवाचक क्रियाविशेषण 3.1.1.3 स्थानवाचक क्रियाविशेषण 3.1.1.4 रीतिवाचक क्रियाविशेषण 3.1.1.5 परिमाणवाचक क्रियाविशेषण 3.1.1.6 निश्चयवाचक और निषेधवाचक क्रियाविशेषण 3.1.1.7 कारणवाचक क्रियाविशेषण 3.1.2 प्रश्नवाचक क्रियाविशेषण 3.1.3 सम्बन्धवाचक या संयोजक क्रियाविशेषण 3.1.4 एक ही क्रियाविशेषण के भिन्नार्थी रूप 3.1.5 वाक्य में क्रियाविशेषण का स्थान 3.1.6 क्रियाविशेषणों की तुलना

3.2 सम्बन्धसूचक

3.3 समुच्चयबोधक अव्यय 3.3.1 समानाधारी या समानाधिकरण समुच्चयबोधक 3.3.2 असमानाधारी या व्यधिकरण समुच्चयबोधक

3.4 विस्मयादिबोधक / मनोभावबोधक अव्यय

3.5 उपपद 3.5.1 `डेफिनिट आर्टिकिल'-`the' 3.5.2 `इनडेफिनिट आर्टिकिल' -`a/an'

निष्कर्ष

अध्याय - 4 170-211

हिन्दी और अंग्रेज़ी की वाक्य - संरचना

4.1 वाक्य - संरचना और शब्द - क्रम

4.2 वाक्य भेद 4.2.1 कथनात्मक वाक्य

4.2.1.1 विधानार्थक वाक्य 4.2.1.2 निषेधवाचक वाक्य

4.2.1.3 प्रश्नवाचक वाक्य 4.2.1.3.1 क - प्रश्नवाचक वाक्य

4.2.1.3.2 वैकल्पिक प्रश्नवाचक वाक्य

4.2.1.3.2.1 सामान्य वैकल्पिक प्रश्नवाचक वाक्य

4.2.1.3.2.2 हाँ -न वैकल्पिक प्रश्नवाचक वाक्य

4.2.1.3.3 प्रतिध्वनि प्रश्नवाचक 4.2.1.3.4 आधायित प्रश्नवाचक वाक्य 4.2.2 आज्ञार्थक वाक्य 4.2.2.1 प्रत्यक्ष आज्ञार्थक वाक्य 4.2.2.2 परोक्ष आज्ञार्थक वाक्य 4.2.3 मनोभावात्मक वाक्य 4.2.3.1 संभावनार्थक / संदेहार्थक वाक्य 4.2.3.2 इच्छार्थक वाक्य 4.2.3.3 विस्मयादिबोधक वाक्य / आश्चर्यसूचक वाक्य 4.2.4 संकेतवाचक वाक्य 4.2.5 सरल वाक्य 4.2.6 असरल वाक्य 4.2.6.1 संयुक्त वाक्य 4.2.6.2 मिश्रवाक्य

4.3 वाच्य 4.3.1 कर्तृवाच्य 4.3.2 कर्मवाच्य 4.3.3 भाववाच्य

नष्कर्ष

अध्याय - 5 212-235

साहित्यिक एवँ साहित्येतर अनुवाद तथा मशीनी अनुवाद की

## सम्भावनाएँ

5.1 सृजनात्मक साहित्य का अनुवाद

5.2 प्रशासनिक, बैंकिंग, कानूनी और वैज्ञानिक सामग्री का अनुवाद

5.3 मशीनी अनुवाद

निष्कर्ष

उपसंहार

संदर्भ

# अध्याय -1
# भाषा, अनुवाद और व्याकरण

# अध्याय 1

# भाषा, अनुवाद और व्याकरण

## 1.1. भाषा

भाषा, संप्रेषणीय विचारों की अभिव्यक्ति के लिए प्रयुक्त ध्वनि प्रतीकों की एक व्यवस्था है। वह अभिव्यक्ति की सबसे श्रेष्ठ माध्यम भी है। प्रत्येक भाषा, उसके बोलनेवालों और समझनेवालों के लिए एक विशिष्ट कला है। प्रत्येक कला की अपनी निजी विशेषताएँ हैं, और वह एक सन्देश या विचार की वाहिका होती है। उसी प्रकार भाषा भी एक कलात्मक अन्तर्दृष्टि पाठकों के, बोलने और सुननेवालों के सामने रखती है। लेकिन अन्य कलाओ की तुलना में भाषा में संवहन-क्षमता ज्यादा है।

सभी कलाएँ अनुकरण की ही उपज है। भाषा के विकास का भी इससे सम्बन्ध है। संसार की सभी भाषाओ में इसकेलिए प्रमाण मिलते हैं। आंगिक चेष्टाओ से अपना विचार व्यक्त करनेवाला मनुष्य अनुकरण ही करता था। आंगिक चेष्टाओ के साथ मुँह से उच्चरित होनेवाले शब्दों का भी प्रयोग करने लगा तो वह और अधिक सफल निकल पडा। सबसे पहले एक भाव को व्यक्त करने के लिए एक विशेष ध्वनि समूह का प्रयोग किया गया और दुबारा उसे व्यक्त करते वक्त उसी ध्वनि या ध्वनि समूह का ही प्रयोग किया गया। उसे ग्रहण करनेवाला भी उसी ध्वनि या ध्वनि-समूह का प्रयोग करने लगा तो वह ध्वनि-समूह उस भाव या विचार या वस्तु का प्रतीक बनकर सार्थक हो गया और उस जनसमूह में प्रतिष्ठित हो गया। यही भाषा के विकास का प्रथम चरण है।

एक अपरिचित भाषा सुनने से कुछ भी हमारी समझ में नहीं आएगी, वह शब्द मात्र रहेगा। जो कुछ हमने सुना है, देखा है या अनुभव किया है, उसका प्रभाव रहे बिना हमारी किसी

भी कल्पना या भावना का अस्तित्व हो ही नहीं सकता। भाषा का भी ऐसा एक पक्ष है। भाषा मात्र शब्दों की व्ववस्था नहीं, वह मूलत: ध्वनि प्रतीकों की व्यवस्था है, इसलिए वह मूल रूप में कला है। शब्द कितनी भी व्यवस्थित हो, वह भाषा नहीं बन सकती, जब तक उसका एक निश्चित अर्थ हो, या वह विचारों के संप्रेषण में समर्थ हो। इसलिए ही भाषा उसके प्रयोक्ता की अपनी कला है, और प्रयोक्ता के बिना उसका अस्तित्व भी संभव नहीं है।

भाषा एक सामाजिक प्रक्रिया अवश्य है, जो सामूहिक व्यवस्था से सम्बद्ध है। वह एक राष्ट के इतिहास, सभ्यता और संपूर्ण विकास का प्रतिनिधित्व भी करती है। उसके वास्तविक प्रकार्य (Function) को पूर्ण रूप से या पर्याप्त मात्रा में समझना कठिन काम है; क्योंकि वह मनुष्य के कार्यकलापों या व्यवहारों का एक महत्वपूर्ण अंग है। जो भी हो, भाषा का सबसे बुनियादी प्रकार्य विचारों का संप्रेषण (Communication) है। वह यथार्थ को प्रतीकात्मक रूप में शब्दों के द्वारा अभिव्यक्त करने का सशक्त माध्यम भी है। भाषा, मनुष्य के विचारों के संप्रेषण का, सबसे व्यापक रूप में प्रयुक्त तथा सबसे विकसित रूप है। संप्रेषण प्रक्रिया मूलत: किसी तरह की जानकारी एक स्रोत से ग्राहक तक का संवहन है। यहाँ स्रोत और ग्राहक दोनों मनुष्य है। भाषावैज्ञानिकों की दृष्टि में भाषा पूर्ण रूप से एक मानवीय प्रक्रिया अवश्य है। विचारों के आदान प्रदान का सबसे सफल माध्यम होने के कारण यह मनुष्य की एक चिरंतन आवश्यकता भी है। जहाँ भाषा समाज सापेक्ष वस्तु है, वहाँ समाज के सुसंगठन के लिए एक अनिवार्य तत्व भी।

"वह मन के आशयो विचारों, विश्वासों, भावों, आवेगों, अभिप्रायों का प्रबन्ध करने और नियंत्रित करने का साधन है। इससे मनुष्य खुद और अपने परिवेश के बारे में जाने या अनजाने समझ सकता है।"[1]

## 1.2. अनुवाद

विश्व में तीन हज़ार से अधिक भाषाएँ बोली जाती है। फिर भी सारे विश्व की गतिविधियों का समाचार हमें मिलता है, दिन-प्रतिदिन मिलता रहता है। यह, इन तीन हज़ार भाषाओ के ज्ञान से नहीं, बल्कि अनुवाद नामक एक मूल्यवान प्रक्रिया से ही होता है। अत: भाषा का वैविध्य ज्ञान-विज्ञान के आदान-प्रदान में कोई बाधा उपस्थित नहीं करता। "इसके बिना देशों के बीच सूचनाओ का प्रसारण नहीं हो सकता। आधुनिक प्रौद्योगिकी का यह अनिवार्य तत्व है, जो अन्त:राष्टीय है और भाषिक व्यवधानों के आर-पार विचारों के प्रसारण पर आधारित है।"[2]

`अनुवाद' शब्द का अर्थ है `पीछे चलना' या `पीछे कहना'। अंग्रेजी शब्द `Translation' शब्द की उत्पत्ति लैटिन शब्द `translatus' से हुआ है जो `transfero' क्रिया का भूतकालिक कृदन्त है।

अनुवाद का प्राथमिक प्रकार्य, एक भाषा में व्यक्त विचार को दूसरी भाषा में वक्त करना या एक भाषा-भाषी जनसमूह के विचारों को दूसरी भाषा-भाषी लोगों को भली भाँती समझता है।

जब एक ही चीज़ या भाव के लिए प्रयुक्त शब्द/ध्वनि प्रतीक दो भाषाओ में भिन्न होता तो उसका अन्तरण करके विचारों का विनिमय करने लगा। इस प्रकार प्रतीकान्तरण अनुवाद का मूल बन गया।

देश, काल, परिस्थिति, सभ्यता, संस्कृति, राजनीति आदि के कारण भाषा में भिन्नता और परिवर्तन अवश्य दिखाई पडते हैं। अत: प्रतीकों में भी अन्तर भाषा-भाषा में अवश्य है। एक भाषा में उपलब्ध सभी प्रतीकों के लिए दूसरी भाषा में प्रतीकों की खोज करने लगा तो अनुवाद की समस्याएँ सामने खडी हो गई।

हमारे चारों ओर के सब तरह के नूतन आविष्कार और तकनीकी प्रगति में अनुवाद का योगदान है। विश्व के किसी एक कोने में किए गए नूतन आविष्कारों का पता हमें अनुवाद के ज़रिए ही मिलता है या अनुवाद, विज्ञान और तकनीकी के क्षेत्र में अन्तर्देशीय पैमाने पर जानकारी अर्जित करने का एक माध्यम है जिसपर आधुनिक समाज का अस्तित्व आश्रित है। अत: आधुनिक युग में अनुवाद की आवश्यकता निर्विवाद है।

भारत जैसे बहुभाषा-भाषी राष्ट के सामाजिक विकास में अनुवाद महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। समाज निर्माण एवं विकास के लिए राष्ट की संगठनात्मक इकाइयाँ परस्पर सम्बद्ध होना चाहिए। यह भाषा के द्वारा ही संभव है। अनुवाद के माध्यम से भिन्न-भाषा समाजों में परस्पर विचारों का आदान-प्रदान तथा पारस्परिक सामाजिक सांस्कृतिक पहचान संभव हो जाती है। अत: सामाजिक विकास एवं राष्टीय एकता का, अनुवाद के साथ गहरा सम्बन्ध है।

अनुवाद का महत्व दिन-व-दिन बढता जा रहा है। जैसे-जैसे नूतन आविष्कार होते हैं, वैसे-वैसे उपलब्ध जानकारी अनुवाद के जरिए विश्व भर में प्रसारित की जाती है। इस प्रौद्योगिकी युग में मूल से बढकर अनुवाद का महत्व है। इसलिए ही मशीनी अनुवाद के क्षेत्र में द्रुतगति से नये नये आविष्कार हो रहे हैं। इस प्रकार अनुवाद इस युग की माँग बन चुका है।

### 1.2.1 अंग्रेजी-हिन्दी अनुवाद का महत्व

विश्व भर में अंग्रेजों के अधिकार जमाने के कारण `अंग्रेजी बोली', अंग्रेजी भाषा बन गई। यही कारण है कि हमारे देश में भी अंग्रेजी संपर्क भाषा के रूप में आज भी प्रयुक्त होती है। आधुनिक युग में मुद्रण और अन्य आविष्कारों से अंग्रेजी तेजी से भारतवर्ष में प्रचलित हो गई। हिन्दी गद्य का विकास अंग्रेजी की छाया में ही हो गया। इसलिए हिन्दी गद्य पर अंग्रेजी का स्पष्ट प्रभाव देखा जा सकता है।

अंग्रेजी की भूमिका भारतवर्ष में बहुआयामी हो गई। सभी क्षेत्रों में अंग्रेजी का प्रयोग होने पर साधारण लोगों के लिए यह कठिन माध्यम हुआ। इसी सिलसिले में अंग्रेजी से भारतीय भाषाओ में अनुवाद अनिवार्य साबित हुआ। विज्ञान की आधुनिक विधाएँ इंजीनीयरी, चिकित्सा विज्ञान आदि भी यहाँ अंग्रेजी के माध्यम से प्रचलित हुआ तो इनमें भी अनुवाद का महत्व सिद्ध होने लगा।

संसार में बोली जानेवाली भाषाओ में हिन्दी का तीसरा स्थान है। हिन्दी भारत के बाहर बर्मा, श्रीलंका, मौरीशस, फिजी, मलेष्या, दक्षिण और पूर्वी आफ्रिका में भी बोली जाती है। यह राष्टीय स्तर पर एक संपर्क माध्यम बनने के साथ ही अन्तर्राष्टीय स्तर पर यूनेस्को एवं संयुक्त राष्ट संघ में भी एक महत्वपूर्ण भाषा बनने लगी है।

भाषा के विकास और उपयोगिता में अनुवाद का योगदान है। स्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा इससे लाभान्वित हो जाती है।

विश्व-भर की गतिविधियों की जानकारी अंग्रेजी में प्रस्तुत की जाती है और उसके ज़रिए हमारी भाषा में भी मिलती है। भारत जैसे विकासशील राष्ट के लिए अनुवाद की सख्त ज़रूरत इस अवसर पर अनुभव हो जाता है। इसलिए अंग्रेजी हिन्दी अनुवाद का महत्व और भी बढ जाता है।

### 1.2.2 अनुवाद की सीमाएँ

"अनुवाद एक अन्तःभाषिक संप्रेषण व्यापार है जो शत-प्रतिशत पूर्ण नहीं होता परन्तु साथ ही यह भी सत्य है कि ऐसा कोई पाठ नहीं जिसका अनुवाद न हो सकता हो।"[3] व्यक्ति-व्यक्ति के बीच जो अन्तर है उसके समान ही है भाषा-भाषा के बीच का अन्तर। प्रत्येक भाषा इतिहास, सांस्कृतिक पृष्ठभूमि और सभ्यता का प्रतिनिधित्व करने के कारण ही यह अन्तर

रखती है। इसलिए ही अनुवाद की सीमाएँ अवश्य विद्यमान हैं जो समस्या के रूप में हमारे सामने मौजूद है। "सम्बद्ध भाषाओ में सांस्कृतिक और भाषागत दूरी जितनी अधिक होगी, अनुवादगत सीमाओ की मात्रा भी उतनी अधिक होगी।"[4] संस्कृति या सभ्यता से सम्बद्ध शब्द, विशेष भाषा प्रयोग, व्याकरणिक विशेषताएँ आदि अनुवाद को सीमाओ में बाँधती हैं। इन्हीं सीमाओ को पार करने के लिए अनुवादक को नये प्रयोगों (Techniques) का सहारा लेना पडता है, जैसे पाद टिप्पणी देना, नये शब्दों की रचना करना, शब्दों का लिप्यन्तरण करके उनका विस्तार करना आदि।

### 1.2.3 आदर्श या सफल अनुवाद

आदर्श अनुवाद वही है जिसमें स्रोत भाषा में व्यक्त सम्पूर्ण अर्थ लक्ष्य भाषा में ज्यों-का-त्यों प्रस्तुत कर दिया जाता है। इसकेलिए अनुवादक को मूल कृति का अनुवाद उसके भावगत सौन्दर्य को दृष्टि में रखकर इस प्रकार करना चाहिए कि मूल लेखक की कृति को पढकर पाठकों के मन में जो अनुभूति एवं प्रभाव उत्पन्न होता है, वही अनुभूति एवं प्रभाव अनूदित कृति को पढकर होना चाहिए। यानेे आदर्श अनुवाद सदैव मूल लेखन के समकक्ष होता है। अनुवाद की सफलता एक हद तक स्पष्टता पर निर्भर है।

## 1.3 व्याकरण

भाषा वाक्यों से बना है तथा वाक्य शब्दों से। वाक्य में शब्दों का प्रयोग एक विशेष क्रम में होता है जिससे विचार या अर्थ का पारस्परिक सम्बन्ध स्थापित हो जाता है। एक ही शब्द के विभिन्न रूपों से अर्थ में अन्तर लाया जा सकता है। काल, वचन, स्त्री-पुरुष आदि वैजात्य को स्पष्ट करने में भी भाषा समर्थ है। अभिव्यक्ति में पूर्णता और स्पष्टता भी भाषा

की पहचान है। उसकेलिए भाषा को नियमबद्ध करने की ज़रूरत पडती है। यहाँ व्याकरण शास्त्र का महत्व है।

"एक भाषा का व्याकरण, यदि वह भाषा वैज्ञानिक का हो या सीखनेवाले का हो, उस भाषा का विस्तार है।"[5] भाषा की शुद्धता, स्तरीयता और अभिव्यक्ति का सुचारुता व्याकरण के बिना संभव नहीं। इसका मतलब यह नहीं कि व्याकरण पढे बिना शुद्ध भाषा का प्रयोग नहीं कर सकता। भाषा के संरचना-पक्ष में व्याकरण का अद्वितीय स्थान है। अर्थपक्ष व्याकरण से सम्बद्ध होकर ही भाषा का वास्तविक स्वरूप बनता है।

भाषा की प्रकृति में एक दार्शनिक खोज के फलस्वरूप ही व्याकरण का उद्‌भव हुआ है, क्योंकि व्याकरण के नियम भाषा के व्यावहारिक प्रयोगों के आधार पर बनाए गए हैं।

सीमित शब्दों से व्यापक अर्थ की ओर ले जानेवाला एक विचित्र माध्यम है व्याकरण। मनुष्य-मस्तिष्क किस प्रकार भाषा को अपनाने हैं और उसका प्रयोग करते है, यह व्याकरणिक नियमों से जाना जा सकता है।

प्रत्येक भाषा का अपना व्याकरण होता है। एक ही भाषा परिवार की भाषाओ में भी व्याकरण अलग होता है। शब्दों के स्तर पर समतुल्यता मिलने पर भी व्याकरणिक स्तर पर भिन्नता ही भाषा की अस्मिता है।

भाषा में व्याकरण का महत्व जितना है, अनुवाद में उसका महत्व इससे बढकर है, क्योंकि हरेक भाषा का अपना व्याकरण होता है जो एक दूसरे से भिन्न होता है। स्रोत और लक्ष्य भाषा के व्याकरणिक नियमों का सम्यक ज्ञान अनुवाद में अन्य सभी तत्वों के समान महत्वपूर्ण है।

## 1.3.1 अंग्रेज़ी और हिन्दी की व्याकरणिक विशेषताएँ

अंग्रेजी में `Capital letters' और `Small letters' हैं तो हिन्दी में एक ही प्रकार के अक्षर मिलते हैं।

हिन्दी कुछ अपवादों को छोडकर जैसी बोली जाती है वैसे ही लिखी जाती है। इस भाषा में कोई अक्षर या अक्षर युग्म उच्चरण के समय लुप्त नहीं होता। रोमन लिपि का यह सबसे बडा दोष है कि उसके बहुत से वर्णों का उच्चारण के समय लोप हो जाता है।

इसके वर्ण निर्धारित ध्वनि को अभिव्यक्त करते हैं। हिन्दी के शब्दों में बहुत से प्रत्यय लगते हैं, परिणामस्वरूप एक शब्द से दूसरा शब्द आसानी से बनाया जा सकता है।

हिन्दी वर्णमाला या देवनागरी वर्णमाला विश्व की सर्वाधिक वैज्ञानिक वर्णमाला मानी जाती है। इस वर्णमाला में प्राय: सभी प्रकार की भाषाओ को अभिव्यक्त करने की क्षमता है। यह सुव्यवस्थित ढंग से निर्मित लिपि है।

एक ध्वनि के लिए एक सांकेतिक चिह्न इस लिपि की सबसे बडी विशेषता है। देवनागरी लिपि का प्रत्येक सांकेतिक चिह्न एक निश्चित ध्वनि का बोध कराता है, जबकि रोमन लिपि में ऐसा नहीं है। रोमन लिपि में `क' ध्वनि के लिए `k' और `c' इन दोनों ध्वनि चिह्नों का प्रयोग किया जाता है। परन्तु हिन्दी में `k' ध्वनि केलिए `क' के अतिरिक्त दूसरा कोई चिह्न नहीं मिलता।

`उपपद' अंग्रेजी की निजी विशेषता है जो अन्य कुछ भाषाओ में भी मिलती है, जैसे, जर्मन, फेंच आदि। यह हिन्दी में नहीं मिलता। ये संख्या में दो ही हैं, लेकिन व्याकरणिक संरचना में ये महत्वपूर्ण कार्य करते हैं। इनका प्रयोग करने से एक अर्थ होता है तो न करने से दूसरा अर्थ होता है। इन्हें विशेषण की कोटि में रख सकते हैं।

अंग्रेजी में प्रत्यक्ष कथन (Direct speech) और परोक्ष कथन (Indirect speech) में जो संरचनागन अन्तर है, वह हिन्दी में नहीं है। अंग्रेजी में प्रत्यक्ष कथन को अप्रत्यक्ष कथन में बदलते वक्त क्रिया और सर्वनाम पर अधिक ध्यान देना पडता है। हिन्दी में भी अंग्रेजी के अनुकरण पर कोई-कोई ऐसे वाक्यों का प्रयोग करते हैं लेकिन वे हिन्दी की प्रकृति के अनुकूल नहीं हैं।

हिन्दी में सरल वाक्य ही ज़्यादा मिलते हैं। लेकिन अंग्रेज़ी के प्रभाव के कारण लम्बे-लम्बे मिश्र और संयुक्त वाक्यों का प्रयोग हिन्दी में भी देखा जा सकता है।

भारतीय संस्कृति से सम्बद्ध एक व्याकरणिक विशेषता है, आदरसूचक बहुवचन का प्रयोग। आदरसूचक शब्दों का प्रयोग और आदरसूचक क्रियारूपों का प्रयोग हिन्दी की एक निजी विशेषता है, जो अंग्रेज़ी जैसी भाषाओ में नहीं मिलता।

अंग्रेज़ी में तीन व्याकरणिक लिंग होते हैं तो हिन्दी में दो ही हैं। हिन्दी के सारे के सारे संज्ञा शब्दों को इन दो वर्गों के अन्तर्गत रखा गया है। अंग्रेजी में संज्ञा का लिंग अन्य शब्द-भेदों को प्रभावित नहीं करता तो हिन्दी में यह विशेषण और क्रिया पर ज्यादा प्रभाव डालता है। इसलिए वाक्य-संरचना में हिन्दी की लिंग-व्यवस्था का मुख्य स्थान है।

भूतकाल में `ने' का प्रयोग और उसके अनुसार आनेवाला संरचनागत परिवर्तन आधुनिक हिन्दी की एक प्रमुख विशेषता है। इसके समान अंग्रेजी में कोई शब्द नहीं मिलता।

आधुनिक अंग्रेज़ी में केवल तीन कारक मिलते हैं तो हिन्दी में सात कारक मिलते हैं। कोई-कोई वैयाकरण सम्बोधन को भी कारक के अन्तर्गत रखते हैं। अंग्रेज़ी में कारकीय रचना सम्बन्ध सूचकों से की जाती है। सम्बन्ध सूचकों का विशेष प्रयोग और क्रिया के साथ सम्बन्ध

सूचकों के योग से बनी वाक्यांशीय क्रियाओ (Phrasal verbs) का प्रयोग अंग्रेज़ी व्याकरण की एक विशेषता है। हिन्दी में कारकीय रचना परसगों से होती है।

विशेष अर्थ से युक्त सामासिक शब्द हिन्दी में मिलते हैं तो अंग्रेज़ी में इनके स्थान पर संयुक्त शब्द मिलते हैं।

अंग्रेज़ी में तुलना करते समय विशेषणों का रूप बदल जाता है, परन्तु हिन्दी में वह ज्यों-का-त्यों रहता है। हिन्दी में संस्कृत विशेषणों का भी प्रयोग प्रचलित है। संस्कृत में अंग्रेज़ी की ही भाँती विशेषण का रूप बदल जाता है।

अंग्रेजी में मुख्य क्रिया, सकर्मक या अकर्मक होने पर कोई संरचनागत परिवर्तन नहीं होता। हिन्दी में क्रिया की सकर्मकता-अकर्मकता का ज्ञान भूतकालिक वाक्य-संरचना में अवश्य होना चाहिए। भूतकाल में मुख्य क्रिया सकर्मक होने पर कर्ता के साथ `ने' का प्रयोग होता है और क्रिया कर्म के लिंग-वचनानुसार बदल जाती है। यदि कर्म के साथ कोई परसर्ग होता तो क्रिया पुल्लिंग एकवचन में होती है। कुछ क्रियाओ के आने पर कर्ता के साथ परसर्ग नहीं जोडा जाता। अंग्रेज़ी में ऐसी कोई कठिनाई नहीं है।

हिन्दी में क्रिया के प्रथम और दूसरा प्रेरणार्थक रूप मिलते हैं। अंग्रेजी में क्रिया का प्रेरणार्थक रूप नहीं मिलता। प्रेरणार्थक वाक्य बनाने के लिए अंग्रेजी में `get, make' जैसी क्रियाओ का सहारा लेते हैं। अंग्रेज़ी में दूसरा प्रेरणार्थक वाक्य साधारण नहीं है।

अंग्रेज़ी और हिन्दी वाक्यों में शब्दों का क्रम तो अलग है। अंग्रेजी में कर्ता के तुरन्त बाद ही क्रिया आती है तो हिन्दी में वाक्य के अन्त में। वाक्य में शब्दों का क्रम बदलने से अर्थ भी बदलता है। हिन्दी में प्रश्नवाचक शब्द का प्रयोग प्रश्नवाचक वाक्य में कहीं भी रखा जा सकता है। हिन्दी में प्रश्नवाचक वाक्य के आरंभ में ही इसका प्रयोग किया जा सकता है।

अंग्रेज़ी में हाँ-न प्रश्नवाचक वाक्यों में प्रश्नवाचक शब्दों का प्रयोग नहीं किया जाता। हिन्दी में `हाँ-न' प्रश्नवाचक वाक्यों में इनका प्रयोग किया जा सकता है।

हिन्दी में मूल वाक्य छह प्रकार के हैं जिसके भेद- विभेद और भी हैं। अंग्रेज़ी में मूल वाक्य पाँच प्रकार के हैं।

हिन्दी में मुख्य मूल वाक्य तथा उनके भेदोपभेद ये हैं-

1. योजी (copula) क्रिया युक्त

इसके तीन भेद हैं।

(क) कर्ता + स्थैतिक (Existential) क्रिया

(ख) कर्ता + पूरक संज्ञा + योजक क्रिया

(ग) अधिकारी कर्ता + अधिकारित (Possessed) पूरक + अधिकार द्योदक (Possessive) क्रिया।

2. अकर्मक क्रिया युक्त

कर्ता + अकर्मक क्रिया

इसके दो भेद हैं

(क) `ने' युक्त

(ख) `ने' रहित

3. सकर्मक क्रिया-युक्त

इसके दो भदे होते हैं

(क) कर्ता + कर्म + एककर्मक क्रिया

(ख) कर्ता + गौण कर्म + द्विकर्मक क्रिया

4. अप्रत्यक्ष क्रिया युक्त

कर्ता + को + कर्म + अप्रत्यक्ष क्रिया

5. बाध्यताबोधक क्रिया युक्त

कर्ता + को + क्रियार्थक संज्ञा + बाध्यताबोधक क्रिया

6. औचित्यबोधक क्रिया युक्त

कर्ता + को + क्रियार्थक संज्ञा + चाहिए।

अंग्रेज़ी में मुख्य मूल वाक्य ये हैं।

1. SI - Subject + Intransitive verb

2. SIC - Subject + Intransitive verb + Complement

3. STO - Subject + Transitive verb + Object

4. STO2O1 - Subject + Transitive verb + Indirect object + Direct object

## 5. STO1C - Subject + Transitive verb + Object + Complement

## निष्कर्ष

जीवित भाषा प्रवाहमयी है। वह परिवर्तनशील होने के कारण उसकी अभिव्यक्ति-क्षमता बढ जाती है। भाषा की प्रकृति में दार्शनिक खोज की परिणति व्याकरण है। अत: व्याकरण भी परिवर्तनशील है, याने नये प्रयोगों का आगम और पुराने प्रयोगों का लोप भाषा में वांछनीय हैं।

शब्दों के साथ व्याकरणिक अन्वयन होने से ही वाक्य में सार्थकता आ जाती है। इसलिए भाषा में अर्थ पक्ष और व्याकरणिक पक्ष का समान महत्व है।

अनुवाद मूलत: दो भाषाओ के बीच होने के कारण भाषा के सभी पक्षों पर ध्यान देना पडता है। अर्थ पक्ष से जुडी हुई समस्या का समाधान नये शब्द-निर्माण या लिप्यन्तरण से हो सकता है। लेकिन व्याकरणिक पक्ष से जुडी हुई समस्या का समाधान इस प्रकार नहीं हो सकता, क्योंकि अनुवाद की समस्या के समाधान के लिए नई व्याकरणिक संरचना का आविष्कार नहीं किया जा सकता। इसलिए अनुवाद में अर्थपक्ष से व्याकरणिक पक्ष पर अधिक ध्यान देना चाहिए।

अंग्रेजी और हिन्दी की व्याकरणिक विशेषताओ के अध्ययन से अनुवाद में इनके कारण आनेवाली समस्यायें उभर आती है। इनका अध्ययन विस्तार से अगले तीन अध्ययनों में किया जाता है।

संदर्भ

1. it is a means of operating and controlling ideas, thoughts, beliefs, opinions, feelings, emotions, attitudes of mind the whole of man's conscious and unconscious apprehension of himself and his environment" -

A.E. Darbyshire, A Description of English, 1967, P.140

2. "Dissemination of information between Nations cannot take place without it. It is an integral part of modern technology, which is international and depends on the transmission of ideas across language barriers." -

Isadore Pinchuck, Scientific and Technical Translation - 1977, P.9

3. डॉ० सुरेश कुमार, अनुवाद सिद्धान्त की रूपरेखा, 1989, पृ.114

4. वही, पृ. 114

5. "A grammar of a language, whether it is a linguist's grammar or a learner's grammar, is a description of that language." - Sivendra K. Verma. `The Role of Grammar in Teaching English as a Second Language' - Indian Journal of Applied Linguistics, Vol. III, No. 1, Jan. 1982.

# अध्याय - 2
# हिन्दी और अंग्रेजी वाग्भाग - I

# अध्याय -2

## हिन्दी और अंग्रेजी वाग्भाग - I

व्याकरणिक संरचना की सबसे बडी सार्थक इकाई तथा संप्रेषण व्यवस्था या भावाभिव्यक्ति की सबसे छोटी इकाई वाक्य है। यह कम से दो पदवाला होता है, कभी-कभी 15-20 पदवाला भी। वाक्य, एक विशिष्ट क्रम में व्यवस्थित भाषिक तत्वों की संरचना भी है।

भाषिक तत्वों के अन्तर्गत संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया आदि संरचनात्मक कोटियाँ और कर्ता, कर्म, पूरक आदि प्रकार्यात्मक कोटियाँ आती हैं। इनका विन्यास प्रत्येक भाषा में अलग है।

हिन्दी वाक्य =(+ कर्ता + कर्म + + क्रिया)

अंग्रेज़ी वाक्य = (+ कर्ता + क्रिया + कर्म + .....)

यहाँ कर्ता तथा क्रिया आनिवार्य घटक हैं। अत: वाक्य-रचना केलिए प्रत्यक्ष या प्रच्छन्न रूप से दो संरचक घटकों का होना अनिवार्य है।

इस अध्याय में वाक्य स्तर पर रूपान्तर की प्रक्रिया से प्रभावित शब्द, याने विकारी शब्दों का विश्लेषण अनुवाद के सन्दर्भ में किया जाता है। इसके साथ ही अंग्रेज़ी के `उपपद' जो हिन्दी में नहीं हैं, उनका अध्ययन भी किया जाता है।

### 2.1. विकारी शब्द

हिन्दी में संज्ञा लिंग, वचन और कारक के अनुसार परिवर्तित होती है, सर्वनाम में लिंग, वचन और कारक के अनुसार और विशेषण में विशेष्य के लिंग और वचन के अनुसार

परिवर्तन होता है तो क्रिया लिंग, वचन, पुरुष, कारक और काल के अनुसार परिवर्तित होती है । अंग्रेज़ी में संज्ञा लिंग, वचन और कारक [ सम्बन्धकारक (possessive case) ] के अनुसार परिवर्तित होती है, सर्वनाम लिंग, वचन और कारक के अनुसार परिवर्तित होती है और क्रिया कर्ता के वचन पुरुष तथा काल के अनुसार बदलती है।

## 2.1.1 संज्ञा

व्याकरणिक अर्थ को स्पष्ट रूप से एक भाषा से दूसरी भाषा में अन्तरण करने केलिए व्याकरणिक कोटियों का अध्ययन अपेक्षित है।

"विकारी शब्दों में व्याकरणिक अर्थ / विशेषता धोतन व्याकरणिक कोटियों से होता है। लिंग, वचन, पुरुष, कारक, काल, वृत्ति आदि व्याकरणिक कोटियों / विकारक तत्वों से भाषा में अभिव्यंजना सम्बन्धी सूक्ष्मता तथा निश्चयात्मकता आ जाती है।"1 इन व्याकरणिक कोटियों के कारण ही अंग्रेज़ी-हिन्दी अनुवाद में समस्याएँ आ जाती हैं।

### 2.1.1.1 लिंग

"संज्ञा शब्दों का लिंग एक आन्तरिक या अन्तर्निहित व्याकरणिक कोटि है। पुल्लिंग या स्त्रीलिंग प्रत्येक संज्ञा प्रातिपदिक किस लिंग में है इसका निर्णय रूढ या लोक-प्रयोग से होता है। लिंग-ज्ञान हेतु जन-प्रयोग, शब्द-कोश और अभ्यास की आवश्यकता है।"[2]

हिन्दी में लिंग सम्बन्धी जटिल व्यवस्था है, सारे के सारे संज्ञा शब्दों को स्त्रीलिंग या पुल्लिंग-इन दो वर्गों के अन्तर्गत रखा गया है। लिंग में अनियमितताएँ कभी-कभी किन्ही संज्ञा शव्दों के भिन्न-भिन्न अर्थों में प्रयोग के कारण होती है, जैसे `चंद्रमा' के अर्थ में `चाँद' शव्द पुल्लिंग है, पर सिर के ऊपर के भाग के अर्थ में प्रयुक्त वही `चाँद' शब्द स्त्रीलिंग है।

अंग्रेज़ी में संज्ञा-शब्दों को प्राकृतिक लिंग के आधार पर पुल्लिंग और स्त्रीलिंग - इन दो वर्गों के अन्तर्गत रखा गया है, शेष सब नपुंसक लिंग हैं। लेकिन इसमें भी अपवाद है- `ज़हाज़' शब्द हमेशा स्त्री लिंग में प्रयुक्त होता है। कभी-कभी परिवहन की गडियों के बारे में वात्यल्य या आदर के साथ कहते हैं, तो वे स्त्रीलिंग में प्रयुक्त होते हैं। यदि जानवरों या छोटे बच्चों का प्राकृतिक लिंग हमें अज्ञात है, इन्हें नपुंसक लिंग के अन्तर्गत रख सकते हैं।

1. The ship lost all her boats in the storm.

आँधी में ज़हाज के सभी नाव खो गए।

उपर्युक्त अंग्रेजी वाक्य में `her' सर्वनाम से ही पता चलता है कि `ship' स्त्रीलिंग है। कर्त के लिंग के अनुसार अंग्रेजी में किसी भी अंग का कोई परिवर्तन न होने के कारण अनुवाद में कोई समस्या नहीं।

दोनों भाषाओ में साहस और बल/शक्ति प्रकट करनेवाले शब्दों को पुल्लिंग तथा सौन्दर्य, कोमलता आदि प्रकट करनेवाले शब्दों को स्त्रीलिंग मानने की प्रवृत्ति है, लेकिन अनुवाद में यह प्राय: कोई बाधा उपस्थित नहीं करती।

अंग्रेजी में `sun' पुल्लिंग है और `moon' स्त्रीलिंग और हिन्दी में `सूरज' और `चाँद' दोनों पुल्लिग हैं।

जड़ वस्तुओ के सन्दर्भ में हिन्दी के कुछ लिंग-प्रत्यय, लिंग-भेद के साथ-साथ आकार की लघुता भी सूचित करते हैं, जैसे, `थैला-थैली', 'लोटा-लुटिया' आदि। अंग्रेज़ी में अनुवाद करते समय इनपर ध्यान देना पडता है और इनके अनुसार क्रिया का प्रयोग भी करना पडता है।

child, parents, enemy, student, friend जैसे शब्द अंग्रेजी में सामान्य लिंग (common gender) हैं। हिन्दी में `child' का समानार्थी शब्द दोनों लिंगों में मिलते हैं `बच्चा-बच्ची'। लेकिन 'इसके कोई बच्चे नहीं' वाक्य में `बच्चा' पुल्लिंग है। `parents' का समानार्थी शब्द हिन्दी में संयुक्त संज्ञा `माता-पिता' या माँ-बाप' है जो common gender है तो `enemy' का समानार्थी `शत्रु' उभयलिंग है। डाक्टर, मंत्री जैसे शब्द दोनों भाषाओ में अभयलिंग है। अंग्रेज़ी में `student' शब्द का प्रयोग दोनों लिंगों में होता है। हिन्दी में `विद्यार्थी ' शब्द जातिवाचक है और पुल्लिंगवाचक भी। `teacher' शब्द भी ऐसा ही प्रयुक्त होता है। इन दोनों के लिए स्त्रीलिंग में क्रमशः `विद्यार्थिनी' और `अध्यापिका' शब्द हिन्दी में मिलते हैं।

2. विद्यार्थिनियों को खेल-कूद में भाग लेना चाहिए।

Students should participate in sports.

3. अध्यापिका गीत गा रही है और विद्यार्थिनी नाच रही है।

The teacher is singing and the student is dancing.

4. He is my student.

वह मेरा विद्यार्थी है।

5. She is my student.

वह मेरी विद्यार्थिनी है।

उपर्युक्त उदाहरणों [वाक्य (4) और (5)] में `he' और `she' लिंग नियामक है इसलिए `student' किस लिंग में प्रयुक्त है, इसका पता चलता है।

हिन्दी में दोस्त /मित्र दोनों लिंगों में प्रयुक्त होता है, अंग्रेज़ी में स्पष्टता के लिए कभी-कभी लिंग-निर्देशक (gender marker) का प्रयोग किया जाता है, जैसे, girl friend, boy friend, boy child, girl child आदि।

6. उसकी संतानों को अच्छी शिक्षा मिली।

His children has got good education.

7 उसके दो संतान हैं।

He has two children.

8. वह बिना संतान के मर गया।

He died issueless.

वाक्य (6) से स्पष्ट है कि `संतान' शब्द स्त्रीलिंग है, वाक्य (7) और (8) से `संतान' शब्द का लिंग निर्णय तो हो ही नहीं सकता। लेकिन इनका कोई असर तो इन वाक्यों के अनुवाद में पडता ही नहीं।

हिन्दी की लिंग-व्यवस्था जटिल होने के कारण संज्ञा शब्दों का लिंग- ज्ञान अनिवार्य ही है। हिन्दी में भूतकान में सकर्मक क्रिया आने पर कर्म का लिंग-ज्ञान आवश्यक है।

उपर्युक्त विश्लेषण से स्पष्ट है कि अंग्रेज़ी  हिन्दी अनुवाद में हिन्दी की लिंग-व्यवरथा की अनियमितता से उत्पन्न समस्यायें अधिक हैं, बल्कि हिन्दी-अंग्रेज़ी अनुवाद में इस पर कोई ध्यान देने की आवश्यकता तक नहीं।

### 2.1.1.2 वचन

लौकिक/प्राकृतिक व्यवस्था की संख्या व्ववस्था का बोध व्याकरण में वचन-व्यवस्था से होता है। अंग्रेज़ी और हिन्दी दोनों में दो ही वचन होते हैं  एकवचन और बहुवचन। वचन-व्यवस्था लौकिक संख्या-व्यवस्था का शत प्रतिशत अनुगमन नहीं करती। संख्या की दृष्टि से किसी भी समूह में अनेक व्यक्ति या वस्तुएँ होने पर भी समूहवाची शव्द दोनों भाषाओ में एकवचन है।

9. He gave me a bunch of keys.

उसने मुझे चाबियों की गुच्छा दे दी।

जातिवाचक संज्ञा-शब्द दोनों भाषाओ में मिलते हैं, जैसे,

10. गाय पालतू जानवर है।

Cow is a domestic animal.

वर्ग-सदस्य का बोध हिन्दी में दोनों वचनों में अभिव्यक्त किया जा सकता है, लेकिन अंग्रैज़ी में बहुवचन का ही प्रयोग ज्यादा मिलता है,

11. तमिलनाडु के किसान बहुत मेहनती है।

Farmers of Tamilnadu are very hardworking.

हिन्दी में समाहारात्मक इकाई का बोध करानेवाले संज्ञा-शब्द एकवचन में प्रयुक्त होते हैं,

13. उसने मुझे दो सौ रुपया दिया।

He gave me Rs. 200/-

14. यह छह मीटर की साडी है।

This saree is of 6 metres.

उपर्युक्त उदाहरणों में `रुपया' और `मीटर' के समानार्थी शब्द यथाक्रम `rupees' और `metre' हैं जो बहुवचन हैं।

अंग्रेज़ी में drapery, imagery, machinery, poetry, scenery, stationary जैसे शब्द एकवचन में ही प्रयुक्त होता है तो annals, tidings, thanks, wages जैसे अंग्रेज़ी शब्दों का एकवचन रूप नहीं मिलता। लेकिन संयुक्त संज्ञाओ में `wages' का एकवचन रूप मिलता है। नीचे लिखे उदाहरण में भी `wage' एकवचन में प्रयुक्त है।

15. He earns a good wage.

उसे अच्छा वेतन मिलता है।

अंग्रेज़ी में trousers, pyjamas, pants, scales, spectacles, scissors, pains, riches, surroundings आदि हमेशा बहुवचन हैं।

16. Spectacles are used for better vision.

अच्छी दृष्टि केलिए चश्मे का इस्तेमाल होता है।

`spectacles' शब्द इससे भिन्न अर्थ में भी प्रयुक्त है, अथवा एकवचन में एक अर्थ तथा बहुवचन में दूसरा अर्थ देता है।

17. He made a spectacle of himself.

उसने स्वयं एक प्रदर्शिनी/तमाशा बनाई।

अंग्रेज़ी में इसप्रकार के अनेक शव्द है, जैसे, **manner** - तरीका, **manners**-नैतिक पाठ, **pain**-दर्द, **pains**-पीडा आदि। हिन्दी में `कपडा', `पैसा', `गर्मी' और `ज़ाडा' इसप्रकार के शब्द हैं।

18. उसने कपडा खरीदा और कपडे बनाये।

He bought clothe and made dresses.

19. आज बहुत गर्मी है।

It is very hot today.

20. गर्मियों में हम बैंगलूर जाते हैं।

We are going to Bangalore in summer.

उपर्युक्त उदाहरणों (वाक्य 19) में `गर्मी' भाववाचक संज्ञा है, इसका कोई बहुवचन रूप नहीं है किन्तु वाक्य-20 में `गर्मियों में से तात्पर्य `गर्मी के दिनों में' है। अंग्रेज़ी में उसका अनुवाद मौसम का नाम `**summer**' से किया गया है।

अंग्रेज़ी में `sheep', `deer' आदि कुछ शब्दों का प्रयोग दोनों वचनों में एकरूप रहता है, इनके बहुवचन बनाने के लिए `herd', `flock' आदि समूहवाची शब्दों का प्रयोग होता है, उसी प्रकार हिन्दी में `बालक', `पक्षी', `डाकू', `गुरू', `भाई', `मुनि' जैसे शब्दों के बहुवचन की सूचना देने के लिए संज्ञा शब्द के बाद `लोग', `जन', `गण', `वर्ग', `वृन्द', `झुंड' आदि शब्द जोडा जाता है। अनुवाद करते वक्त इस बात पर ध्यान देना चाहिए कि अमुक शब्द के साथ उसके लिए उचित शब्द का प्रयोग होता है।

हिन्दी में `केश', `रोम', `प्राण', `दर्शन', `हस्ताक्षर', `समाचार', `दाम', `होश', `भाग्य' ये नित्य बहुवचन हैं।

21. उसके केश बहुत लम्बे हैं।

His hair is very long.

22. उसके हस्ताक्षार स्पष्ट / साफ नहीं है।

His signature is not legible.

वाक्य (21) के अनुवाद में `hair' एकवचन है। अंग्रेज़ी में एक व्यक्ति के बाल के अर्थ में `hair' (एकवचन) का प्रयोग किया गया है। वाक्य (22) के अनुवाद में `signature' एकवचन है। यहाँ अस्पष्टता भी है, `His signature are not legible' अनुवाद भी किया जा सकता है।

अंग्रैज़ी में `police' शब्द बहुवचन है, इससे तात्पर्य है-`police force' एकवचन में प्रयुक्त होता तो `policeman' है हिन्दी में इन दोनों के लिए `पुलिस' शब्द ही प्रयुक्त होता है। (कभी-कभी `पुलिसवाला' शब्द का भी प्रयोग होता है)

23. The police is on the alert.

पुलिस जागरूक हैं।

24. The policeman questioned the acused.

पुलिस ने अपराधी से प्रश्न किया।

अंग्रेज़ी में कुछ संज्ञाएँ जिसका अन्त `-ics' से होता है, हमेशा एकवचन में प्रयुक्त होती है, जैसे, Mathematics, Acoustics, Politics, Mechanics आदि।

25. Mathematics is an exact science.

गणित परम शुद्ध विज्ञान है।

लेकिन,

26. His Mathematics are not good.

उसका गणित खराब है।

यहाँ Mathematics' का अर्थ है - `गणित क्रियायें'।

अंग्रेज़ी में कुछ संज्ञाओ का रूप बहुवचन जैसा है, फिर भी वे एकवचन है, जैसे `mumps', `rickets', `billiards', `bowls' आदि।

27. Billiards is an interesting game.

बिल्याड्स दिलचस्पी खेल है।

अंग्रेज़ी में कुछ संज्ञाओ के दो बहुवचन रूप होते हैं, जैसे, antenna- antennas, antennae.

formula- formulas, formulae.

28. He could not apply his formulas here.

वह अपने सूत्रों को यहाँ लागू नहीं कर सका।

29. He solved those problems using these formulae.

उसने इन सूत्रों के प्रयोग से उन समस्याओ का हल किया।

30. They are using this type of antennas in their receivers.

वे अपने ग्राहियों में इसप्रकार के ऐन्टिने का इस्तेमाल करते हैं।

31. The antennae of this insect carry poison.

इस प्राणि के स्पर्शबाल में विष है।

हिन्दी में आदरार्थ बहुवचन का प्रयोग मिलता है, जो अंग्रेज़ी में नहीं है।

32. His father came here today.

उसके पिताजी आज यहाँ आये।

33. The President will inaugurate the function.

राष्ट्रपति समारोह का उद्घाटन करेंगे।

हिन्दी में आदर प्रकट करने के लिए प्रयुक्त `साहब', `बाबू', `जी', आदि शब्द संज्ञा के साथ आने पर क्रिया बहुवचन में ही होती है।

अंग्रेज़ी और हिन्दी में वचन सम्बन्धी नियम अलग हैं। कुछ संज्ञाएँ अंग्रेज़ी में सदा एकवचन है तो हिन्दी में बहुवचन। हिन्दी में बहुवचन हैं तो अंग्रेज़ी में एकवचन। इसलिए अनुवाद करते वक्त दोनों भाषाओ के नियमों पर ध्यान देना पडता है।

### 2.1.1.3. कारक

हिन्दी में कारकीय रचना संज्ञा के साथ परसर्गों के प्रयोग से होती है, अंग्रेज़ी में इसकेलिए सम्बन्धसूचकों (Preposition) का प्रयोग होता है। हिन्दी के सम्बन्धकारक में संज्ञा का सम्बन्ध जिस शब्द से जोडा जाता है उसके लिंग-वचनानुसार परसर्ग का प्रयोग होता है तो अंग्रेज़ी में संज्ञा के जीव या निर्जीव होने के आधार पर 's' परसर्ग का या `of' सम्बन्धसूचक का प्रयोग होता है।

हिन्दी में आठ कारक मिलते हैं 1 कर्ता कारक (Nominative case) 2. कर्मकारक (Accusative case)

3. करणकारक (Instrumental case) 4. संप्रदान कारक (Dative case) 5. अपादान कारक (Ablative case) 6. सम्बन्धकारक (Possessive case) 7 अधिकरण कारक (Locative case) 8. सम्बोधन कारक (Vocative case)

अंग्रेज़ी में तीन कारक ही मिलते है, 1. कर्ता कारक (Nominative case), 2. कर्मकारक (Accusative / Objective case) 3. सम्बन्धकारक (Possessive case)

सम्बोधन कारक को वास्तव में कारकों के अन्तर्गत नहीं रखना चाहिए, क्योंकि उससे संज्ञा / सर्वनाम पदों का पारस्परिक एवं क्रिया के मध्य का सम्बन्ध नहीं मिलता।

कर्ताकारक में भूतकाल में सकर्मक क्रिया आने पर कर्ता के साथ 'ने' प्रत्यय जोडा जाता है।

34. गीता नाचते-नाचते थक गई।

Geetha became tired of dancing (continuously)

35. मैं ने यह काम किया है।

I have done this work.

36. वह चालाक है।

He is clever.

हिन्दी में `ने' प्रत्यय के प्रयोग से क्रिया कर्म के अनुसार बदलती है। अंग्रेज़ी में कोई भी परिवर्तन नहीं होता। इसलिए हिन्दी से अंग्रेज़ी में अनुवाद करते समय कोई समस्या नहीं है। हिन्दी में कुछ क्रियाओ के आने पर कर्ता के साथ `ने' परसर्ग का प्रयोग नहीं होता, और अंग्रेज़ी से हिन्दी में अनुवाद करते वक्त इसपर ध्यान देना चाहिए।

कर्मकारक में `को' परसर्ग का प्रयोग किया जाता है जो `निर्जीव' के साथ नहीं जोडा जाता।

37 उसको यह पुस्तक दो।

Give him this book/ Give this book to him.

करणकारक में प्रयुक्त परसर्ग है -`से' । कभी-कभी इसके बदले `के द्वारा', `के कारण', `के मारे', `के जरिए' आदि का प्रयोग किया जाता है। अंग्रेज़ी में `by', `with', `through' इन सम्बन्धसूचक अव्ययों का प्रयोग मिलता है।

38. वह अपने बाये हाथ से लिखता है।

He write wih his left hand.

संप्रदान कारक में `को' और `के लिए' का प्रयोग होता है। इनकेलिए अंग्रेज़ी में `to' या `for' का प्रयोग मिलता है।

39. विनीत को मैं ने दो सौ रुपया दी।

I gave two hundred rupees to Vineeth.

40. मैं ने उसको दो सौ रुपया दी।

I gave him two hundred rupees.

41. मैं ने बच्चे के लिए एक पुस्तक खरीदी।

I bought a book for the child.

अंग्रेज़ी में जब कर्म II (यहाँ `him') कर्म -I के पहले आने पर `to' का लोप हो जाता है। लेकिन `for' का इसप्रकार लोप नहीं होता।

अपादान कारक में `से' का प्रयोग होता है, जब तुलना के लिए प्रयुक्त होता है तो इसके बदले `की अपेक्षा', `की तुलना में' `की बनिस्बत' `के मुकाबले' आदि का भी प्रयोग होता है। अंग्रेज़ी में `from', `since', `than', `compared to' आदि का प्रयोग इनकेलिए मिलता है।

42. गंगा हिमासय से निकलती है।

The Ganges orginates from the Himalayas.

43. माया लता से बडी है।

Latha is older than Maya.

सम्बन्धकारक में परसर्ग लिंग, वचन और कारक के अनुसार मिलता है-`का, की, के'। इस कारक से स्वामित्व का बोध भी होता है। अंग्रेज़ी में `जीव' के साथ साधारणतया `s' परसर्ग जोडा जाता है तो `निर्जीव ' के पूर्व `of' सम्बन्धसूचक का प्रयोग होता है।

44. मदन की युस्तक कहाँ है?

Where is Madan's book?

45. इस मेज़ का एक टांग फटा है।

One of the legs of this table in broken.

46.मेरे दो भाई हैं।

I have two brothers.

हिन्दी के अधिकरण कारक में दो परसर्गों का प्रयोग होता है, - `में', `पर'। `के ऊपर', `के नीचे', `के भीतर' आदि अर्थ भी इस कारक से सूचित होता है। कभी-कभी किसी भी परसर्ग का प्रयोग नहीं होता।

47. कलम मेज़ पर है।

The pen is on the table.

48. उस कमरे में कोई नहीं है।

There is no one in that room.

हिन्दी में परसर्ग के जोडने पर संज्ञा / सर्वनाम में परिवर्तन होता है, लेकिन सम्बन्धसूचक का प्रयोग होने के कारण अंग्रेज़ी में ऐसा कोई परिवर्तन नहीं होता।

हिन्दी के परसर्गों एवं अंग्रेज़ी के सम्बन्धसूचकों का अध्ययन `अव्यय' के अन्तर्गत किया जाता है।

## 2.1.2 सर्वनाम

भाषा व्यवहार में सुगमता, स्पष्टता, कसाव तथा सुन्दरता लानेवाला सर्वनाम सभी भाषाओ में कम ही मिलता है। यह शब्द-भेद संज्ञा, संज्ञा पदबंध तथा विशेषणों का स्थान ले सकता है। "सर्वनामों का अपना कोई स्थाई अर्थ नहीं होता है, वे उस शब्द का अर्थ ग्रहण कर लेते हैं जिसके स्थान पर वे प्रयुक्त होते हैं"।[3] संज्ञा, सम्बोधन स्थान पर आती है, किन्तु सर्वनाम कभी सम्वोधन स्थान पर नहीं आता।

हिन्दी और अंग्रेज़ी में सर्वनामों की संख्या अलग होने के कारण अनुवाद में इन पर विशेष ध्यान देना पडता है। अंग्रेज़ी में आदरार्थ सर्वनाम नहीं मिलता तो हिन्दी में तत्काल कर्ता `it' नहीं है।

प्रकार्य के आधार पर अंग्रेज़ी में नौ प्रकार के सरल / सामान्य सर्वनाम मिलते हैं- पुरुषवाचक, सम्बन्धसूचक/अधिकारबोधक, निर्देशवाचक/ निश्चयवाचक, अनिश्चयवाचक/सम्बन्धवाचक, प्रश्नवाचक, आश्चर्यसूचक, निजवाचक और अवधारक सर्वनाम, विभक्तीय सर्वनाम (partitive pronoun)[4]। इनमें से पुरुषवाचक, निश्चयवाचक, अनिश्चयवाचक, सम्बन्धवाचक, प्रश्नवाचक और निजवाचक हिन्दी में भी मिलते हैं। दोनों भाषाओ में संयुक्त सर्वनाम मिलते हैं। इनके आतिरिक्त `it' और `one' का सर्वनामिक प्रयोग भी मिलता है।

### 2.1.2.1 पुरुषवाचक सर्वनाम

अंग्रेज़ी में मध्यम पुरुष एक ही है, -`you', जो दोनों वचनों में ऐसा ही प्रयुक्त होता है। हिन्दी में इसकेलिए `तू', `तुम', `आप' इन तीनों का प्रयोग एकवचन में मिलता है (`तुम' और `आप' बहुवचन में भी)। `तुम', `आप' और `हम' एकवचन में प्रयुक्त होने पर उनके बहुवचन रूप बनाने के लिए `सब/लोग' जोडा जाता है। अंग्रेज़ी में `you' एकवचन में है तो उसका बहुवचन बनाने के लिए `people', `both', `all', `all of (you)' जोडा जाता है। अंग्रेज़ी में `it' सामान्य रूप से नपुंसक लिंग है, और उसका कोई समानार्थी शब्द हिन्दी में नहीं मिलता। हिन्दी में `it' के समानार्थी के रूप में `यह/वह' क प्रयोग किया जाता है जो `this/that' (निर्देशवाचक) के समनार्थी शब्द है। `She', `he', `it' इन तीनों का बहुवचन है-`they' हिन्दी में `she', और`he' का ठीक समानार्थी शब्द नहीं है।

1. What are you doing?

तू क्या कर रहा है? / तुम क्या कर रहे हो? / आप क्या कर रहे हैं?

ये तीनों ठीक ही है, लेकिन सन्दर्भ से ही `you' कौन है? यह जान सकते हैं।

`हम' का प्रयोग सामूहिक प्रतिनिधि के रूप में मिलता है तो उसका समानार्थी शब्द `we' भी इसी प्रकार प्रयुक्त होता है,

2. हम उसपर अवश्य कर्रवाई करेंगें।

We will take necessary action on this.

`आप' मध्यमपुरुष आदरार्थ सर्वनाम है, फिर भी अधिक आदर/ श्रद्धा व्यक्त करने के लिए अन्य पुरुष में भी `आप' का प्रयोग किया जाता है।

3. प्रेमचन्द हिन्दी के प्रसिद्ध उपन्यासकार हैं और आपके उपन्यासों का अनुवाद कई विदेशी भाषाओ में मिलते हैं।

Premchand is a famous Hindi novelist and translations of his novels are available in many foreign languages.

अधिक नम्रता प्रदर्शन के लिए भी `मैं' के बदले `आप' का प्रयोग देखा जाता है,

4. बाबूजी यह आपका ही सामान है।

Sir, this is my luggage.

(सन्दर्भ का पता न होने पर उपर्युक्त वाक्य का अनुवाद होगा- Sir, this is your luggage)

हिन्दी में `यह' और 'वह' के स्थान पर आदरार्थ `ये' और `वे' का प्रयोग भी होता है, अंग्रेज़ी में ऐसी कोई प्रवृत्ति नहीं है।

5. पं जवाहरलाल नेहरू भारत के प्रथम प्रधान मंत्री थे। उन्हें `चाचा' नाम से पुकारते थे।

Pandit Jawaharlal Nehru was the first Prime Minister of India. He was called `Chacha'.

### 2.1.2.2 सम्बन्धसूचक / अधिकारबोधक सर्वनाम

अंग्रेज़ी में सम्बन्धसूचक/अधिकारबोधक विशेषण (Possessive adjective) और सम्बन्धसूचक / अधिकारबोधक सर्वनाम (Possessive pronoun) (his को छोडकर) ये दोनों अलग हैं। लेकिन हिन्दी में एक

ही रूप से दोनों प्रकार्य कर सकता है।

6. यह मेरी पुस्तक है।

This is my book.

7 यह पुस्तक मेरी है।

This book is mine.

## 2.1.2.3 निर्देशवाचक सर्वनाम / निश्चयवाचक सर्वनाम

निर्देशवाचक सर्वनाम जो पास या दूर के विषय (व्यक्ति, पदार्थ) का निश्चित निर्देश करता है, वही सन्दर्भानुसार `she/ he/it' के समानार्थी के रूप में मिलते हैं- `यह/वह'। अंग्रेज़ी में this/that पूर्णरूप से निर्देशवाचक सर्वनाम ही है।

8. This is a big room and that is a small room.

यह बडा कमरा है और वह छोटा।

हिन्दी में एक ही वाक्य में प्रयुक्त दो संज्ञाओं में से पहली संज्ञा के लिए दूरवर्ती और दूसरी संज्ञा केलिए निकटवर्ती सर्वनाम का प्रयोग किया जाता है, जैसे-

9. मनुष्य और जानवर में मुख्य अन्तर यह है कि वे आत्मा से युक्त हैं और ये आत्महीन हैं।

The main difference between human beings and animals is that the former have got spirit and the latter is spiritless.

उपर्युक्त उदाहरण में निर्देशवाचक सर्वनाम `this' और `that' के बदले क्रमवाची सर्वनाम `former' और `latter' का प्रयोग किया गया है। निश्चयवाचक सर्वनाम का प्रयोग वाक्य / उपवाक्य के बदले भी होता है,

10. भारत एक विकासशील राष्ट्र है। यह सब जानते हैं।

India is a developing country, this is known to everybody/ (It is known to everybody that India is a developing country)

तुलना करते वक्त भी `this...that' और `these.....those' का प्रयोग मिलता है।

11. This is better than that.

यह उससे अच्छा है।

संज्ञा को द्विरुक्ति से बचाने केलिए अंग्रेज़ी में तुलनावाचक वाक्यों में `that/those' का प्रयोग मिलता है।

12. The climate of Kerala is like that of West Bengal.

केरल की जलवायू पश्चिम बंगाल की जैसी है।

हिन्दी में ऐसे तुलनावाचक वाक्यों में `जैसा/जैसे/जैसी' का प्रयोग रहता है।

### 2.1.2.4 अनिश्चयवाचक सर्वनाम

`कोई' और `कुछ' हिन्दी में क्रमशः किसी अनिश्चित व्यक्ति और पदार्थ का बोध करते हैं। उनकेलिए अंग्रेज़ी में `some', `somebody/someone' `something' का प्रयोग किया जाता है।

13. उस कमरे में कोई सो रहा है।

Someone is sleeping in that room.

14. उसे कुछ दे दो।

Give him something.

`कोई और `कुछ' का विशेषणवत प्रयोग व्यक्ति और वस्तु दोनों के लिए मिलता है,

15. उसमें कोई बात नहीं।

There is nothing in it.

यहाँ `कोई.....नहीं' केलिए `nothing' का प्रयोग किया गया है।

16. कुछ (लडके) पढ रहे हैं और कुछ खेल रहे हैं।

Some (of the boys) are studying and some are playing.

2.1.2.5 सम्बन्धवाचक सर्वनाम

सम्बन्धवाचक सर्वनाम से पूर्ववर्ती उपवाक्य या वाक्य की व्याख्या करनेवाले परवर्ती वाक्य से उसका सम्बन्ध स्थापित किया जाता हे। हिन्दी में `जो...वह/वह.....जो' सबसे अधिक प्रयुक्त सम्बन्धवाचक सर्वनाम है।

17 यह वह आदमी है, जो कल यहाँ आया।

This is that man who came here yesterday.

`वह.....जो' और `जो.....वह' का अनुवाद `that....who, `that....which', `the....who', `the.....which' हैं। हिन्दी में सम्बन्धवाचक `जो.....वह' व्यक्ति, पदार्थ और भाव के लिए प्रयुक्त होता है तो अंग्रेज़ी में व्यक्ति के लिए साधारणतया `who' और पदार्थ / भाव केलिए `which', `what' और `that' का प्रयोग होता है।

अंग्रेज़ी में सम्बन्धवाचक सर्वनाम `whom, who, that' कभी-कभी छोडा जाता है। फिर भी अनुवाद वही रहता है।

18. The lady whom I saw was beautiful.

जिस औरत को मैं ने देखा, वह खूबसूरत थी।

19. The lady who I saw was beautiful.

जिस औरत को मैं ने देखा, वह खूबसूरत थी।

20. The lady that I saw was beautiful.

जिस औरत को मैं ने देखा, वह खूबसूरत थी।

21. The lady I saw was beautiful.

जिस औरत को मैं ने देखा, वह खूबसूरत थी।

उपर्युक्त चारों वाक्यों में पहला वाक्य ही औपचारिक (formal) है। `जो...वह' सम्बन्धवाचक सर्वनाम के लिए अंग्रेज़ी में `what' का प्रयोग भी मिलता है।

22. जो मीठा लगता है, वह कटुआ होगा।

What looks sweet may be sour.

अंग्रेज़ी के सम्बन्धसूचक `as' और `but' का प्रयोग सम्बन्धवाचक सर्वनाम के रूप में भी होता है।

23. He is such a man as I respect most.

वह ऐसा आदमी है, जिसका सबसे आदर मैं करता।

24. There is none here but will like you.

यहाँ कोई भी नहीं है जो तुम्हें पसन्द नहीं करेगा। वाक्य -72 में `as' का स्थानापन्न `whom' कर सकता है।

वाक्य 73 में `but' `जो...नहीं' के अर्थ में प्रयुक्त है।

## 2.1.2.6 प्रश्नवाचक सर्वनाम

अंग्रेजी में `which' और `what' में अन्तर है, लेकिन इसका अनुवाद करते वक्त हिन्दी में उस अन्तर को स्पष्ट करना तो कठिन है। `what' एक अनिश्चित व्यक्ति /पदार्थ से चुने हुए व्यक्ति/पदार्थ केलिए प्रयुक्त है, तो `which' एक सीमित संख्या से चुने हुए व्यक्ति/पदार्थ के लिए।

25. Which books have you read?

आपने कौन-सी पुस्तकें पढीं?

26. What books have you read?

आप ने कौनसी पुस्तकें पढीं?

27. What years are leap years?

अधिवर्ष कौन-सा वर्ष है?

28. Which years are leap years?

अधिवर्ष कौन-कौन हैं?

वाक्य 25 और 26 के अनुवाद में `what' और `which' का अन्तर स्पष्ट नहीं है। वाक्य 27 में `what' से `परिभाषा' या `व्याख्या' मिलने की प्रतीक्षा करते हैं।

संख्यावाचक /परिमाणवाचक विशेषण `कितना / कितने / कितनी का प्रयोग सर्वनाम के रूप में भी होता है,

29. यह कितनों को मालूम है?

How many people know this?

उपर्युक्त उदाहरणों में `कितनों को' का अर्थ है, `कितने लोगों को'। लेकिन उसके अनुवाद में संज्ञा के बिना उसके समानार्थी शब्द `how many' का प्रयोग नहीं किया जा सकता।

संप्रदान कारक में अंग्रेज़ी के प्रश्नवाचक वाक्यों में पूर्वसर्ग वाक्य के आरंभ में या अन्त में रखा जा सकता है, लेकिन हिन्दी में इनके समतुल्य परसर्ग प्रश्नवाचक शब्द के साथ ही जोडा जाता है।

30. Whom did you get it from?

तुम्हें यह किससे मिला?

31. To whom did you sent the money?

किसको आपने रूपया भेजा?

32. Who(m) did you sent the money?

किसको आपने रूपया भेजा?

अंग्रेज़ी में पूर्वसर्ग हो, या न हो, या कहीं भी हो, हिन्दी अनुवाद में कोई अन्तर नहीं पडता।

## 2.1.2.7 आश्चर्यसूचक सर्वनाम

साधारणतया आश्चर्यसूचक सर्वनाम के रूप में `what' का ही प्रयोग होता है, उसकेलिए हिन्दी में `क्या' ही मिलता है।

33. What! You don't know Ram?

क्या! तुम राम को नहीं जानते?

आश्चर्यसूचक सर्वनाम का स्थानापन्न किसी उपवाक्य से किया जा सकता है। यह एक प्रश्न के आगे ही आता है और केवल आश्चर्य सूचित करने केलिए प्रयुक्त है।

## 2.1.2.8 निजवाचक और अवधारक सर्वनाम

निजवाचक सर्वनाम (reflexive pronoun) 'आप/स्वयं/खुद/ अपने आप/स्वत: दोनों वचनों में तीनों पुरुषों में और दोनों लिंगों में ऐसे ही रहते हैं। अंग्रेज़ी में `my', `your', `him', `her', `it' और `one' के साथ `self' और इनके बहुवचन के साथ `selves' जोडकर निजवाचक सर्वनाम बनाये जाते हैं।

अवधारक सर्वनाम (Emphatic pronoun) के भी यही रूप है।

34. He cut himself.

उसने अपने को काट दिया।

35. Look after yourself.

अपने आपकी देखभाल करो।

36. He is engrossed in himself.

वह अपने में ही मग्न रहता है। वह अपने आप में ही मग्न रहता है।

हिन्दी के निजवाचक सर्वनाम `अपने आप' में ज़ोर कुछ ज्यादा है, उतना ज़ोर अंग्रेजी अनुवाद में नहीं मिलता।

37 तुम अपने को पहचानो।

You identify yourself.

38. तुम अपने आप को पहचानो।

You identify yourself.

संज्ञा या पुरुषवाचक सर्वनाम को पुनरुक्ति से बचाने केलिए भी हिन्दी में `अपना/अपने/ अपनी' का प्रयोग किया जाता है तो अंग्रेजी में इसकेलिए कोई रूप नहीं मिलता।

39. सीता अपने पति के साथ आयी।

Sita came with her husband.

40. उसने अपनी बच्ची के लिए एक साइकिल खरीदी।

He bought a bicycle for his daughter.

वाक्य में कर्ता से ही `अपना /अपने/अपनी' का सम्बन्ध जुडता है। इसका विशेषणवत प्रयोग भी मिलता है।

41 मैं ने अपने बेटे को अपनी बहन के घर भेज दिया।

I sent my son to my sister's house.

42. मैं ने अपने बेटे को उसकी बहन के घर भेज दिया।

I sent my son to his sister's house.

43. मुझे आप अपनी डायरी पढने लेने दीजिए।

Please let me read your diary/ Please let me read my diary.

वाक्य 43 के दो अनुवाद हो सकते हैं, क्योंकि उस वाक्य से स्पष्ट नहीं कि `डायरी मेरी है' या `आपकी'। इस तरह के वाक्यों का वांछित अर्थ शब्द-क्रम से मिल सकता है।

44. आप अपनी डायरी मुझे पढने दीजिए।

Please let me read your diary.

45. आप मुझे अपनी डायरी पढने दीजिए।

Please let me read my diary.

46. यह मेरा अपना घर है।

This is my own house.

अवधारक सर्वनाम जिस संज्ञा/सर्वनाम की अवधारणा के लिए प्रयुक्त है, उसके तुरन्त बाद आने पर ज्यादा ज़ोर मिलता है।

47. He himself has done this work.

उसने ही यह काम कर लिया।

48. He has done this work himself.

उसने स्वयं यह काम कर लिया।

49. Will you do this work yourself?

क्या आप यह काम आप ही कर लेंगे?

50. The Prime Minister himself gave away the prizes.

प्रधानमंत्री ने ही पुरस्कार दे दिये।

हिन्दी में निपात `ही' के अकेले या `आप' के साथ प्रयोग से उसी अवधारणा मिलती है जो हिन्दी में अभिव्यक्त हुई है।

कर्ता को छोडकर (कर्म के साथ) भी अवधारक सर्वनाम का प्रयोग मिलता है,

51. We saw the Prime Minister himself.

हमने प्रधानमंत्री को ही देखा।

"कर्ता के तुरन्त बाद `आप' का प्रयोग व्यावर्ती अवधारक (exclusive emphatic) की भाँति होता है। यहाँ कर्ता बिना किसी अन्य की इच्छा के स्वयं ही क्रियाशील रहता है"[5]

52. मैं आप इसको ले आया हूँ।

I myself have brought this.

बहुवचन संज्ञा होने पर `अपना' की द्विरुक्ति भी होती है, अंग्रेजी में इस प्रकार की द्विरुक्ति नहीं मिलती।

53. आप सब अपने-अपने स्थान पर बैठ जाएँ।

All of you please take your (own) seats.

अंग्रेजी में अवधारक सर्वनाम वाक्य में भिन्न-भिन्न स्थान ले सकता है, जैसे-

54. He has never himself been here.

वह कभी भी यहाँ नही आया है।

55. He has never been here himself.

यहाँ वह कभी भी नहीं आया है।

56. He himself has never been here.

यहाँ वह कभी भी नहीं आया है।

अंग्रेज़ी में `I' या `me' के स्थान पर `myself' का प्रयोग भी किया जाता है।

57. For somebody like (me / myself) that was a big surprise.

मेरे जैसे आदमी के लिए वह बडी आश्चर्य की बात थी।

58. My father and (I / myself) went there yesterday.

मेरे पिताजी और मैं कल वहाँ गये।

## 2.1.2.9 विभक्तीय सर्वनाम

अंग्रेज़ी में each, every, either, neither आदि विभक्तीय सर्वनाम एकवचन में प्रयुक्त होता है और इनकेलिए हिन्दी में हरेक, हर, हर कोई, एक-क, प्रत्येक आदि सर्वनाम मिलते हैं। either...or और neither...nor सम्बन्धवाचक और समुच्चयबोधक भी हैं।`each' व्यक्ति या वस्तु की निश्चित संख्या में से एक-एक के बारे में कहने के लिए प्रयुक्त होता है। `every' हरेक व्यक्ति या वस्तु पर कुछ जोर देता है। वाक्य के आरंभ, अन्त और संख्या शब्द के आगे `each' का प्रयोग कर सकते हैं। इसका अनुवाद देखिए-

59. Each of these books costs ten rupees.

इनमें से एक-एक पुस्तक का दाम दस रुपया है।

60. These books costs each ten rupees.

इन पुस्तकों का दाम दस-दस रुपया है।

61. These books costs ten rupees each.

इन पुस्तकों का दाम दस-दस रुपया है।

`each' विशेषण और सर्वनाम का स्थान ले सकता है तो `every' मात्र विशेषण का स्थान ले सकता है।

62. Every student should bring his text book.

हरेक विद्यार्थी को अपना पाठ्यपुस्तक ले आना चाहिए।

63. I don't want either of these books.

मुझे इनमें से कोई भी पुस्तक नहीं चाहिए।

64. I want neither of these books.

मुझे इनमें से कोई भी पुस्तक नहीं चाहिए।

हिन्दी में either...or और neither....nor के अनुवाद में कई संभावनाएँ हैं।

65. You must either go at once or wait till tomorrow.

तुम अभी जाओ नहीं तो कल तक इन्तज़ार करो।

66. Either you or he should go to the market.

या तो उसे बाज़ार जाना चाहिए या तुम्हें।

67. Neither Ramesh nor Radha knows Malayalam.

रमेश या राधा मलयालम नहीं जानती।

या

न रमेश मलयालम जानता न राधा जानती।

68. He neither cried nor laughed.

वह न रोया न हँसा।

अंग्रेजी में `both', `एक और दूसरा' के अर्थ में प्रयुक्त होता है।

69. Both are good students.

दोनों अच्छे विधार्थी हैं।

70. It was both hot and dry.

वह गरम था और सूखा भी।

71. He is both an actor and a director.

वह अभिनेता है और साथ ही निदेशक भी।

संज्ञा के बदले `both' आने पर या `both of' + संज्ञा का प्रयोग होने पर अनुवाद में `दोनों' का प्रयोग किया जाता है। वाक्य 70 और 71 में विशेषण या पूरक स्थान पर प्रयोग है, वहाँ उसका अनुवाद अलग है।

## 2.1.2.10 संयुक्त सर्वनाम

अंग्रेज़ी में `every', `any', `some', `no' के साथ `-thing', `-one', `-body', `-where' जोडकर संयुक्त सर्वनाम बनाया जाता है। हिन्दी में सब, कुछ, कोई, कहीं आदि के योग से संयुक्त सर्वनाम बनते हैं।

72. Everybody/ Everyone should be present tomorrow.

सभी लोग/सब कोई/ हर कोई/ हरेक आदमी/ हर आदमी को कल उपस्थित होना चाहिए।

73. Everything has been taken away.

सबकुछ ले गए।

74. I went everywhere in search of it.

मैं उसकी खोज में सब कहीं गया।

हिन्दी में इन संयुक्त सर्वनामों के साथ कभी-कभी प्रबलक के रूप में `भी' का प्रयोग होता है।

75. Go anywhere you like.

तुम कहीं भी जा सकते हो/ तुम जहाँ चाहे वहाँ जा सकते हो।

76. It is found nowhere.

वह कहीं भी नहीं देखा जाता।

अंग्रेज़ी में `each' और `every' में थोडा-सा अन्तर है। पहले ही सूचित किये गये व्यक्ति /वस्तू केलिए `each' का प्रयोग होता है तो कोई पूर्वसूचना के बिना every (body/ thing) का प्रयोग होता है। हिन्दी में ऐसा कोई अन्तर सूचित नहीं किया जा सकता।

77. There were ten boys and I gave a banana to (each/everybody)

(वहाँ) दस लडके थे और मैं ने उन्हे एक-एक केला दिया।

78. (Everyone, Each, Eachone) of the students should have (their, his) own books.

हरेक विधार्थी के पास अपनी-अपनी पुस्तकें होनी चाहिए।

79. I went there and gave a banana to everybody/everyone.

मैं वहाँ जाकर सभी को एक-एक केला दिया।

संबन्धवाचक, निश्चयवाचक तथा अनिश्चयवाचक सर्वनामो की भाँति संयुक्त सर्वनामों का स्वतंत्र और विशेषक के रूप में प्रयोग होता है।

80. सबकोई जानते हैं कि वह अच्छी लडकी है।

Everybody knows that she is a good girl.

81. हर कोई उसकी कमाई का श्रोत जानते हैं।

Everybody knows the source of his savings.

82. किसी और से यह मत कह देना।

Don't tell this to anyone else.

83. कोई एक आपसे मिलने आया है।

Somebody has come to meet you.

84. तुम हर बार कोई-न-कोई चीज़ माँगती ही रहती हो।

Everytime you are asking something.

85. किसी-न-किसी तो घर पर रहना ही होगा।

Somebody will have to stay at home.

86. तुम्हें कुछ-न-कुछ तो लेना ही होगा।

You will have to take something.

हिन्दी में द्विरुक्त सर्वनाम मिलते हैं तो अंग्रेज़ी में नहीं मिलते। इसकेलिए उनके अनुवाद में कोई एकरूपता नहीं।

87 किस-किस को दावत में बुला रहे हैं?

Who all are you inviting for the dinner?

88. इनमें से तुम्हें कौन-कोन सी सबसे अधिक पसन्द है?

Which among these do you like best?

89 सम्मेलन में कौन-कौन उपस्थित थे।

Who were present in the meeting?

90. वे क्या-क्या लाये हैं?

What (all things) has he brought?

91. कोई-कोई ऐसा भी कहते हैं।

Some are saying like this too.

अनुपूरक सर्वनाम (reciprocal pronoun)'each other' और `one another' भी संयुक्त सर्वनाम हैं। 'इनकेलिए एक दूसरे को' / `एक दूसरे से', और `आपस में' ही मिलते हैं।

92. Ramesh and Radha like each other.

रमेश और राधा एक दूसरे को पसन्द करते हैं।

93. Ramesh and Radha like one another.

रमेश और राधा एक दूसरे को पसन्द करते हैं।

94. Ramesh, Rajesh and Radha like one another.

रमेश, राजेश और राधा आपस में /एक दूसरे को पसन्द करते हैं।

95. They quarelled each other. (two)

वे एक दूसरे से झगडा किए।

96. They quarrelled one another. (more than two)

वे आपस में झगडा किए।

अंग्रेज़ी में `दो व्यक्ति' के लिए `each other' और `दो से अधिक' के लिए `one another' का प्रयोग होता है। हिन्दी में यहाँ `each other' के लिए एक दूसरे से और `one another' के लिए `आपस में' का प्रयोग हुआ है।

अंग्रेज़ी के whichever, whenever, whatever, wherever जैसे सम्बन्धवाचक सर्वनाम के समानार्थी हिन्दी सर्वनाम भी संयुक्त सर्वनाम हैं।

97. Whoever comes first gets the prize.

जो कोई सबसे आगे आता है, उसे उपहार मिलेगा।

98. You can eat whatever you like.

कुछ भी खा सकते हो जो तुम्हें पसन्द है। जो कुछ तुम्हें पसन्द है, वह तुम्हें खा सकते है।

वक्ता के आश्चर्य, कोध आदि प्रकट करने केलिए `ever' बल देकर प्रयुक्त होता है, तब वह अलग करके लिखा जाता है।

99. Who ever are you?

कौन हो तुम?

उपर्युक्त वाक्य के हिन्दी अनुवाद में वही भाव की अभिव्यक्ति के लिए शब्द-क्रम बदल दिया गया है।

अंग्रेज़ी के विभक्तीय सर्वनाम `some one', `something', `anything', `anyone', `nothing', `no one', `none' के अनुवाद में `कोई' और `कुछ' ही आते हैं।

100. Somebody told him to do so.

किसी ने उससे इसप्रकार करने को कहा।

101. Some one came here yesterday.

कोई कल यहाँ आया।

अंग्रेज़ी में सकारात्मक/नकरात्मक उत्तरलक्षी प्रशनों केलिए `anybody' और `anything' का प्रयोग होता हैं तो पूर्णत: सकारात्मक उत्तरदक्षी प्रश्नों के लिए `somebody' और `something' का प्रयोग होता है।

102. Did somebody help you?

क्या किसी ने आपकी मदद की?

103. Did anybody help you?

क्या किसी ने आपकी मदद की?

उपर्युक्त दोनों वाक्यों का अनुवाद एक ही है। हिन्दी में इस तरह का भेद नहीं किया जा सकता।

## 2.1.2.11 सर्वनाम के रूप में `one'

`One' अंग्रेज़ी में एक सामान्य सर्वनाम है, जो निर्देशवाचक वाक्यों में आता है।

104. One should always be loyal.

हमें सदा ईमानदार होना चाहिए।

उपर्युक्त अंग्रेज़ी वाक्य का अनुवाद `एक को ईमानदार होना चाहिए' नहीं कर सकते हैं क्योंकि हिन्दी में सामान्य निर्देश `हम/तुम/आप' को कर्ता मानकर ही दे सकते हैं।

`One' का प्रयोग शब्दों को आवृत्ति से बचाने केलिए भी होता है।

105. I prefer this colour to that one.

मुझे इस रंग से वह रंग अधिक पसन्द है।

हिन्दी में इस तरह आवृत्ति से बच नहीं पाएँगे।

## 2.1.2.12 `it' और `they' का विशेष प्रयोग

अंग्रेज़ी में `it' का प्रयोग तत्काल कर्ता के रूप में मिलता है, हिन्दी में ऐसा कोई नहीं मिलता।

106. It is raining.

बारिश हो रही है।

107. It is not good to play on roads.

सडकों पर खेलना अच्छा नहीं।

108. He is ill, is it his fault?

वह बीमार है; क्या वह/यह उसकी गलती है?

109. I found it very difficult to read these letters.

ये वर्ण पढना मुझे कठिन महसूस हुआ।

उपर्युक्त दोनों उदाहरणों में (108 और 109) `it' का प्रयोग हुआ है, (108) में एक वाक्य के बदले और (109) में वाक्यांश के बदले उसका प्रयोग हुआ है। (108) के अनुवाद में यह / वह का प्रयोग `it' के लिए मिलता है तो (109) में प्रयुक्त `it' का, अनुवाद में कोई निशान नहीं है।

बाद में आनेवाले संज्ञा या सर्वनाम को बल देने के लिए भी अंग्रेज़ी में `it' का प्रयोग होता है, जिसकेलिए `वह' का प्रयोग होता है।

110. It was his sister who wrote this letter.

वह उसकी बहन थी जिसने यह चिट्ठी लिखी।

अकर्तृवाच्य वाक्य के आरंभ में भी `it' का प्रयोग रहता है।

111. It is heard that the Prime minister is visiting Kerala next week.

सुना जाता है कि प्रधान मंत्री अगले हफ्ते केरल में आते हैं।

अंग्रेज़ी में अन्यपुरुष बहुवस्न `they' का प्रयोग `लोग' के अर्थ में भी मिलता है।

112. In Japan they marry earlier.

जापान में लोग छोटी उम्र में ही शादी करते हैं।

संख्या में कम होने पर भी सबसे ज्यादा विविधता पानेवाला वाग्भाग सर्वनाम ही है। इनकेलिए कोई नया शब्द नहीं बनाया जा सकता, इसलिए ही इनके अनुवाद में सतर्क रहना चाहिए।

### 2.1.3 विशेषण

संज्ञा या सर्वनाम (कभी-कभी विशेषण शब्दों) की विशेषता या वस्तु के लक्षण बतानेवाले शब्द विशेषण या विशेषक होते हैं। विशेषण विकारी शब्द भेद माना जाता है क्योंकि ज्यादात्तर विशेषण विकारी होते हैं। लेकिन हिन्दी में अविकारी विशेषण भी मिलते हैं। विकारी विशेषण का, संज्ञा से मेल होता है। इनके लिंग, वचन तथा कारकों के रूप स्वतंत्र वहीं होते। वे संज्ञा से विशेषण का सम्बन्ध व्यक्त करते हैं तथा उस संज्ञा के लिंग, वचन तथा कारक के अनुसार होते हैं जिससे किसी विशेषण का मेल होता है।

अंग्रेज़ी में विशेषण विकारी शब्द नहीं है। विशेषणों की तुलना करते वक्त ही उसके साथ परसर्ग `-er' या `-est' जोडा जाता है।

अंग्रेज़ी और हिन्दी दोनों में कुछ विशेषण और क्रियाविशेषण एकरूप रहता है।

**1. Vanchinad is a fast train.**

वञ्चिनाड तेज़ गाडी है।

**2. Raju ran fast.**

राजू तेज़ दौडा।

वाक्य-1 में `fast' विशेषण है तो वाक्य -2 में क्रियाविशेषण। हिन्दी में दोनों का अनुवाद भी एक ही है।

### 2.1.3.1 विशेषणों का संरचनात्मक प्रकार्य

विशेषणों का मुख्य संरचनात्मक प्रकार्य विधेय विशेषण और विशेष्य विशेषण के रूप में है।

3. Ramesh is an honest man.

रमेश ईमानदार आदमी है।

4. Ramesh is honest.

रमेश ईमानदार है।

कुछ विशेषणों का प्रयोग केवल विधेय विशेषण के रूप में होता है तो कुछ विशेषणों का प्रयोग मात्र विशेषण के रूप में होता है।

5. His daughter is pretty.

उसकी बेटी सुन्दर है।

6. Ram is my old friend.

राम मेरा पुराना दोस्त है।

7. My friend Ram is very old.

मेरा दोस्त राम बुजुर्ग है।

वाक्य-6 में `old', `friend' का विशेषण नहीं, `friendship' का विशेषण है। इसलिए यहाँ पुराना शब्द ही उसका सही अनुवाद है। वाक्य -7 में `old' विधेय विशेषण है, जो राम का ही विशेषण है। वाक्य-6 में जो `old' है उसका विधेय विशेषण के रूप में प्रयोग नहीं हो सकता। `पुराना' व्यक्ति का विशेषण नहीं हो सकता। `दोस्ती' का विशेषण होने के कारण ही यहाँ `old' के लिए `पुराना' शब्द का प्रयोग हुआ है।

8. That is a new student.

वह नया विधार्थी है।

9. That student is new.

वह विधार्थी नया है।

`new' का विधेय और विशेष्य दोनों प्रकार का प्रयोग संभव है।

कुछ भाववाचक संज्ञाओ का विशेषण, मात्र विशेष्य विशेषण के रूप में प्रयुक्त है। पदार्थवाचक संज्ञा के विशेषण के रूप में उनका, दोनों प्रकार का प्रयोग संभव है।

10. Rana Pratap in a real hero.

राणा प्रताप असली नायक है।

11. These are real flowers.

ये फूल असली है।

12. These flowers are real.

ये फूल असली है।

कुछ विशेषण जो केवल विधेय विशेषण के रूप में ही प्रयुक्त होते, वे क्रिया या क्रियाविशेषण के समान ही है, वे अवस्था सूचक होते हैं।

13. He is afraid to do it.

वह करने में उसे डर है।

14. Jamuna is ill.

जमुना बीमार है।

15. Rakesh is well now.

अब राकेश स्वस्थ है।

16. That patient is conscious now.

वह बीमार अब होश में है।

वाक्य -13 के अनुवाद में `afraid' का अनुवाद `डर' संज्ञा है। वाक्य -14, और 15 में अवस्थासूचक विशेषणों के लिए हिन्दी में विशेषण मिलते हैं। वाक्य 16 के अनुवाद में `होश के साथ परसर्ग `में' का प्रयोग हुआ है। वाक्य (14) और (15) में प्रयुक्त अवस्थासूचक विशेषणों का, मात्र विधेय विशेषण के रूप में प्रयोग मिलता है। वाक्य -

16 में प्रयुक्त अवस्थासूचक विशेषण `conscious' का दोनों प्रकार से प्रयोग संभव है, लेकिन कृदन्तीय विशेषण के साथ ही उसका अनुवाद किया जा सकता है,

17. That conscious patient is asking for water.

होश में आया हुआ रोगी पानी माँगता है।

अंग्रेज़ी में कुछ विशेषणों का प्रयोग विशेष्य के बाद में भी देखा जा सकता है।

18. Shankar is the Post Master General of this region.

शंकर इस क्षेत्र का मुख्य डाकघर-अधीश है।

19. The members present agreed with the President.

उपस्थित सदस्य अध्यक्ष से सहमत हुए।

20. The house ablaze is next door to mine.

जलता हुआ घर हमारे पडोस में है।

हिन्दी में Post Master General केलिए पारिभाषिक शब्द मिलता है। वाक्य -19 में `members present' से तात्पर्य `members who were present' है और उसका अनुवाद `जो सदस्य उपास्थित थे' या `उपस्थित सदस्य' ही कर सकते हैं। वाक्य -20 में `house ablaze' का अनुवाद `जलता हुआ घर' ही कर सकते हैं जो वर्तमानकालिक कृदन्त है।

अंग्रेज़ी में विशेष्य के पहले और बाद में विशेषण का प्रयोग होने पर अर्थ में कुछ अन्तर देखा जा सकता है।

21. These are the stars visible.

दृष्टिगोचर तारे ये हैं। / (ये वही तारे हैं जो दृष्टिगोचर हैं)

22. These are the visible stars.

ये तारे दृष्टिगोचर हैं।

यहाँ `stars visible' से तात्पर्य तारे जो एक निश्चित समय में गोचर हैं, तो `visible stars' तारे जो हमेश दृष्टिगोचर हैं, अत: यहाँ विशेषण का स्थान अंग्रेज़ी का ठीक उलटा है।

सामान्य बातों की आभिव्यक्ति के लिए दोनों भाषाओ में विशेषण, संज्ञा पदबंध के शीर्ष के रूप में प्रयुक्त होता है और यहाँ संज्ञा का लोप हो जाता है। अंग्रेज़ी में यहाँ हमेशा विशेषण के पहले Definite Article `the' का प्रयोग होता है।

23. The rich should help the poor.

अमीरों को गरीबों की मदद करनी चाहिए।

24. The wise look to the wiser for advice.

बुद्धिमान लोग उनसे भी और तेज़ बुद्धिमान लोगों से परामर्श पाते हैं।

## 2.1.3.2. सार्वनामिक विशेषण

हिन्दी के सार्वनामिक विशेषण `यह' और `वह' अंग्रेज़ी में संकेतवाचक विशेषण (Demonstrative adjective) के स्थान पर आते हैं।

25. उन लड़कियों से पूछो।

Ask those girls.

26. यह मेरी पुस्तक है।

This is my book.

27 वह कैसा मकान है?

Which type of building is that?

28. ऐसा आदमी योग्य नहीं।

This kind of people are not eligible.

29 मुझे इतनी काजू नहीं चाहिए।

I don't want this much of cashewnuts.

वाक्य-27, 28 और 29 के अनुवाद में सार्वनामिक विशेषण के स्थान पर वाक्यांश का प्रयोग किया गया है।

30. कोई नेता भाषण दे रहा है।

A leader is addressing the audience.

यहाँ अनिश्चयवाचक सार्वनामिक विशेषण `कोई' का अनुवाद Indefinite article-`a' से किया गया है।

31. कौन अभिनेता समारोह का उद्घाटन करता है?

Which actor is inaugurating the funtion?

उपर्युक्त वाक्य में `कौन' का अनुवाद `who' के बदले `which' है, `who' अंग्रेज़ी में विशेषण के रूप में प्रयुक्त नहीं होता।

## 2.1.3.3 `-वाला' प्रत्यययुक्त विशेषण

`-वाला' प्रत्यययुक्त क्रिया जब विधेय विशेषण के रुप में प्रयुक्त होता है तो निकट भविष्य का बोध होता है।

32. राज कलकत्ते जानेवाला है।

Raj is going to Calcutta./ (Raj is about to go to Calcutta.)

33. बारिश होनेवाली है।

It is about to rain.

कुछ '-वाला' प्रत्यययुक्त विशेषणों के लिए विशेषण पदबंध का प्रयोग होता है।

34. एक टोपीवाला आदमी बाहर खडा है।

A man wearing hat is standing outside.

## 2.1.3.4 सादृश्यवाची विशेषण

हिन्दी में सादृश्यवाची विशेषण संज्ञा या विशेषण के साथ `-सा'/ `सरीखा'/ `जैसा' शब्दों के योग से बनते हैं,

35. उसने अपने रेशम-से बाल काट दिये।

She cut her silky hair.

यहाँ संज्ञा -`silk' से व्युत्पन्न विशेषण `silky' सादृश्यवाची विशेषण है। `-सा/से/सी' प्रत्यय निकट के अर्थ में प्रयुक्त है,-

36. मुझे थोडा-सा पानी दे दो।

Give me little water.

37 मुझे थोडा पानी दे दो।

Give me a little water.

अंग्रेज़ी में `little' और `a little' में जो अन्तर है वह इसप्रकार अभिव्यक्त किया जा सकता है।

`सा/से/सी' रंगों के साथ जोडने पर `गुण में कमी' (diminishing quality) का बोध होता है,-

38. उसने एक लाल-सी साडी खरीदी।

She bought a reddish sari.

जब `सा/से/सी' अन्य विशेषणों के साथ होता तो `intensive meaning' मिलता है।

39 वह एक बडा सा मकान है।

That is a very big house.

40. वह एक चौडी-सी सडक है।

That is a very wide road.

उपर्युक्त दोनों वाक्यों में -`सा' प्रत्यय के लिए अनुवाद में प्रविशेषक `very' का प्रयोग किया गया है।

हिन्दी और अंग्रेज़ी दोनों में विशेषण सादृश्यवाचक विशेषण के रूप में प्रयुक्त हैं-

41. उसका बचकाना दलील सुनकर मुझे गुस्सा आया।

Hearing his childish arguements I became angry.

42. यही आखिरी रास्ता है।

This is the last way.

उपर्युक्त वाक्य के अनुवाद में मूल विशेषण `last' का प्रयोग किया गया है।

## 2.1.3.5 द्विरुक्त विशेषण

"हिन्दी में द्विरुक्त विशेषण का, अवधारक (`intensive) या विभक्तीय (distributive) अर्थ होता है"[6] उनका अनुवाद अंग्रेज़ी में द्विरुक्त विशेषण से नहीं किया जा सकता।

43. उसने एक लाल-लाल साडी खरीदी।

She bought a deep red sari.

44. हमारे यहाँ बडे बडे मकान हैं।

In our place there are very big houses.

## 2.1.3.6 विशेषणों की तुलना

अंग्रेज़ी में सामान्य कोटि के विशेषणों की तुलना करने के लिए (जब गुण/मात्र समान होने या न होने पर) `as...as', `so.....as', `not so....as' का प्रयोग होता है, हिन्दी में `के समान', `जितना ....उतना' का प्रयोग होता है।

45. She is as clever as her mother is.

वह उतना चालाक है जितनी उसकी माँ।

40. She is not so/as pretty as her mother is.

वह उतना खूबसूरत नहीं जितनी उसकी माँ।

47. Mohan is as foolish as Ram is clever.

राम जितना चालाक है, मोहन उतना ही मूर्ख है।

विशेषण में समान्तर वृद्धि(parellel increase) सूचित करने केलिए उत्तरावस्था में प्रयुक्त प्रत्यय `-er', और `more' का प्रयोग अंग्रेज़ी में मिलता है। इसकेलिए `जितना..उतना' का प्रयोग मिलता है।

48. The better the cloth, the more it costs.

कपडा जितना अच्छा होगा, वह उतना ही महँगा भी।

अंग्रेज़ी में क्रमिक वृद्धि को सूचित करने के लिए `-er...er' प्रत्यय लगाया जाता है। हिन्दी में इसे सूचित करने के लिए ऐसा कोई प्रयोग नहीं मिलता।

49. This room is getting warmer and warmer.

यह कमरा गरम होता जा रहा है।

उत्तरावस्था में `से', `की अपेक्षा', `की तुलना में', `के मुकाबले' आदि प्रत्यय लगाया जाता है। तुलनावस्था में कमी को सूचित करने के लिए `कम' शब्द का प्रयोग आवश्यक (obligatory) है तो अधिकता सूचित करने के लिए `ज्यादा' का प्रयोग ऐच्छिक है।

50. यह घर उस घर से अच्छा है।

This house is better than that house.

51. तुम उससे ज्यादा समझदार हो।

You are more sensible than him.

52. नीमा, लीमा से कम चालाक है।

Neema is less clever than Leema.

एक ही व्यक्ति या वस्तु के गुणों की तुलना करते वक्त `-er' प्रत्यय

53. Geetha is more brave than prudent.

गीता समझदार होने से बढकर बहादूर है।

हिन्दी में उत्तमावस्था के लिए `सबसे' का प्रयोग विशेषण के आगे होता है, अंग्रेज़ी में est' प्रत्यय जोडा जाता है, या `most + विशेषण' का प्रयोग होता है।

54. Jithin is the smallest boy.

सबसे छोटा लडका जितिन है।

55.This is the most important thing.

सबसे महत्वंपूर्ण कार्य यही है।

रूप में कुछ समानता दिखानेवाले अंग्रेज़ी विशेषण `later' और latest समय के विशेषण हैं तो latter और last स्थान या क्रम के।

56. She is later than I expected.

वह मेरे अन्ताज से भी देर करती है।

57. What is the latest news?

सबसे ताजा खबर क्या है?

58. Of the two cities, the latter is big.

दोनों शहरों में से दूसरा बडा है।

59. The latter chapters are more interesting.

अगले अध्याय ज्यादा दिलचस्प है।

later और latest के अनुवाद में एकरूपता नहीं दिखाई पडती। जब दो वस्तुओ की तुलना की जाती है, तब हिन्दी में latter का अनुवाद `दूसरा' है और जब दो से अधिक हैं तो `अगले यां शेष'।

इसीप्रकार elder, older, eldest, oldest के अनुवाद में भी ध्यान देना पडेगा।

60. She is older than I am.

वह मुझसे बडी है।

61. Shirly is my eldest sister.

षेर्ली मेरी बडी बहन है।

62. Jeevan is the oldest boy in our class.

हमारे क्लास के सबसे बडा लडका जीवन है।

63. Geetha is his eldest daughter.

गीता उसकी बडी बेटी है।

`elder/eldest' के लिए `बडा/बडे/बडी' और सबसे बडा/बडी' अनुवाद ही किया जा सकता है। older और oldest का अनुवाद व्युत्पन्न विशेषण से ही किया जा सकता है।

farther / farthest और further/furthest दोनों का प्रयोग दूरी के लिए हो सकता है।

64. York is farther/further than Lincoln or Selby.

योर्क, लिंकन या सेल्बी से दूर है।

65. York is the farthest/ furthest town.

योर्क सुदूर शहर है।

वाक्य-64 और 65 में further/further और farthest/ furthest सर्वनाम के रूप में प्रयुक्त है जहाँ उसका अनुवाद `दूर' क्रियाविशेषण से किया जाता है। वाक्य -65 का अनुवाद सामान्य विशेषण के समान ही किया गया है।

"further का प्रयोग मुख्य रूप से भावात्मक संज्ञा के साथ अतिरिक्तता (additional/ extra) की सूचना के लिए होता है।"[7]

67. Further discussion will be pointless.

शेष चर्चा निराधार होगी।

68. After that she made no further remarks.

उसके बाद उसने कोई परामर्श नहीं दिया।

69. I must have a reply without further delay.

फिर बिना विलम्ब मुझे उत्तर मिलना चाहिए।

वाक्य -68 और 69 में निषेधवाचक शब्द हैं और इसलिए उनके अनुवाद में `फिर कोई' का प्रयोग हुआ है। `फिर' निपात है तो `कोई' सार्वनामिक विशेषण है।

`further' का प्रयोग क्रियाविशेषण के रूप में भी मिलता है,

70. It is not safe to go further in this fog.

इस बर्फ में और आगे जाना सुरक्षित नहीं।

`far' और `near' का भी प्रयोग तुलनावस्था को सूचित करता है।

71. That church is near to us.

वह गिरजाघर हमारे पास है।

72. That church is far away from us.

वह गिरजाघर हमसे दूर है।

उपर्युक्त उदाहरणों में `near' और `far' वक्ता को केन्दबिन्दु मानकर ही कहा गया है और ये क्रियाविशेषण के रूप में ही प्रयुक्त हैं और उनका अनुवाद भी क्रियाविशेषण हैं।

73. The far bank of the river in muddy.

नदी का वह किनारा पङ्किल है

74. The near bank of the river is marshy.

नदी का यह किनारा दलदल है।

उपर्युक्त उदाहरणों में `far' और `near' का अनुवाद निर्देशवाचक विशेषण `वह' और `यह' हैं।

हिन्दी में तुलनावाचक शब्द `की अपेक्षा', `की तुलना में', `के आगे', `के सामने', `के मुकाबले', `की बनिस्बत', का भी प्रयोग मिलता है। इनकेलिए अंग्रेज़ी में कभी-कभी उनके समानार्थी शब्द `compared to' का प्रयोग होता है।

75. संस्कृत की अपेक्षा हिन्दी सरल है।

Hindi is easy compared to Sanskrit.

76. उसकी तुलना में मेरा भाई ताकतवार है।

My brother is strong compared to him.

77 यह किताब उस किताब के मुकाबले दिलचस्प है।

This book is interesting compared to that one.

78. गधे की बनिस्वत घोडा मज़बूत है।

Horse is strong compared to donkey.

79. वह मेरे आगे छोटा है।

He is small compared to me.

80. स्ती पुरुष के सामने कमज़ोर नहीं।

Woman is not weak compared to man.

## 2.1.4 क्रिया

"भाषा व्यवहार के लिए प्रत्येक वाक्य में प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से क्रिया की सत्ता अनिवार्य है। क्रिया वाक्य-रचना की दृष्टि से वाक्य का अनिवार्य घटक है, इसलिए क्रिया को वाक्य का मूलाघार/प्राण भी कहा जाता है। क्रिया वह शब्द/शब्दसमूह है जिससे किसी कार्यव्यापार के होने या करने (अथवा किसी सत्ता/स्थिति, घटना, व्यापार/सांक्रिया, प्रक्रिया या परिवर्तन की सूचना मिलती है।"[8] अंग्रेज़ी में `verb' शब्द की महत्ता उस शब्द में ही निहित है। "वर्ब लौटिन `वर्बम' से आया हुआ शब्द है, जिसका अर्थ है `-वर्ब' (शब्द)। वह इसलिए ऐसा कहलाता है कि वाक्य का सबसे महत्वपूरण शब्द `वर्ब' ही है।"[9] इसलिए ही अनुवाद में क्रिया पर विशेष घ्यान देना चाहिए।

हिन्दी और अंग्रेज़ी में कार्य-व्यापार की प्रमुखता के आधार पर क्रिया के दो वर्ग है मुख्य क्रिया और सहायक क्रिया। मुख्य क्रिया कोशीय अर्थ वहन करता है तो सहायक क्रिया, मुख्य क्रिया की, किसी-न-किसी रूप में सहायता करती है।

### 2.1.4.1 मुख्य क्रिया

हिन्दी में मुख्य क्रिया के अन्तर्गत निम्नलिखित घटक शामिल हैं-1. सरल घातु 2. सामासिक घातु 3. मिश्र घातु 4. यौगिक घातु 5. संयुक्त घातु। अंग्रेज़ी में सामासिक घातु, मिश्र घातु, यौगिक घातु तथा संयुक्त घातु नहीं मिलते हैं। अंग्रेज़ी में वाक्यांशीय क्रिया (phrasal verb) मिलती हैं जो हिन्दी में नहीं है। इनके अलावा उत्पत्ति के आधार पर हिन्दी में

नामधातु मिलती है जो अंग्रेज़ी में नहीं है तो दोनों भाषाओ में अनुकरणात्मक धातु मिलती है।

### 2.1.4.1.1 सरल धातु

इसमें धातु के अकर्मक, सकर्मक तथा प्रेरणार्थक रूप शामिल हैं।

#### 2.1.4.1.1.1 अकर्मक क्रिया (Intransitive verb)

अकर्मक क्रियायुक्त वाक्यों में कर्म नहीं होता या ये कर्म के बन्धन से मुक्त हैं।

1 लडका दौडा।

**The boy ran.**

2. सबिता सो गई।

**Sabitha slept.**

क्रियाओ की अकर्मकता तथा सकर्मकता उनके प्रयोगगत अर्थ पर निर्भर होने के कारण अर्थ के बदलने पर सकर्मक क्रिया अकर्मक रूप में प्रयुक्त हो सकती है।

अकर्मक क्रियाओ के साथ प्रधान कर्मवत्, शब्द प्रयुक्त होने पर वे सकर्मक बन जाती हैं। अंग्रेज़ी में भी ऐसी क्रिया मिलती है।

3. उसने एक अच्छी चाल चली।

**He made a good move.**

4. मैं उसके साथ चली।

I walked with him.

5. यह सिपाही कई लडाइयाँ लड चुका है।

This soldier has fought many battles.

6. वह भयानक ढंग से लडाई की।

He fought fiercely.

अंग्रेज़ी में कुछ अकर्मक क्रियायें सम्बन्धसूचकों के जोड़ने पर सकर्मक बन जाती हैं।

7. They laughed.

वे हँसे।

8. Do not laugh at the poor.

गरीबों की हँसी मत उठाओ।

अकर्मक क्रियाओ का प्रयोग सकर्मक रूप में भी देखा जाता है।

9. राम खा चुका।

Ram has eaten.

10. वह बनारस में पढा।

He studied at Banaras.

अंग्रेज़ी में अकर्मक क्रियाओ का प्रयोग प्रेरणार्थक रूप में हो तो वह सकर्मक हो जाता है।

11. The horse walks.

घोडा चलता है।

12. He walks the horse.

वह घोडे को चलाता है।

अंग्रेज़ी में कुछ क्रियाओ के सकर्मक-अकर्मक रूप में थोडा-सा रूप परिवर्तन मिलता है। इनकेलिए हिन्दी में अलग क्रियाओ का प्रयोग देखा जा सकता है।

13. Sit here.

यहाँ बैठो।

14. Set the lamp on the table.

दीपक मेज़ पर रखो।

## 2.1.4.1.1.2 सकर्मक क्रिया (Transitive Verb)

भूतकाल में कर्ता के साथ 'ने' परसर्ग होने पर हिन्दी में क्रिया कर्म के अनुसार बदलती है। अंग्रेज़ी में ऐसा कोई परिवर्तन नहीं होता। इसलिए अंग्रेज़ी से हिन्दी अनुवाद करते समय क्रिया की सकर्मकता - अकर्मकता की जानकारी अवश्य है।

15. गीता ने गीत गाया।

Geetha sang a song.

भूतकाल में कर्म के साथ परसर्ग आने पर क्रिया पुल्लिंग एकवचन में आती है।

16. माँ ने बच्ची को मारा।

Mother beat the child.

17. माँ बच्ची को सुला रही है। (अकर्मक)

Mother is putting the child sleep.

## 2.1.4.1.1.3 प्रेरणार्थक क्रिया (Causative verb)

हिन्दी में मूल धातुओं में `आ' तथा `वा' प्रत्ययों के योग से प्रेरणार्थक क्रिया रूप बनती है। अंग्रेज़ी में इस प्रकार प्रेरणार्थक रूप नहीं बनता। सकर्मक और अकर्मक दोनों के प्रेरणार्थक रूप मिलते हैं।

18. माँ बच्ची को दूध पिला रही है।

Mother is making the child drink milk.

19. गीता के पिताजी ने उसकी शादी कर दी।

Geetha's father got her married.

अंग्रेज़ी में प्रेरणार्थक वाक्य बनाने के लिए `make', `put', get जैसी क्रियाओं को मुख्य क्रिया के रूप में स्वीकार करते हैं।

द्वितीय प्रेरणार्थक वाक्यों में मध्यम कर्त का आगम होता है।

20. माँ नोकरानी से बच्ची को सुलवा रही है।

Mother is making the servant put the child sleep.

21. माँ नोकरानी से बच्ची को दूध पिला रही है।

Mother is making the servant make the child drink milk.

लेकिन, अंग्रेज़ी में ऐसा प्रयोग तो कम ही मिलता है।

हिन्दी में कुछ क्रियाओ के प्रथम और दूसरा प्रेरणार्थक क्रियारूप मिलते हैं, तो अंग्रेज़ी में इनकेलिए विभिन्न क्रियाओ का प्रयोग करना पडता है।

22. मैं इस स्कूल में पढा।

I studied in this school.

23. वह इस स्कूल में पढाते हैं।

He is teaching in this school.

24. वे अपने बच्चों को इस स्कूल में पढवाते हैं।

They are getting their children study in this school.

### 2.1.4.1.2 सामासिक धातु

आर्थी दृष्टि से एक दूसरे से सम्बद्ध होनेवाली दो धातुओ से सामासिक घातु बनती है, जैसे, पढ-लिख, खा-पी, चल-फिर आदि। अंग्रेज़ी में ऐसी सामासिक क्रियाएँ नहीं मिलतीं।

25. वे चलते-चलते थक गये।

They bceame tired of roaming around.

### 2.1.4.1.3 मिश्र घातु

हिन्दी भाषा में मिश्र क्रियाओ का प्रयोग प्रचुर मात्रा में मिलता है। ये संज्ञा या विशेषण में `कर', `हो', `आ', `कर', `दे', `पड' आदि के योग से बनती हैं। मिश्र क्रिया-संरचना से अभिप्राय संज्ञा या विशेषण शब्द के साथ किसी क्रिया की संयुक्तता के द्वारा अर्थ की दृष्टि से एक इकाई का निमार्ण है। जहाँ संयुक्त क्रिया संरचना में एक क्रिया की दूसरी क्रिया से संयुक्तता रहती है वहाँ मिश्र क्रिया-संरचना में संज्ञा या विशेषण के साथ। अंग्रेज़ी में इस तरह की क्रिया भी नहीं है। इनके अनुवाद में become, prove, appear, look, feel, make, get आदि योजक क्रियाओ का प्रयोग किया जाता है। इन्हें `conjuct verb' या सम्मिश्र धातु भी कहते हैं। इनमें से एक क्रिया-मूल (pre-verb) और क्रियाकर (verbalizer) होते हैं।

"मिश्र क्रिया एक पदबन्ध (वाक्यांश) स्तर की संरचना है जो अर्थ और गठन की दृष्टि से एक इकाई है और वाक्य में समापिका क्रिया स्थान पर आती है"[10]

26. He felt ashamed.

उसे शरम आया।

27. He became ignorant.

वह अज्ञ हो गया।

28. मुझे उसकी याद आई।

I remembered him.

29. वह गीत नहीं याद किया।

He didn't remember the song.

30. मुझे उसका कारण मालूम हुआ।

I understood/knew its reason.

अप्रकार्यात्मक मिश्र क्रियाओ का पहला घटक किसी भी स्थिति में क्रिया के लिंग-वचन को नियंत्रित या प्रभावित नहीं करता।

31. उसने हमारे लिए नाश्ता तैयार की।

He prepared breakfast for us.

32. जाने की तैयारी करो।

Get ready for the journey/ Make preparations for the journey / Prepare for the journey.

33. उसने गाना शुरू किया।

He started singing.

34. शर्माजी ने उसकी शुरूआत की।

Mr. Sharma has started it.

उपर्युक्त उदाहरणों में विभिन्न प्रकार की मिश्र क्रियाएँ हैं, उनमें से तीन हिन्दी मिश्र क्रियाओ के अनुवाद में सरल क्रियाओ का प्रयोग किया गया है तो वाक्य -32 के अनुवाद में हिन्दी मिश्र क्रिया के अनुकूल क्रिया का प्रयोग किया गया है।

सकर्मक मिश्र क्रियाओ में क्रियाकर (verbalizer) `करना', `देना' और `लेना' हैं तो अकर्मक मिश्र क्रियाओ में `लगना', `आना' `होना' का प्रयोग होता है।

35. उसने कहानी याद की।

He recollected the story.

36. रमेश नाराज हुआ।

Ramesh became disappointed.

37 प्रदीप खुश हुआ।

Pradeep became happy.

38. हरीश मेरी पुस्तक उधार लिया।

Harish borrowed my book.

## 2.1.4.1.4 संयुक्त धातु (Compound verb)

"धातुओ के कुछ विशेष कृदन्तों के आगे (विशेष अर्थ में) कोई कोई क्रियायें जोडने से जो क्रियाएँ बनती हैं, उन्हें संयुक्त क्रियाएँ कहती हैं" [11]। हिन्दी के वाक्यात्मक व्याकरण में रंजक क्रियाओ के योग से जो क्रियाएँ बनती हैं उन्हें ही संयुक्त क्रिया कही गई है।

संयुक्त क्रियाओ में संयोग केवल अर्थ की समष्टि पर निर्भर है। " जब किसी विशिष्ट अर्थ बोध हेतु एकाधिक भिन्नार्थी (ले, दे समानार्थी भी) क्रियायें मिलकर एक पूर्ण समापिका क्रिया (पदबंध) का निर्माण करती हैं तो उस क्रिया. पदबंध को संयुक्त क्रिया कहते हैं।"[12] सामान्यत: प्रत्येक युग्म की पहली क्रिया मुख्य तथा दूसरी क्रिया सहकारी/सहायक क्रिया होती है। मुख्य क्रिया वक्ता/लेखक के अभिप्रेत क्रिया-व्यापर की सूचक होती है, जबकि सहायक क्रिया मुख्य क्रिया के क्रिया-व्यापार के सम्पन्न होने आदि के वैशिष्ट्य की सूचक होती है।

39. वह भाग गया।

**He ran away.**

40. वह काँप उठा।

**He trembled.**

41 उसने कागज फेंक दिया।

**He threw away the paper.**

42. वह हँस दिया।

He laughed.

43. वह दूध पी गया।

He drank the milk.

44. मुझे जाने दो।

Let me go.

45. वे खाना खा गए।

They ate the food.

46. वे खाना खा लिये।

They ate the food.

47 उन्होंने खाना खा दिया।

They ate the food.

48. उन्होंने खाना खा डाला।

They ate the food.

49 वह रो उठा। (आकस्मिकता, अचानकता)

He broke into tears.

50. बच्चा गिर पडा। (आकस्मिकता)

Child fell down.

51. वह उठ बैठा।

He stood up.

52. बच्ची सारा दूध पी गई। (क्रिया व्यापार का लाभ कर्ता को प्राप्त)

Child drank the whole milk.

53. मैं ने यह बात उससे भी कह दी। (क्रिया व्यापार का लाभ कर्ता से भिन्न के लिए)

I told this thing to him also.

54. वह रो दिया। (अचानकता)

He broke down into tears.

55. वह हँस पडी। (अचानकता)

She burst into laughter.

56. उसने प्याला तोड दिया। (उग्रता बोधन)

He broke the cup.

57 वह चल निकली। (आकस्मिकता)

She started going.

58. वह कुछ बोलना चाहता है। (इच्छा बोधन)

He wish to say something.

59. यह तो तुम्हें कुछ पहले ही सोच लेना चाहिए था। (आवश्यकता बोधन)

You should have thought this earlier.

60. उसने पेड काट डाला। (अचानकता)

He cut down the tree.

61. उसे दिन-रात मेहनत करना पडा। (विवशता बोधन)

He had to work day and night.

62. तुम्हें यहाँ से जाना नहीं होगा। (विवशता बोधन)

You don't have to go from here.

63. इधर से आया करो। (निरन्तरता/अभ्यास बोधन)

Keep coming this way.

64. दस मिनट में क्या कर पाओगे?

What can you do in 10 minutes?

65. उन लोगों के सामने उससे बोलते ही नहीं बनते। (असमर्थता बोधन)

He cannot speak infront of them.

66. वे भी काम करने लगे।

They also started working.

हिन्दी में अचानकता और आकस्मिकता सूचित करने के लिए ही ज्यादातर मिश्र क्रियाओ का प्रयोग होता है। इन मिश्र क्रियाओ में क्रियाकर रंजक क्रिया होती हैं। इन मिश्र क्रियाओ के हिन्दी अनुवाद में कोई एकरूपता नहीं मिलती।

शारीरिक प्रक्रिया सूचक क्रियाओ के साथ आक्रोश या वेग का भाव प्रकट करना अभीष्ट हो तो संयुक्त क्रिया के दोनों घटकों में क्रम-विपर्यय संभव है-

पटक देना-दे पटकना, खींच देना-दे खींचना, उड चलना -चल उड़ना, मार देना-दे मारना आदि।

हिन्दी में कुछ क्रियाओ का प्रयोग रंजक क्रियाओ के बिना संभव नहीं है।

67. I forgot about him.

मैं उसकी बात भूला।

इस उदाहरण में हिन्दी अनुवाद गलत है। `मैं उसकी बात भूल गया' ही इस वाक्य का ठीक अनुवाद है। लेकिन निषेधवाचक अव्यय `नहीं/मत' आने पर इसका अकेले प्रयोग होता है-

68. I didn't forget about him.

मैं उसकी बात नहीं भूला।

हिन्दी-अंग्रेज़ी और अंग्रेज़ी-हिन्दी अनुवाद में इस तरह की क्रियाओ के प्रयोग की ठीक जानकरी अवश्य होनी चाहिए।

## 2.1.4.1.5 यौगिक धातु

इसमें दोनों क्रियाओ का अपना कोशीय अर्थ होता है। दोनों क्रिया-घटकों के बीच `कर' की स्थिति निहित रहती है, जो कभी-कभी अव्यक्त है। यौगिक क्रियाएँ नकारात्मक परिवेश में भी प्रयुक्त हो सकती हैं।

69. उसे तुम्हारे साथ ले जाओ।

Take him with you.

70. पनडूबी बारूद लेकर डूब गई।

Submarine submerged with ammunition.

71. जाते वक्त अपना पता मुझे दे जाना।

Give me your address when you go.

72. मैं उसे दिलासा दे आई।

I gave him hope.

73. मेरे पास आ बैठ।

Come and sit with me.

74. दुश्मन उसे आ धेरे।

Enemies surrounded him.

75. इधर एक उल्का आ टपका।

A meteor came and hit here.

76. वह बुरी संगत में आ फँसा।

He got caught in a bad company.

77 बच्चा मेरे पास आ लेटा।

Child came and lay down with me.

78. वह नदी में जा गिरा।

He fell into the river.

79 वह भीड में जा घुसा।

He rushed into the crowd.

80. इस समस्या का हल सोच निकालो।

Find the solution to this problem.

81. मैं ने उसे दलदल से खींच निकाला।

I pulled him out from the marsh.

82. इस समस्या का हल ढूँढ निकालो।

Find a solution to this problem.

83. उसको एक सन्देश लिख भेजो।

Send a message to him.

कुछ क्रियाएँ संयुक्त तथा यौगिक दोनों अर्थों में प्रयुक्त होती हैं जिनका भेद सन्दर्भ से ही स्पष्ट होत है।

84. वह खाना खा गया।

He took his meals./ He took his meals and went.

उपर्युक्त उदाहरणों से पता चलता है कि हिन्दी की यौगिक क्रियाओ के लिए अंग्रेज़ी में सामान्यतया सरल (मूल) क्रियाओ का प्रयोग होता है। कुछ क्रियाओ के लिए दो क्रियाएँ 'और' समुच्चयबोधक के साथ प्रयुक्त होती हैं।

## 2.1.4.1.6 नाम धातु

कुछ विशिष्ट संज्ञा, सर्वनाम तथा विशेषण शब्दों से नामधातु बनती है। अंग्रेज़ी में इस प्रकार की क्रियाएँ नहीं है।

85. उसे वह स्वीकारना (स्वीकार करना) पडा।

He had to accept it.

86. मुझसे कोई नहीं झगडता।

Nobody quarrells with me.

87 मैं ने दूध गर्माया।

I warmed the milk.

88. में ने वह तरीका अपनाया।

I adopted that method.

### 2.1.4.1.7 अनुकरणात्मक धातु

हिन्दी और अंग्रेज़ी दोनों में अनुकरणात्मक धातु मिलती हैं। हिन्दी में ये ज्यादा मिलती हैं।

89. मैं ने दरवाजा खटखटाया।

I knocked at the door.

90. तारे जगमगाते हैं।

Stars twinkle.

### 2.1.4.2 सहायक क्रिया।

अंग्रेजी में सहायक क्रियाएँ तीन प्रकार की हैं - 1. मुख्य सहायक क्रियाएँ (Principal auxiliaries) 2. वृत्तिबोधक सहायक क्रियाएँ (Modal auxiliaries) और 3. अर्थ-वृत्तिबोधक सहायक क्रियाएँ (Semi-modals)

| Principal auxiliaries | Modal auxiliaries | Semi-modals |
|---|---|---|
| to be | can could | to need |
| to have | may might | to dare |
| to do | must | used |
| | (have to) (had to) | |
| | ought | |
| | shall should | |
| | will would | |

"हिन्दी में वृत्तिबोधक के रूप में प्रयुक्त 6 क्रियाएँ ये हैं - सकना, पाना, चुकना, पडना, होना और देना" [13]। इनके अलावा `लगना, चाहना, चाहिए, करना, रहना, जाना जैसी क्रियाओ का प्रयोग सहायक क्रिया के रूप में भी मिलता है। संयुक्त क्रिया के अन्तर्गत इनमें से कुछ क्रियाओ का प्रकार्य देख चुका है।

अंग्रेजी में मुख्य सहायक क्रियाएँ और अर्धवृत्तिबोधक सहायक क्रियाएँ मुख्य क्रिया के रूप में प्रयुक्त होती हैं तो हिन्दी में `सक' ओर `चुक' को छोडकर शोष सहायक क्रियाओ का प्रयोग मुख्य क्रिया के रूप में होता है।

2.1.4.2.1 मुख्य सहायक क्रियाएँ (Principal auxiliaries)

1. सहायक क्रिया के रूप में-

क्रिया व्यापार के काल की सूचना देने केनिए ही सहायक क्रिया के रूप में इसका मुख्य प्रकार्य है। `तात्कालिक कालों' (continuous tenses) में कर्तृवाच्य तथा अकर्तृवाच्य दोनों प्रकार के वाक्यों में इसका प्रयोग होता है।

91. They are singing.

वे गा रहे हैं।

`is' आदेश के लिए भी प्रयुक्त है। हिन्दी में इसके लिए क्रिया के सामान्य रूप या 'चाहिए' का प्रयोग होता है।

92. He is to return soon.

उसे जल्दी ही लौटना है।

यह अन्य पुरुष के साथ ही मुख्य रूप से प्रयुक्त होता है। मध्यम पुरुष के साथ प्रयुक्त होता तो किसी और का आदेश श्रोता के पास पहूँचाने का बोध होता है।

93. You are to stay here, Bill.

बिल, तुम्हें यहीं ठहरना है।

एक योजना (plan को सूचित करने के लिए भी इसका प्रयोग होता है)

94. She is to be married next week.

अगले हफ्ते उसकी शादी होनेवाली है।

2. साधारण क्रिया के रूप में-

95. Tom is a doctor.

टोम डाक्टर है।

96. He is at home.

वह घर में है।

97. He was tired.

वह थका हुआ है।

98. He will be happy.

वह खुश होगा।

99. Harry is being foolish.

हारि बेवकुल है।

उपर्युक्त उदाहरणों में `to be' के रूपों का प्रयोग मुख्य या साधारण क्रिया के रूप में है। वाक्य -99 का अर्थ तो यह नहीं कि हारि वास्तव में बेवकुफ नहीं, या वह उसकी आदत नहीं, वह उस समय बेवकुफी से काम करता है। इसका सही अनुवाद हिन्दी में संभव नहीं है। `to be' के कुछ अन्य प्रयोग भी मिलते है-

100. How much is these apples.

सेब का क्या दाम है।

101. It is very long way to London.

लन्दन बहुत दूरी पर है।

102. It is time to go home.

घर जाने का वक्त आ गया / घर जाने का वक्त यही है।

103. It is the Grandfather who takes the decision.

दादाजी ही फैसला करते हैं।

to have.

1. सहायक क्रिया के रूप में

सहयक क्रिया के रूप में `to have' का मुख्य प्रकार्य काल की आभिव्यक्ति में है।

इनसे अलग प्रयोग-

104. I had my cloth washed.

मैं ने अपना कपडा धुलवाया।

105. He had his hair cut.

उसका बाल काटा गया।

106. He had cut his hair.

उसने अपना बाल काट दिया।

107. He is having a room built on.

वह एक कमरा बनवा रहा है।

उपर्युक्त उदाहरणों में `to have' के विभिन्न रूपों का प्रयोग हुआ है। `had' के स्थान विपर्यय से अर्थ भी बदल जाता है। मुख्य क्रिया का स्थान अन्त में हो तो क्रिया का कर्ता व्याकरणिक कर्ता नहीं है।

2. साधारण/ मुख्य क्रिया के रूप में

स्वामित्व सूचना के लिए have/has का प्रयोग मुख्य क्रिया के रूप में होता है। हिन्दी में इनकेलिए `का/ के/की' या 'के पास' का प्रयोग किया जाता है।

108. He has a big house.

उसे एक बडा घर है।

109. I have had this car for 10 years.

दस साल से यह `कार' मेरे पास है।

`have' का अन्य कुछ प्रयोग-

110. We have breakfast at 8.00 o'clock.

हम आठ बजे नाश्ता करते हैं।

111. We are having breakfast tomorrow. (near future)

कल हम बड़े सबेरे नाश्ता करेंगे।

112. He has tea at eleven (habit)

वह ग्यारह बजे चाय पीता है।

`रस लेने' के अर्थ में `have' का प्रयोग उपर्युक्त प्रकार से होता है उनका अनुवाद अंग्रेज़ी में साधारण/सरल क्रिया या मिश्र क्रिया से होता है।

to do

1. सहायक क्रिया के रूप में।

सामान्य वर्तमान और सामान्य भूत से निषेधवाचक और प्रश्नवाचक वाक्य बनाते वक्त `do' के रूपों का प्रयोग किया जाता है। हिन्दी में कोई सहायक क्रिया इसप्रकार नहीं प्रयुक्त होता।

113. Did you go?

क्या तुम गया?

114. He didn't come.

वह नहीं आया।

115. Does he go?

क्या वह जाता है?/ वह जाएगा क्या?

बल/ज़ोर देने के लिए `did' का प्रयोग होता है। इसकेलिए `ज़रूर' जैसे क्रियाविशेषणों का प्रयोग होता है।

116. I did see him.

मैं ने ज़रूर उसे देखा।

आवृत्ति से बचाने के लिए मुख्य क्रिया के बदले इसका प्रयोग किया जाता है।

117. He didn't go? No, he didn't.

वह नहीं गया? नहीं, वह गया नहीं।

118. He didn't see you, did he?

उसने तुम्हें देखा नहीं, देखा क्या?

क्रिया व्यापार की तुलना करते समय भी `do' का प्रयोग होता है।

119. He runs faster than I do.

वह मुझसे तेज़ दौडता है।

प्रेरणा देने के लिए भी `do' का प्रयोग मिलता है।

120. Do come with me.

मेरे साथ आ / आ मेरे साथ।

उपर्युक्त सभी उदाहरणों में कोई सहायक क्रिया का प्रयोग `do' के लिए नहीं हुआ है।

2. साधारण / मुख्य क्रिया के रूप में।

121. Did you do anything?

क्या तुमने कुछ किया?

122. What are you doing?

आप क्या कर रहे हैं?

123. Will a candle do?

क्या एक मोमबती से काम चलेगा?

124. A candle won't do.

मोमबत्ती से काम नहीं चलेगा।

मुख्य क्रिया के रूप में `do' का प्रयोग अलग-अलग ढंग से होता है लेकिन उनके अनुवाद में तो कोई विशेषता नहीं है।

## 2.1.4.2.2 वृत्यामक सहायक क्रियाएँ (Modal auxiliaries)

वृत्यात्मक / वृत्तिबोधक सहायक क्रिया का प्रयोग अकेले नहीं होता, एक साधारण / मुख्य क्रिया प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप में उसके साथ होती है। हिन्दी में इसप्रकार मात्र सहायक क्रिया का प्रयोग नहीं हो सकता।

125. Shall I take this book? Yes you may.

क्या मैं यह पुस्तक ले सकता हूँ? हाँ, तुम ले सकते हो।

वृत्यात्मक सहायक क्रियाओ का रूप कभी भी बदलता या उसमे नहीं होता जबकि अन्य सहायक क्रियाओ का सामान्य रूप (infinitive form), भूतकालिक रूप और वर्तमानकालिक कृदन्ती रूप होता है। इनके साथ मुख्य क्रिया का सामान्य रूप (first form - present-infinitive) का ही प्रयोग होता है।

126. You should read this book.

तुम्हें यह पुस्तक पढनी चाहिए।

1. May/ might

`may' का प्रयोग वर्तमानकाल और भविष्यत्काल में होता है। क्रिया व्यापार की संभावना व्यक्त करना हो तो `may/might' का प्रयोग किया जाता है। यहँ साधारणतया `होगा' का प्रयोग होता है।

127. He may/ might have come.

वह आया होगा।

128. She might know his address.

शायद उसे उसका पता मालूम होगा।

129. He may/might be at home.

वह घर में होगा।

जब अनुमति के लिए इसका प्रयोग होता तो `सक' का प्रयोग किया जाता है।

130. May I come in?

क्या मैं अन्दर आ सकता हूँ?

131. You may go now.

आप अभी जा सकते हैं।

132. He may take the car.

वह मोटर गाडी ले सकता है।

सकारात्मक प्रश्नवाचक वाक्यों में `may' का प्रयोग नहीं के बराबर हैं तो नकारत्मक प्रश्नवाचक वाक्यों में यह आती है।

133. What may be the result of the new scheme?

नयी योजना का फल/परिणाम क्या हो सकता है?

134. Do you think he may not come?

क्या आप सोचते कि वह नहीं आएगा?

may/ might कभी-कभी could का स्थानापन्न भी कर सकता हैं।

135. Where is Nagesh? He may/might be in the Library.

नागेश कहाँ है? वह पुस्तकालय में होगा।

लेकिन निषेधवाचक वाक्यों में may/ might के बदले can/could का प्रयोग नहीं हो सकता।

136. Harish might not have seen Rajiv yesterday.

कल हरीश ने राजीव को नहीं देखा होगा। (शायद ऐसा हुआ होगा)

137. Harish could not have seen Rajiv yesterday.

कल हरीश ने राजीव को नहीं देखा होगा। (देखने की संभावना नहीं) हिन्दी में इन दोनों वाक्यों का अनुवाद एक ही है। उन दोनों वाक्यों में जो भेद है उसे हिन्दी में व्यक्त नहीं किया जा सकता।

2. Can/could

Can/could का प्रयोग भी अनुसति के लिए होता है। `could' से ज्यादा आदर व्यक्त होता है।

138. Could/Can I speak to Mr. Reddy?

क्या मैं रेड्डी से बात कर सकता हूँ?

139. Can I take your umbrella?

क्या में आपकी छतरी ले सकता हूँ?

**can/could** का प्रयोग क्षमता सूचित करने के लिए भी होता है, वहीं भी `सक' का प्रयोग होता है।

140. Can you wait for 5 minutes?

क्या आप पाँच मिनट इन्तजार कर सकते हैं?

141. Can you do this work?

क्या तुम यह काम कर सकते हो?

`**could have**' का विशेष प्रयोग देखिए-

जब भूतकालिक क्रिया का न घटित होने या हमें उसके बारे में पता नहीं, तो उसकी अभिव्यक्ति के लिए **could have** का प्रयोग होता है।

142. He could have sent me the message.

वह मुझे सन्देश भेज सकता था।

143. Who could have taken the money?

कौन पैसा ले गया होगा?

### 3. Ought

इसका कौई अलग रूप नहीं है, तीनों कालों में उसी का ही प्रयोग होता है। `कर्तव्य' के अर्थ में इसका प्रयोग होता है। इसके बदले **should** का भी प्रयोग किया जा सकता है।

**144. I ought to write him tomorrow.**

कल मुझे उसको लिखना चाहिए।

### 4. Should

**ought** के समान तीनों कालों में एकरूप रहता है। यहाँ भी हिन्दी में `चाहिए' इसके लिए मिलता है।

**145. You should answer all these questions.**

तुम्हें इन सब प्रश्नों का उत्वर दना चाहिए।

### 5. Must/ have to

जब वक्ता क्रिया व्यापार के लिए तैयार है या उसे आशा है तो **Must, have to** का प्रयोग किया जाता है।

**146. I must/ have to go to the Library.**

मुझे पुस्तकालय में जाना चाहिए।

प्रबल निर्देश के लिए Must का प्रयोग होता है।

147. You must go now.

तुम्हें अभी जाना चाहिए।

148. You have to get up at 5.00 o' clock.

तुम्हें पाँच बजे उठना है।

149. You must get up at 5.00 o' clock.

तुम्हें पाँच बजे उठना चाहिए। (obligation)

150. You must drink more water.

तुम्हें ज्यादा पानी पीना चाहिए।

जब वक्ता को कर्ता पर क्रिया करने की प्रेरणा देने का अधिकार है, तब Must का प्रयोग ही होता है। कर्तव्य की सूचना के वक्त भी Must अधिक समीचीन है।

आदतों के लिए `have to' का प्रयोग ही मिलता है।

151. I have to take bath early in the morning.

मुझे बड़े सबेरे नहाना चाहिए।

`had to' प्रेरणा / बल के अर्थ में प्रयुक्त होता है। हिन्दी में पड़ सहायक क्रिया का प्रयोग इसके लिए होता है।

152. उसे रात को अकेले चलता पडा।

He had to go at night.

`Must + be' और `must + have' निश्चय की सूचना दैती है। अनुवाद में `होगा' का प्रयोग कर सकते हैं, कभी-कभी निपात `ही' भी प्रयुक्त है।

153. It must be Tom.

वह टोम ही होगा।

154. He must have come.

वह आया होगा।

6. Will

भविष्यत् काल की सूचना के लिए इसका साधारण प्रयोग है। किसी कल्पना को प्रश्न के रूप से अभिव्यक्त करने के लिए भी प्रयुक्त किया जा सकता है।

155. She will know him. (I'm sure she knows him.)

वह उसे जानती है।/ वह उसे जानती होगी।

मध्यम और अन्य पुरुष के साथ will सामान्य भविष्यत की सूचना मात्र देता है। उत्तम पुरुष के साथ `will' के प्रयोग से सम्मति, धमकी, प्रतिज्ञा का बोध किया जा सकता है।

7. Shall

उत्तम पुरुष के साथ `shall' के प्रयोग से सामान्य भषिष्यत-सूचित होता है। मध्यम और अन्य पुरुष के साथ प्रयुक्त होने पर आज्ञा, प्रतिज्ञा, घमकी, निश्चय आदि का बोध होता है। इसकेलिए हिन्दी में सामान्य भविष्यत्-कालिक रूप का ही प्रयोग किया जाता है।

156. All shall work for the cause of the poor.

गरीबों के लिए सब मेहनत करेंगे।

## 2.1.4.2.3 अर्धवृत्तिबोधक सहायक क्रियाएँ (Semi modals)

1. to need

इसका प्रयोग मुख्य क्रिया के रूप में भी होता है। सहायक क्रिया के रूप में प्रयुक्त होने पर इसका कोई विकार नहीं होता। इसका प्रयोग सामान्यतया `not' के साथ होता है।

157. She need not think of him any more.

अब से उसके बारे में उसे चिन्तित होना नहीं। प्रश्नवाचक वाक्यों में `need', `not' के बिना प्रयुक्त होता है।

158. Need we stay here any more.

क्या हमारे और भी यहाँ ठहरने की आवश्यकता है?

2. to Dare (to)

उसका भी प्रयोग मुख्य क्रिया और सहायक क्रिया के रूप में होता है। इसके साथ `to' का प्रयोग अब प्राय: नहीं होता।

159. He dare not go.

वह जाने का साहस नहीं करेगा।

160. Nobody dared (to) speak.

किसी ने भी बोलने का साहस नहीं किया।

3. Used to

इसका कोई वर्तमान या भविष्यत-रूप नहीं है। भूतकालिक आदत की सूचना इससे मिलती है। हिन्दी में निरंतरता बोधक सहायक क्रिया `करना' का प्रयोग इसके लिए होता है।

161. She used to go to the temple every morning.

वह हर रोज़ मन्दिर जाया करती थी।

जब विशेषण के रूप में इसका प्रयोग होता तो उसका अर्थ है, `परिचित'।

162. I am used to this weather.

मैं इस जलवायू से परिचित हूँ।

163. He got used to this noise.

वह इस आवाज़ से परिचित है।

सक

`सक' का प्रयोग क्रिया के धातु रूप के साथ अनुमति या क्षमता की सूचना के लिए होता है। इसकेलिए अंग्रेज़ी में `can' और `may' का प्रयोग किया जा सकता है। भूतकाल में प्रयुक्त होता तो कर्ता के साथ परसर्ग नहीं जोडा जाता।

164. मैं यह काम कर सकता हूँ।

I can do this work.

165. तुम जा सकते हो।

You may go.

चुक

`चुक' का प्रयोग भी `सक' के समान होता है। वह क्रिया पूर्ति का सूचक है। यहाँ भी भूतकाल में प्रयुक्त होने पर परसर्ग नहीं जोडा जाता।

166. वह खा चुका।

He has finished eating.

`लग' - का प्रयोग क्रिया के आरंभ की सूचना देने के लिए होता है। क्रिया के सामान्य रूप (करने, जाने) के साथ यह जोडी जाती है। अंग्रेज़ी में इसकेलिए `begin', start आदि आरंभबोधक क्रिया का प्रयोग होता है।

167 बच्चा रोने लगा।

Child began to weep/Child started crying.

दे

`दे' का प्रयोग अनुमति के लिए होता है। इसकेनिए `let', `allow', `permit' आदि अनुमति बोधक क्रियाएँ प्रयुक्त हैं।

168. उसने मुझे जाने दिया।

He allowed me to go.

169. मुझे जाने दो।

Let me go.

पा

`पा' क्रिया धातु और सामान्यरूप के साथ प्रयुक्त होता है। इससे क्रिया करने का प्रयास सूचित किया जाता है। अंग्रेज़ी में `to manage' , be able to, can आदि का प्रयोग किया जा सकता है।

170. वह यहाँ नहीं पहूँचने पाया।

He could not reach here.

भूतकाल में कर्ता के साथ परसर्ग का प्रयोग यहाँ भी नहीं होता। इसका प्रयोग नकारात्मक वाक्यों में साधारणतया मिलता है।

चाह

`चाह' का प्रयोग क्रिया के सामान्य रूप के साथ होता तो वह आज्ञा या आकांक्षा सूचित करती है।

171. मैं नाचना चाहता हूँ।

I want to dance.

जब `चाह' धातु के साथ प्रयुक्त होता तो एक क्रिया-व्यापार की निकट संभावना सूचित होती है। अंग्रेज़ी में `about to' का प्रयोग मुख्य क्रिया के साथ होता है।

172. वह पेड गिरा चाहता है।

That tree is about to fall.

173. घडी में पाँच बजा चाहते हैं।

The clock is about to strike five.

`चाह' का रूप `चाहिए' का विकार नहीं होता। इसका प्रयोग एक स्वतंत्र क्रिया के रूप में होता है। और यह आवश्यकता सूचित करता है यह हमेशा संप्रदान कारक के साथ मिलती है।

174. मुझे थोडा पानी चाहिए।

I want a little water.

जब यह क्रिया के सामान्य रूप के साथ होती है तो सख्त जरूरत सूचित करती है।

175. तुम्हें जाना चाहिए।

You must go.

176. उसको यहाँ आना चाहिए था।

He ought to have come here.

पड़

`पड़' का प्रयोग क्रिया के सामान्य रूप के साथ प्रेरणा (force or compulsion) देने के लिए किया जाता है और वह संप्रदान कारक (Dative case) में होता है। अंग्रेज़ी में इसकेलिए `obliged to', `had to' का प्रयोग किया जा सकता है।

177 उसको ये बातें मुझसे कहनी पड़ी।

He had to tell me these things.

हो

क्रिया के सामान्य रूप के साथ इसका प्रयोग होने पर `have/has' का प्रयोग अंग्रेज़ी में किया जा सकता है। अन्य प्रयोगों में `to be' +`to' के रूपों का प्रयोग किया जा सकता है।

178. उसे आना है।

He has to come.

179. मुझे जाना होगा।

I will have to go.

कर

`कर' सहायक क्रिया के रूप में आदत की सूचना देती है। इसके अनुवाद में क्रियाविशेषण या `used to' अर्धवृत्तिबोधक का प्रयोग किया जाता हैं।

180. यह काम किया करो।

Do this work regularly.

181. वह यहाँ आया करता है।

He used to come here.

रह

इसका प्रयोग वर्तमानकालिक या भूतकालिक कृदन्त के साथ क्रिया की निरन्तरता की सूचना देने के लिए होता है। अंग्रेज़ी में `continue' `go on', `keep on' आदि निरन्तरता बोधक क्रियाओ का प्रयोग किया जा सकता है।

182. वह दौडता रहता है।

He goes on running.

आ -कभी-कभी `आ' का प्रयोग सहायक क्रिया के रूप में वर्तमान कालिक या भूतकालिक कृदन्त के साथ होता है।

183. वह चली आती है।

She is coming along.

जा

`जा' का प्रयोग भी इसप्रकार क्रिया के ज़ारी रहने की सूचना के लिए होता है।

184. दस बजे तक पढते जाओ।

Go on reading till 10.00 o'clock.

`जा' के वर्तमानकालिक कृदन्तीय रूप के साथ `रह' का प्रयोग करने पर अर्थ होगा- अप्रत्यक्ष होना या मरना।

185. उसका सबकुछ जाता रहा।

He lost everything.

186. उसके पिता जाते रहे।

His father died.

## 2.1.4.3 काल

सामान्य रूप से काल तीन होते हैं - भूत, वर्तमान और भविष्य। दोनों भाषाओ में काल की अभिव्यक्ति के लिए सहायक क्रियाओ का प्रयोग किया जाता है।

## 2.1.4.3.1 भूतकाल

जो हो गया वह भूतकाल है। भूतकाल पाँच प्रकार के हैं - सामान्य भूत, तात्कालिक अपूर्ण भूत, पूर्ण भूत, अपूर्ण भूत और आसान्त भूत।

### 2.1.4.3.1.1 सामान्य भूतकाल (simple/ indefinite past)

अंग्रेज़ी में लिंग, वचन, पुरुष और कारक का कोई प्रभाव इसपर नहीं है।

एक निश्चित काल सीमा में घटित क्रिया व्यापार के लिए इसका प्रयोग किया जाता है। क्रिया-व्यापार के समय का उल्लेख भी कभी-कभी मिलता है।

187. He brought me these books yesterday.

वह मेरे लिए ये पुस्तक कल लाया।

188. She met me in the Library.

पुस्तकालय में उससे मेरी मुलाकात हुई।

पूर्वकालिक आदत को सूचित करने के लिए भी इसका प्रयोग मिलता है।

189. I studied 12 hours a day.

मैं हर रोज़ 12 घंटे तक पढता था।

### 2.1.4.3.1.2 तात्कालिक अपूर्ण भूतकाल (Past Continuous Tense)

किसी समय के पूर्व क्रिया व्यापार ज़ारी रहने का बोध इससे होता है।

190. I was singing.

मैं गा रहा था।

इसका भी प्रयोग पूर्वकालिक आदत के लिए होता है।

191. He was always complaining.

वह हमेशा शिकायत करता था।

हिन्दी में इसके लिए `ता था', और- रहा था' रूपों का प्रयोग किया जाता है।

लेकिन इनके अर्थ में थोड़ा अन्तर है- `ता था' से आदत या क्रिया व्यापार की पुनरावृत्ति की आभिव्यक्ति होती है तो रहा था' से क्रिया व्यापार के ज़ारी रहने का भाव ही मिलता है।

## 2.1.4.3.1.3 पूर्ण भूत (Past perfect)

191. We had prepared a plan to help the poor.

हमने गरीबों की मदद करने के लिए एक योजना तैयार की थी।

192. He had taught English for 10 years.

उसने दस साल तक अंग्रेज़ी पढायी।

193. He had served in the Navy for 10 years.

उसने नौसेना में दस साल तक सेवा की।

## 2.1.4.3.1.4 अपूर्ण भूतकाल (Past perfect continuous tense)

कहने के वक्त तक या उसके कुछ पहले तक ज़ारी रहे कार्य व्यापार की सूचना इससे मिलती है।

194. He had been working since dawn.

वह सुबह तक काम कर रहा था।

पुनरावृत्त क्रियाव्यापार को करने के लिए भी इसका प्रयोग होता है।

195. He had been trying to get her on the phone.

वह उसे फोण पर मिलने की कोशिश कर रहा था।

## 2.1.4.3.1.5 आसन्न भूतकाल (Present perfect)

घटित हो गए क्रिया व्यापार के लिए इसका प्रयोग किया जाता है।

196. He has just gone out

वह अभी बाहर गया (है)।

ऐतिहासिक सत्य को व्यक्त करने के लिए भी इसका प्रयोग होता है।

197. Columbus has discovered America.

कोलम्बस ने अमरीका का पता लगाया।

## 2.1.4.3.2 वर्तमानकाल

कहते वक्त घटित होनेवाली क्रिया इससे सूचित होती है।

## 2.1.4.3.2.1 सामान्य वर्तमान काल (Simple present)

इससे सामान्य आदत की अभिव्यक्ति होती है-

198. I drink milk in the evening.

मैं सुबह दूध पीती हूँ।

इसका प्रयोग एक निश्चित भविष्यतकालीन कार्यव्यापार केलिए भी होता है (सामान्यतया यात्रा के बारे में)

199. We leave Bombay next Sunday.

अगले रविवार को हम बंबई से रवाना होते हैं।

200. If I see her I will ask about this.

अगर मैं उससे मिलता तो इसके बारे में पूछता।

## 2.1.4.3.2.2. तात्कालिक वर्तमानकाल (Present Continuous)

बोलते वक्त ही होनेवाला क्रियाव्यापार इससे सूचित होता है।

201. It is raining.

बारिश हो रही है।

202. I am reading a poem by Wordsworth.

मैं वड्सवर्त की कविता पढ रहा हूँ।

203. Suraj is teaching French.

सुराज फेंच पढाता है।

उपर्युक्त वाक्य के अनुवाद में सामान्य वर्तमान काल का प्रयोग किया गया है जिससे व्यक्त कि वह आदत को सूचित करतीं है।

निकट भविष्य में होनेवाली क्रिया व्यापार के लिए भी इसका प्रयोग किया जाता है।

### 2.1.4.3.3 भविष्यत् काल

भविष्यत् काल की आभिव्यक्ति अंग्रेज़ी में कई प्रकार होती है, लेकिन हीन्दी में वास्तव में भूतकाल एक ही प्रकार से व्यक्त होती है।

204. I will go tomorrow.

कल मैं जाऊँगा।/ कल मैं जाता हूँ।

205. We will sing a song.

हम एक गीत गाएँगे।

भविष्यत् कालीन क्रिया का अनुवाद अंग्रेज़ी में भविष्यत् और वर्तमान काल से किया जा

# निष्कर्ष

इस अध्याय में संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण और क्रिया का अध्ययन अनुवाद के सन्दर्भ में किया गया है।

हिन्दी के संज्ञा शब्दों में लिंग, वचन और कारक के अनुसार परिवर्तन होता है। अंग्रेजी के संज्ञा शब्द लिंग और वचन के अनुसार बदलते हैं। हिन्दी में संज्ञा शब्दों के लिंग का, वाक्य संरचना में प्रभाव पडता है। इसलिए अंग्रेजी-हिन्दी अनुवाद में हिन्दी शब्दों का लिंग जानना अनिवार्य है। लेकिन अंग्रेजी शब्दों का लिंग शेष वाग्भागों को अपरिवर्तित छोडने के कारण हिन्दी अंग्रेजी अनुवाद में हिन्दी की जटिल लिंग व्यवस्था समस्याजनक नहीं है।

दोनों भाषाओ में वचन संबन्धी नियम अलग-अलग है। हिन्दी में आदरार्थ बहुवचन का प्रयोग होता है तो अंग्रेजी में इस प्रकार का प्रयोग नहीं मिलता। इसलिए अनुवाद करते वक्त दोनों भाषाओ की वचन-व्यवस्था का सम्यक ज्ञान होना चाहिए।

हिन्दी में कारकीय रचना परसर्गों से होती है तो अंग्रेजी में सम्बन्ध सूचकों से होती है। हिन्दी के `ने' परसर्ग पर अंग्रेजी-हिन्दी अनुवाद में ध्यान देना चाहिए।

पुरुषवाचक सर्वनामों की संख्या अंग्रेजी की अपेक्षा हिन्दी में अधिक है। इसलिए अंग्रेजी से हिन्दी में विभिन्न प्रकार से अनुवाद करने की संभावनाएँ हैं। अंग्रेजी का पुरुषवाचक सर्वनाम `it' का कोई समानार्थी शब्द हिन्दी में नहीं है और उसका विशेष प्रयोग भी अंग्रेजी में मिलता है। हिन्दी के द्विरुक्त सर्वनामों का अनुवाद केवल सर्वनाम से करना मुश्किल ही है।

हिन्दी के विशेषण विकारी शब्द है। अत: अंग्रेजी-हिन्दी अनुवाद में विशेषण के लिंग, वचन और कारक पर विशेष ध्यान देना पडता है। विशेषणों की तुलना होने पर अंग्रेजी-हिन्दी अनुवाद में बहुत संभावनाएँ हैं।

हिन्दी क्रिया की सकर्मकता-अकर्मकता अंग्रेजी-हिन्दी अनुवाद में कठिनाई उत्पन्न करती है। हिन्दी की रंजक क्रियाओ का प्रकार्य अनुवाद में एक समस्या ही है। इससे हिन्दी-अंग्रेजी अनुवाद प्रभावित रहता है। दोनों भाषाओ में सहायक क्रियाएँ वाक्य-संरचना में मुख्य स्थान लेती हैं। इसलिए इनका अनुवाद बडी सावधानी से करना चाहिए। काल की अभिव्यक्ति में भी दोनों भाषाएँ निकट नहीं है। यहाँ भी सन्दर्भानुसार अनुवाद करना चाहिए।

संदर्भ:

1. डॉ० लक्ष्मीनारायण शर्मा, हिन्दी का विवरणात्मक व्याकरण, पृ 196, 1991

2. डॉ. ज.म. दीमशित्स, हिन्दी व्याकरण की रूपरेखा, पृ 41, 1966

3. डॉ. ज.म. दीमशित्स, हिन्दी व्याकरण की रूपरेखा, पृ.76, 1966.

4. Quirk, Greenbaum, A University Grammar of English, P.108, 1989.

5. डॉ. लक्ष्मीनारायण शर्मा, हिन्दी का विवरणात्मक व्याकरण, पृ 249, 1991.

6. Yamuna Kachru, Aspects of Hindi Grammar, p. 76, 1980

"Reduplicated adjectives either have an intensive meaning or a distributive meaning."

7. Thomson & Martinet, Practical English Grammar, P.37, 1991

8. डॉ. लक्ष्मीनारायण शर्मा, हिन्दी का विवरणात्मक व्याकरण, पृ 274, 1991

9. Wren & Martin, High School Grammar and Composition, P.63, 1990.

"Verb comes from the Latin verbum, a word. It is so called because it is the most important word in a sentence."

10. डॉ. कैलाशचन्द अग्रवाल, हिन्दी भाषा की शब्द संरचना, सं. डॉ. भोलानाथ तिवारी, डॉ.किरणबाला, पृ 270, 1985.

11. वही. पृ. 274, 1985

12. कामताप्रसाद गुरु, हिन्दी व्याकरण, पृ 263, 1973

13. A.V Thomson and A.J. Martinet, Practical English Grammar.

"The following six verbs are used as modals in Hindi: sakna, pana, cukna, parna, hona, aur dena" Yamuna Kachru, Aspects of Hindi Grammar, पृ 49, 1980

# अध्याय - 3
# हिन्दी और अंग्रेजी वाग्भाग - II

# अध्याय 3.

# हिन्दी और अंग्रेज़ी वाग्भाग - II

## अविकारी शब्द/अव्यय

भाषा के संप्रेषण प्रकार्य से संबद्ध व्याकरणिक इकाई, अव्यय एक और विभिन्न धारणाओ की अर्थच्छटाओ को नियंत्रित या संवद्धित करती है तो दूसरी ओर भाषा की संरचना से जुडे विभिन्न अवयवों से आपसी सम्बन्धों को स्पष्ट करती है। "वाक्य में शब्द-प्रयोग के आधार पर वे शब्द या शब्दांश अव्यय कहलाते हैं जिनकी मूलावस्था में वाक्य स्तर पर कोई विकार / परिवर्तन नहीं होता अर्थात्, उन्हें रूपान्तर की प्रक्रिया प्रभावित नहीं करती।"[1] हिन्दी में क्रियाविशेषण, सम्बन्धसूचक, समुच्चयबोधक और विस्मयादिबोधक/ मनोभावबोधक अव्यय के अन्तर्गत आनेवाले वाग्भाग हैं। अंग्रेजी में विशेषण में भी विकार नहीं होता।

## 3.1 क्रियाविशेषण

विशेषण और क्रियाविशेषण की भी विशेषता बतानेवाले शब्दों को क्रियाविशेषण कहते हैं। लेकिन संज्ञा को छोडकर सभी वाग्भागों की विशेषता बतानेवाले शब्दों को क्रियाविशेषण के अन्तर्गत रखा जा सकता है। अंग्रेज़ी व्यकरणों में पूरे वाक्य के अर्थ को सीमित करनेवाले शब्दों को भी क्रियाविशेषण कहा गया है।

विशेषण और क्रियाविशेषण में जो पारस्परिक सम्बन्ध है, वह अनुवाद में लागू किया जा सकता है। लक्ष्यभाषा की शौली के अनुसार विशेषण को क्रियाविशेषण में या क्रियाविशेषण को विशेषण में परिवर्तित करके अनुवाद किया जा सकता है। अंग्रेज़ी में क्रियाविशेषण मुख्य रूप से तीन प्रकार के हैं 1. सरल / साधारण क्रियाविशेषण, (Simple Adverbs) 2.

प्रश्नवाचक क्रियाविशेषण (Interrogative Adverbs) 3. सम्बन्धवाचक / संयोजक क्रियाविशेषण (Relative Adverbs)

हिन्दी में क्रियाविशेषणों का वर्गीकरण तीन आधारों पर किया गया है-

1. प्रयोग 2. रूप 3. अर्थ।

प्रयोग के अनुसार क्रियाविशेषण तीन प्रकार के होते हैं 1. साधारण 2. संयोजक 3. अनुबद्ध।

रूप के अनुसार क्रियाविशेषण तीन प्रकार के होते हैं 1. मूल 2. यौगिक 3. स्थानीय।

अर्थ के अनुसार क्रियाविशेषण के चार भेद हैं- 1. स्थानवाचक 2. कालवाचक 3. परिमाणवाचक 4. रीतिवाचक।

लेकिन यहाँ अंग्रेज़ी के वर्गीकरण के अनुसार क्रियाविशेषण का विश्लेषण अनुवाद के अन्दर्भ में किया जाता है।

### 3.1.1 सरल / साधारण क्रियाविशेषण

सरल / साधारण क्रियाविशेषण के सात भेद हैं-

1. कालवाचक (of time) 2. आवृत्तिवाचक (of frequency) 3. स्थानवाचक (of place) 4. रीतिवाचक (of manner) 5. परिमाणवाचक (of quantity) 6. निश्चयवाचक और निषेधवाचक (of affirmation & negation) 7. कारणवाचक (of reason)

### 3.1.1.1 कालवाचक क्रियाविशेषण

1. He went home a few hours ago.

वह कुछ घंटे पहले घर गया।

2. Today is my birthday.

आज मेरा जन्मदिन है।

3. You should go now.

तुम्हें अभी जाना है।

4. I will come soon.

मैं अभी आया/आऊँगा।

5. She is still in the church.

वह अब भी गिरजाघर में है।

6. She hasn't told me it's reason yet.

उसने मुझे अभी तक उसका कारण बताया नहीं।

7. I'll be here only after 2.00 o'clock.

दो बजे के बाद ही मैं यहाँ आऊँगा।

8. Don't take medicine before meals.

भोजन के पहले दवा मत खाओ।

9. She comes here daily.

वह रोज़ यहाँ आती है।

10. We shall now begin to study.

हम अब पढना शुरू करेंगे।

11. I had a letter from him lately.

हाल में (अभी-अभी) मुझे उसकी चिट्ठी मिली।

12. Today he came late.

आज वह देर से आया।

13. I have met him already.

मैं पहले ही उससे मिला था।

उपर्युक्त उदाहरणों में कुछ कालवाचक क्रियाविशेषणों के लिए हिन्दी में यौगिक कालवाचक क्रियाविशेषणों का प्रयोग किया गया है।

### 3.1.1.2 आवृत्तिवाचक क्रियाविशेषण (Adverb of frequency)

14. I have seen him only twice.

मैं ने उसे दो बार ही देखा है।

15. Manju came here again.

मञ्जू फिर यहाँ आया।

16. I seldom go to the cinema.

मैं कभी-कभार सिनेमा देखने जाती हूँ।

17. He always tries to encourage me.

वह हमेशा मुझे प्रोत्साहित करने का प्रयास करता है।

18. She often makes mistakes.

वह अक्सर गलती करती है।

अंग्रेज़ी के आवृत्तिवाचक क्रियाविशेषणों के लिए हिन्दी में सरल या संयुक्त क्रियाविशेषण मिलते हैं।

### 3.1.1.3 स्थानवाचक क्रियाविशेषण (Adverb of place)

19. She followed me everywhere.

वह सबकहीं मेरा अनुगमन करती है।

20. He went away.

वह चला गया।

21. She placed the bag here.

उसने थैली यहाँ रखी।

22. He walked backward and fell down.

वह पीछे की ओर चला और गिर पडा।

23. Come in.

अन्दर आ।

24. She fell down.

वह गिर पडा।

उपर्युक्त उदाहरणों से मालूम होता है कि अंग्रेज़ी के सभी कालवाचक क्रियाविशेषणों के लिए हिन्दी में भी क्रियाविशेषण मिलते हैं। लेकिन `went away', `fell down' जैसे प्रयोगों में प्रयुक्त क्रियाविशेषणों के लिए हिन्दी में संयुक्त क्रिया का प्रयोग काफी है।

### 3.1.1.4 रीतिवाचक क्रियाविशेषण (Adverb of manner)

25. She speaks English fluently.

वह अंग्रेज़ी प्रवाह के साथ बोलती है।

26. Walk carefully.

सावधानी से चलो।

27. They came on foot.

वे पैदल चले आए।

28. Shaji walks slowly.

षाजी धीरे-धीरे चलता है।

29. Shyama plays Sitar verywell.

श्यामा काफी अच्छा सितार बजा लेती है।

30. The beggar went away silently.

भिखारी चुपचाप चला गया।

31. He washes clothes neatly.

वह कपडे साफ धोता है।

32. Arun writes poetry very well.

अरुण कविता बहुत अच्छा लिखता है।

33. I could do it easily.

मैं वह आसानी से कर सका।

34. They are dressed prettily well.

वे सुन्दर ढंग से कपडे पहने हुए थे।

35. He received us coldly.

लापरवाही से उसने हमें स्वीकार किया।

36. They denied the accusation hotly.

उन्होंने क्रोध से आरोप इनकार किया।

37. Julie welcomed us warmly.

जूली ने प्रेमपूर्वक हमारा स्वागत किया।

38. Mini danced beautifully.

मिनी ने सुन्दर ढंग से तृत्य किया।

39. The machine moves to and fro.

मशीन आगे-पीछे चलता है।

40. I studied this book thoroughly.

मैं ने इस पुस्तक का सम्यक अध्ययन किया।

41. Subash fought bravely for a long time.

सुबाष ने बहुत समय तक वीरता के साथ लडाई की।

रीतिवाचक क्रियाविशेषण सभी भाषाओ में काफी मिलते हैं, इनमें से ज्यादातर क्रियाविशेषण यौगिक हैं। अंग्रेज़ी में संज्ञा या विशेषण के साथ -`ly' परसर्ग (suffix) जुड़कर ये बनते हैं तो `से', `पूर्वक' आदि के योग से हिन्दी में रीतिवाचक क्रियाविशेषण बनते हैं। कुछ क्रियाविशेषण पदबंध का अनुवाद हिन्दी में संयुक्त क्रियाविशेषण से किया गया है, उदाहरण के लिए, वाक्य -39. दोनों भाषाओ में वर्तमानकालिक और भूतकालिक कृदन्तों का प्रयोग रीतिवाचक क्रियाविशेषण के रूप में काफी मिलते हैं।

42. Latha was standing holding these things in her hand.

लता हाथ में ये चीज़ें लेकर खडी थी।

43. The boy came running.

लड़का दौडता हुआ आया।

44. Appu is reading a book lying on the table.

अप्पू मेज़ पर लेटे-लेटे किताब पढ रही है।

45. I saw Sunila going for shopping with her brother.

मैं ने सुनिला को अपने भाई के साथ बाजार जाते देखा।

46. I found him sitting alone under the tree.

मैं ने उसको पेड़े के नीचे अकेले बैठे हुए पाया।

47. Having eaten, everyone went out.

खाना खाकर सबलोग बाहर गए।

48. Gopal became happy seeing his sister's actions.

बहन की हरकतें देखकर गोपाल खुश हुआ।

अंग्रेज़ी के कुछ वर्तमानकलिक कृदन्तीय क्रियाविशेषण के लिए हिन्दी में द्विरुक्त वर्तमानकालिक कृदन्तीय क्रियविशेषण का प्रयोग किया जाता है।

### 3.1.1.5 परिमाणवाचक क्रियाविशेषण (Adverbs of quantity/ Degree of measure)

49. You are quite wrong.

तुम बिलकुल खराब हो।

50. I am fully prepared.

मैं पूरी तरह से तैयार हूँ।

51. A sick man should eat less.

बीमार आदमी को कम खाना चाहिए।

52. I am so glad.

मैं बहुत खुश हूँ।

53. There were scarcely twenty people there. (probably fewer)

वहाँ ज्यादा से ज्यादा 20 आदमी थे / वहाँ बीस आदमी तक थे।

54. There were barely twently people there. (only just 20)

वहाँ सिर्फ बीस आदमी थे।

55. This room is not big enough.

यह कमरा काफी बडा नहीं।

अंग्रेज़ी के परिमाणवाचक क्रियाविशेषणों के लिए हिन्दी में भी परिमाणवाचक क्रियाविशेषण मिलते हैं। लेकिन वाक्य -53 और वाक्य -54 के अर्थ में जो थोडा-सा अन्तर है उसे स्पष्ट करने के लिए हिन्दी के क्रियाविशेषण पर्याप्त नहीं हैं।

### 3.1.1.6 निश्चयवाचक और निषेधवाचक क्रियाविशेषण (Adverb of Affirmation and Negation)

56. He certainly went.

वह ज़रूर गया / वह अवश्य गया।

57. I do not know her.

मैं उसे नहीं जानता।

58. Perhaps he may come.

शायद वह आता होगा/शायद वह आयेगा।

59. Surely you are mistaken.

ज़रूर तुम्हें गलती हुई।

निश्चयवाचक और निषेधवाचक क्रियाविशेषणों के अनुवाद में कोई कठिनाई नहीं है। सभी अंग्रेज़ी निश्चयवाचक और निषेधवाचक के लिए समानार्थी क्रियाविशेषण मिलता है।

### 3.1.1.7 कारणवाचक क्रियाविशेषण (Adverb of reason)

60. He therefore came to me.

इसलिए (ही) वह मेरे पास आया।

कृदन्तीय क्रियाविशेषण भी कारणवाचक के रूप में मिलते हैं-

61. Sibi is going crazy sitting unemployed.

बेकार बैठे-बैठे सिबि पागल-सा हो रहा है।

62. चलते-चलते मैं थक गई।

I became tired beause of walking continuously.

यहाँ भी हिन्दी में द्विरुक्त कृदन्तीय क्रियाविशेषण मिलते हैं ।

### 3.1.2 प्रश्नवाचक क्रियाविशेषण (Interrogative Adverb)

63. Where is she ? (स्थानवाचक)

वह कहाँ है ?

64. When did he go? (कालवाचक)

वह कब गया?

65. Why are you not coming ? (कारणवाचक)

तुम क्यों नही आते ?

66. How did you solve that problem? (रीतिवाचक)

उस समस्या का हल कैसे करेंगे।

67. How many people came there? (परिमाणवाचक)

कितने लोग वहाँ आए?

प्रशनवाचक क्रियाविशेषण दोनों भाषाओ में समानार्थी मिलते हैं। इसलिए इनके अनुवाद में कोई ममस्या नहीं है।

## 3.1.3 सम्बन्धवाचक या संयोजक क्रियाविशेषण (Relative adverbs)

ये समुच्चयबोधक अव्यय का प्रकार्य भी करते हैं।

68. I don't know where he lives.

मैं नहीं जानता कि वह कहाँ रहता है।

69. I don't know when he comes.

मैं नहीं जानता कि वह कब आयेगा।

70. We went to the place where there are no trees.

हम वहाँ गये जहाँ पेड़ नहीं हैं।

अंग्रेज़ी वाक्य के अनुकूल अनुवाद करने पर संबन्धवाचक या संयोजक क्रियाविशेषण के लिए समानार्थी क्रियाविशेषण मिलते हैं।

### 3.1.4 एक ही क्रियाविशेषण के भिन्नार्थी रूप

अंग्रेजी में एक ही क्रियाविशेषण के दो रूप भिन्नार्थी भी होते हैं। हिन्दी से अंग्रेज़ी में अनुवाद करते वक्त इसपर अवश्य ध्यान देना है।

71. She arrived late.

वह देर से आ पहूँची।

72. I have not gone there lately.

मैं हाल में वहाँ नहीं गया।

73. He went direct to the school.

वह सीधे स्कूल गया।

74. He left for home directly.

वह तुरन्त ही घर चला।

75. He is studying free.

वह मुफ्त से पढता है।

76. Animals roam freely in the jungle.

जानवर जंगल में स्वतंत्र चक्कर लगाते हैं।

इसप्रकार के क्रियाविशेषण हैं- pretty-fairly, prettily-neatly, near-opposed to distance, nearly-closely, hard-diligently, hardly- scarcely.

लेकिन `loud' और `loudly' दोनों का अर्थ एक ही है। `loud' विशेषण और क्रियाविशेषण है, तो `loudly' केवन क्रियाविशेषण।

77. He spoke loud.

वह ज़ोर से बोला।

78. He spoke loudly.

वह ज़ोर से बोला।

## 3.1.5 वाक्य में क्रियाविशेषण का स्थान

वाक्य में क्रियाविशेषण के स्थान के अनुसार अर्थ बदलता है इसलिए अनुवाद करते वक्त क्रियाविशेषण के स्थान का ठीक पता होनी चाहिए।

रीतिवाचक क्रियाविशेषण साधारणतया उस क्रिया के बाद आता है जिसके अर्थ को वह सीमित करता है। यदि कर्म है तो उसके बाद भी आता है। हिन्दी में क्रिया के पूर्व आता है।

79. He walks carefully.

वह सावधानी से चलता है।

कालवाचक और स्थानवाचक क्रियाविशेषण भी रीतिवाचक क्रियाविशेषण के समान प्रयुक्त होता है।

80. I looked everywhere.

मैं सबकहीं देखा।

81. They are coming today.

वे आज आते हैं।

जब रीतीवाचक और कालवाचक क्रियाविशेषण एक ही वाक्य में आते हैं तो उनका क्रम यही होगा-रीतीवाचक, स्थानवाचक और कालवाचक। हिन्दी में इसका क्रम ठीक उलटा है।

82. She sang very well in the meeting yesterday.

कल (के) सम्मेलन में उसने अच्छी तरह गई।

अंग्रेजी में `always, never, often, rarely, usually. generally,almost,

**already, hardly, nearly, just, quite,** जैसे क्रियाविशेषण, क्रिया एक शब्द होने पर कर्ता और क्रिया के बीच आता है, यदि क्रिया के दो घटक होने पर पहले घटक के बाद आता है। जब क्रिया `be' के रूप होने पर उसके बाद ही क्रियाविशेषण आता है। हिन्दी में क्रियाविशेषण का स्थान विपर्यय इसप्रकार समस्यादायक नहीं है।

83. He has never seen a bear.

उसने कभी भी भालू को नहीं देखा है।

84. She never reads newspaper.

वह कभी भी अखबार नहीं पढती।

जब क्रियाविशेषण किसी विशेषण या क्रियाविशेषण की विशेषता बताता है, तब वह उसके पहले आता है।

85. This book is very interesting.

यह किताब बहुत दिलचस्प है।

अंग्रेज़ी में `only' का प्रयोग उस शब्द के पहले आता है, जिसके अर्थ को वह सीमित करता है। लेकिन कभी -कभी बाद में भी प्रयोग देखा जा सकता है।

86. Only his brother came.

मात्र उसका भाई आया।

87. I slept only for two hours.

मैं सिर्फ दो घंटे सोया।

हिन्दी में भी `only' का समानार्थी शब्द उस शब्द के पहले आता है, जिसके अर्थ को वह सीमित करता है।

### 3.1.6 क्रियाविशेषणों की तुलना

रीतिवाचक, परिमाणवाचक, और कलवाचक क्रियाविशेषण की तुलना की जा सकती है। लेकिन कुछ क्रियाविशेषणों की प्रकृति ही तुलना के विरुद्ध है। कुछ क्रियाविशेषणों की, विशेषणों के समान ही तुलना की जा सकती है।

**88. Lakhsmi ran fast.**

लक्ष्मी तेज़ दौडी।

**89. Geetha ran faster than Lakshmi.**

गीता लक्ष्मी से तेज़ दौडी।

**90. Devi ran fastest of all.**

देवी सबसे तेज़ दौडी।

## 3.2. सम्बन्धसूचक (Preposition)

"जो अव्यय संज्ञा (अथवा संज्ञा के समान उपयोग में आनेवाले शब्द) के बहुधा पीछे आकर उसका सम्बन्ध वाक्य के किसी दूसरे शब्द के साथ मिलाता है उसे सम्बन्धसूचक कहते हैं।" हिन्दी में कारकीय रचना में आनेवाले परसर्ग इसके अन्तर्गत आते हैं। इनके

अलाआ जटिल और संयुक्त संबन्धसूचक भी मिलते हैं। अंग्रेज़ी में इनकेलिए `Prepositions' का प्रयोग किया जाता है। अंग्रेज़ी में सरल सम्बन्ध सूचक(Simple preposition), संयुक्त संबन्धसूचक (Compound preposition) और संबन्धसूचक पदबंध (Phrase preposition) मिलते हैं।

हिन्दी में भूतकाल में प्रयुक्त परसर्ग है -`ने'। वाक्य में मुख्य क्रिया सकर्मक होने पर कर्ता के साथ यह जोडा जाता है। अंग्रेजी में इसके समान कोई भी शब्द उपलब्द नहीं। यह हिन्दी में कर्ताकारक में ही आता है। इसलिए हिन्दी-अंग्रेज़ी अनुवाद में इसका कोईमहत्व नहीं है लेकिन अंग्रेज़ी-हिन्दी अनुवाद में इसपर विशेष ध्यान देना चाहिए।

91. नीना ने दरवाजा खोला।

Neena opened the door

कर्ता के साथ 'ने' आने पर क्रिया कर्म के अनुसार बदलती है, और जब कर्म के साथ परसर्ग होता तो क्रिया पुल्लिंग एकवचन में होती है।

92. माँ ने बच्ची को खिलाया।

(Mother made the child eat) / Mother fed the child.

`को' का प्रयोग कर्ता, कर्म, सम्पदान, अधिकरण कारकों में होता है।

93. अविनाश को वहाँ जाना है।

Avinash has to go there.

94. पौधों को खाद चाहिए।

Plants need manure.

95. पौधों को काटना चाहिए।

Plants should be cut down.

96. नवीन को आम बहुत पसन्द है।

Naveen likes mangoes very much.

97. यह सुनकर उसको दुःख हुआ।

He became sad hearing this.

98. बच्चे को बुखार है।

Child has fever.

99. बच्ची को डर लगा।

Child felt fear.

उपर्युक्त उदाहरणों में कर्ता के साथ `को' का प्रयोग हुआ है। इनके अनुवाद में कोई सम्बन्धसूचक का प्रयोग नहीं मिलता।

100. हरि को वहाँ मत भेजो।

Don't sent Hari there.

101. मैं ने श्याम को अपनी पुस्तक दी।

I gave my book to Shyam.

102. बच्ची को इधर सोने दो।

Let the girl sleep here.

उपर्युक्त उदाहरणों में कर्म के साथ 'को' का प्रयोग किया गया है। वाक्य 102 में द्वितीय कर्म के साथ (संप्रदान कारक में) `को' का प्रयोग हुआ है, इसलिए उसके अनुवाद में सम्बन्धसूचक `to' मिलता है।

103. गीता को पुस्तक दो।

Give the book to Geetha.

104. लड्डू का यह प्लेट बच्चे को दे दो।

Give this plate of Laddoo to the child.

यहाँ संप्रदान कारक में `को' का प्रयोग हुआ है। इसकेलिए `to' का प्रयोग किया गया है।

105. थोडा पीछे को लौटो।

Move a little back.

106. सोमवार को पिताजी आयेंगे।

Father will come on Monday.

यहाँ `अधिकरण' कारक में `के' का प्रयोग किया गया है। यहाँ अंग्रेजी भाषा के अनुकूल सन्दर्भानुसार संबधसूचक का प्रयोग किया गया है। `को' का प्रयोग अन्य सन्दर्भों में भी देखा जा सकता है।

107 जाने को तैयार हो जाओ।

Get ready to go.

108. उसे रात को नींद नहीं आती।

He is not getting sleep during night.

109. उसे मुझसे प्यार है।

He loves me.

110. घर को जाओ।

Go home.

111. घर को चलो।

Let us go home.

`से' का प्रयोग कर्ता, कर्म, करण, सम्पदान, अपादान और अधिकरण कारकों में होता है।

112. उससे यह कामं जल्दी नहीं किया जाता।

He cannot do this work fast.

113. माँ नौकरानी से कपडे धुलवा रही है।

Mother is getting her dress washed by her servant.

114. वह आपसे कुछ कहना चाहना था।

He wanted to tell you something.

115. मेहनत से काम करो।

Work hard.

116. वह जल्दी से चला गया।

He went out in a hurry.

117 वह दर्द से परेशान है।

He is troubled with pain.

118. आग से मत खेलो।

Don't play with fire.

119. वह नमक-मिर्च से ही भात खा लेता है।

He eat rice with salt and chilly.

120. यहाँ से कहीं जाओ मत।

Don't go away from here.

121. गंगा हिमालय से निकलती है।

The Ganges originates from the Himalayas.

122. पेड़ से पत्ते झड रहे हैं।

Leaves are falling from the tree.

123. क्या तुमने नौकर को घर से निकाल दिया?

Did you sent the servant away from your house?

124. चूहा बिल्ली से डरती है।

Rat is afraid of cat.

125. भोपाल से मधुरा कितनी दूर है?

How far is Madhura from Bhopal?

126. इधर से उधर जाओ।

Go from here to there.

127 बच्चों को खेलने से रोको मत।

Don't stop children from playing.

128. वह दिल से साफ आदमी है।

He is clear in mind.

129. कल से मैं नहीं जाऊँगा।

I won't go from tomorrow onwards.

130. ईश्वर से प्रार्थना करो।

Pray to God

उपर्युक्त उदाहरणों के विश्लेषण से मालूम होता है कि `से' के लिए अंग्रेजी में `by, `with' और `from' का ही प्रयोग ज्यादा मिलता है। क्रियाविशेषण, पदबंध या अन्य विशेष प्रयोगों में `से' का प्रयोग होने पर लक्ष्यभाषा की शैली के अनुसार समानार्थी प्रयोग करना चाहिए।

`में' का प्रयोग संप्रदान और अधिकरण कारकों में मिलता है।

131. इस मकान में काफी खर्च हो गया।

A lot of money has been spent for this building.

132. यह काम दस मिनट में पूरा होना है।

This work should be complete within 10 minutes.

133. पाँच वर्ष में यह सब बदल जाएगा।

All these will change within five years.

134. इतने में वह आ गया।

Meanwhile he came.

135. कमरे में बच्चा है।

Child is in the room.

136. जंगल में जानवर नहीं है।

There are no animals in the forest.

137 बीच में वह रुक गया।

In between he stopped.

138. गीत और रेखा में कौन अधिक सुन्दर है?

Who is more beautiful between Geetha and Rekha ?

139. इन सब में ऊँचा मैं हूँ।

Among them I'm the tallest.

140. छह रूपये में दो केले बिकते हैं।

Two bananas are sold for 6 rupees.

141. उसके पैर में छह उँगलियाँ हैं।

He has six fingers in his leg.

142. उन लोगों में अधिकतर विधार्थी हैं।

Most of them are students.

143. वह काम में व्यस्त था।

He was busy with his duties.

144. वह देखने में सुन्दर है।

It looks beautiful.

`में' के लिए `no', inside, within का प्रयोग काफी चलता है। क्रियाविशेषण पदबन्धों में और तुलना करते वक्त `मैं' का प्रयोग मिलता है। इसकेलिए कभी-कभी कोई भी सम्बन्धसूचक का प्रयोग नहीं किया जा सकता।

`पर' का प्रयोग भी सम्पदान और अधिकरण कारक में मिलता है।

145. इस मकान पर बहुत खर्च किया जा चुका है।

A lot has been (already) spent on this building.

146. वह बिस्तर पर लेट गया।

He lay down on the bed.

147 आज टेलिविज़न पर हिन्दी फिल्म है।

Today there is a Hindi film on the TV

148. दीवार पर तस्वीर है।

There is a picture on the wall.

149. मेरा घर उस सड़क पर है।

My house is on that street.

150. वह घर पर है।

He is at home.

151. वह पहाड़ पर चढ़ गया।

He climbed up the hill.

152. आप के जाने पर वह नाराज हुआ।

He became angry at your departure.

153. उसके कहने पर मैं वहाँ गया।

According to his advice I went there.

154. उसपर मेरा दायित्व है।

I'm liable to him.

155. तुम्हें ईश्वर पर विश्वास होना चाहिए।

You have to believe in God.

156. यहाँ पर कोई कार्यक्रम नहीं होगा।

There will not be any programme here.

157 आज का काम कल पर न छोडो।

Don't leave today's work for tomorrow.

`पर' के लिए भी अंग्रेजी में `on' का प्रयोग किया जा सकता है। कभी-कभी अन्य सम्बन्धसूचकों का प्रयोग भी मिलता है।

`का/की/के' का प्रयोग सम्पदान, अपादान तथा सम्बन्ध कारकों में होता है।

158. यहाँ रहने की कोई जगह नहीं है।

Here there is no place for staying.

159. वे कब का इन्तज़ार कर रहे हैं।

They have been waiting for a long time.

160. इस घर की मालिकिन वह है।

She is the mistress of this house.

161. यह मेरी पुस्तक है।

This is my book.

162. रेखा की सहेली मेरी पडोसिन है।

Rekha's friend is my neighbour.

163. सोने का आभूषण मुझे बहुत पसन्द है।

I like gold ornaments.

164. उसने दस रुपये के गेहूँ खरीदा।

He bought wheat for Rs. 10/-

165. दशरथ के तीन रानियाँ थी।

Dasharath had three wives.

166. यह पुस्तक मेरी लिखी हुई है।

This book is written by me.

167 गिरीश का मकान इस महीने पूरा होने का है।

Girish's house is to be complete by this month.

168. ऊपर के कमरे में कौन हैं?

Who is in the room upstairs?

`का/की/के' के लिए अंग्रेजी में `for, of' और परसर्ग-`s' मिलते हैं। इससे अलग होकर प्रयोग भी मिलते हैं।

जटिल और संयुक्त सम्बन्धसूचक हिन्दी में काफी मिलते हैं। इनकेलिए अंग्रेज़ी में सरल, संयुक्त तथा सम्बन्धसूचक पदबन्धों का प्रयोग किया जा सकता है।

169. नौ बजे के बाद आओ।

Come after 9.00 o'clock.

170. चीनी के बिना दूध अच्छा नहीं लगता।

Milk does not taste well without sugar.

171. हमारे घर के पास एक मन्दिर है।

There is a temple near our house.

172. मेरे भाई के पास बहुत से रुपपे हैं।

My brother has got much money.

173. यह कानून के खिलाफ है।

This is against the law.

174. मेरे घर के सामने नारियल का एक पेड़ है।

There is a coconut tree infront of my house.

175. कला के घर के आगे एक बडा बाज़ार है।

There is a big bazar further off Kala's house.

176. राजू के सिवा यह काम और कौन कर सकता है?

Who else can do this work except Raju?

177 मैं तुम्हारे बारे में कुछ नहीं जानती।

I don't know anything about you.

178. वह कलकत्ते की तरफ जानेवाला है।

He is going towards Calcutta.

179. उसकी ओर देखो।

Look towards it.

180. उसकी तरह मैं नहीं गा सकता।

I can't sing like him.

181. तोता पेड़ के नीचे गिर पडा।

Parrot fell down under the tree.

182. उसके अनुसार यह गलत है।

This is wrong according to him.

183. उसके बदले मै ने इसे चुन लिया।

I selected this instead of that.

184. उनमें से एक मैं भी ले लिया।

I also took one of them.

185. चोर छत पर से होकर भागा।

The thief ran through the roof.

अंग्रेज़ी के सम्बन्धसूचकों का प्रयोग बडी सूक्ष्मता से किया जाता है। कभी-कभी सम्बन्धसूचकों की अनुपस्थिति भी विशेष अर्थ देता है।

186. I was surprised at his behaviour.

मैं उसके व्यवहार पर हैरान था।

187. I was surprised by his behaviour.

मैं उसके व्यवहार से हैरान था।

188. At that time, all were asleep.

उस समय सब सोए हुए थे।

189. The bell rang at 8.00 o'clock.

घंटी आठ बजे बजी।

190. We will meet him at Christmas.

हम क्रिसमस को/क्रिसमस के मौके पर मिलेंगे।

191. He came at night.

वह रात को आया।

192. Jim was at the door.

जिम दरवाज़े पर था।

193. His car is at my cottage.

उसकी मोटर गाडी मेरे घर के पास है।

194. He is angry at me.

वह मुझ पर गुस्सा रखता है।

195. He looked at the picture.

उसने तस्वीर की ओर देखा।

196. My uncle lives at Jeevan Kendra in Bangalore.

मेरे मामाजी बैंगलूर पर जीवनकेन्द में रहते हैं।

197. He is interested in sports.

उसे खेलकूद में दिलचस्पी है।

198. Children play in the evening.

बच्चे शाम को खेलते हैं।

199. We pray to God in our difficulties.

हम अपने मुसीबतों में ईश्वर से प्रार्थना करते हैं।

200. We sat in the grass.

हम घास पर बैठ गये।

201. Our class will begin on Tuesday.

मंगलवार को हमारा क्लास शुरू होगा।

202. Children played on the grass.

बच्चे घास पर खेले।

203. The castle stands on a hill above the valley.

महल घाटी के पार पहाडी पर स्थित है।

204. My father is working on the railways.

मेरे पिताजी रेलवे में काम करते हैं।

205. They stayed here for 3 months.

वे यहाँ तीन महीने तक रहे।

206. The hot weather lasted for 2 months.

गर्मी का मौसम दो महीने तक रहा।

207. He died for his country.

वह अपने देश के लिए मर मिटा।

208. A bell hung over the door

दरवाज़े पर घंटी लटकी थी।

209. Raju threw a towel over the cat.

राजू ने बिल्ली पर तौलिया डाला।

210. Laxman climbed over the wall.

लक्ष्मण दीवार पर चढ़ गया।

211. Acharya Dayanand stood between his disciples.

आचार्य दयानन्द अपने शिष्यों के बीच खडे थे।

212. My house is situated between the church and the school.

मेरा घर गिरजाघर और स्कूल के बीच में स्थित है।

213. The church is situated between the temple, mosque and gurudwara.

मन्दिर, मस्जिद और गुरुद्वारा के बीच में गिरजाघर स्थित है।

214. We stayed there all month.

हम महीने भर वहाँ रहे।

215. I met him last Sunday.

पिछले रविवर को मैं ने उसे देखा।

216. He reached Bombay yesterday evening.

वह कल शाम को बंबई पहूँचा।

217. I am leaving Bangalore today.

आज मैं बैंगलूर से रवाना हो रही हूँ।

218. He will be 33 next November.

वह अगले नवंबर में 33 का हो जायेगा।

219. The dog jumped across the grass.

कुत्ता घास के ऊपर से कूदा।

220. The child was inside the room.

बच्चा कमरे के भीतर था।

221. Rekha came out of the room.

रेखा कमरे से बाहर आयी।

222. The dog fell into the well.

कुत्ता कुएँ में गिर पडा।

223. We reached station in time.

हम समय पर स्टेशन पहूँचे।

224. I don't like to travel by night.

मैं रात के समय सफर करना नहीं चाहता।

225. He is dead against the ruling party.

वह शासक दल का एकदम खिलाफ हे।

226. You should learn to live within your means.

तुम्हें अपनी कमाई के मुताबिक जीना चाहिए।

227. She had nothing to say apart from these reasons.

इन कारणों के अलावा उसके पास कुछ कहने के लिए नहीं था।

228. Keep this box away from fire.

पेटी आग से दूर रखो।

229. Thoughts are expressed by means of words.

ख्यालों को शब्दों के द्वारा प्रकट करते हैं।

## 3.3 समुच्चयबोधक अव्यय (Conjunction)

समुच्चयबोधक अव्यय दो या अधिक शब्दों, पदों, पदबन्धों उपवाक्यों या वाक्यों को जोडते या अलग करते हैं और उनके मध्य अर्थपूर्ण सम्बन्ध व्यक्त करते हैं।

समुच्चय होनेवाले शब्दों के स्तर भेद के आधार पर या वाक्यगत प्रकार्य की दृष्टि से समुच्चयबोधक अव्ययों के दो मुख्य भेद हैं।

1. समानाधारी या समानाधिकरण 2. असमानाधारी या व्यधिकरण। इन दोनों प्रकारों के शब्दों में कुछ शब्द विभिन्न सन्दर्भों में दोनों प्रकार का प्रकार्य करने के कारण दोनों भेदों में सम्मिलित हो जाता है। अंग्रेजी में भी समुच्चयबोधक काफी मिलते हैं। लेकिन हिन्दी में इसकी संख्या अंग्रेजी से ज्यादा है। इसलिए अंग्रेजी से हिन्दी में अनुवाद करने की

अनेक संभावनाएँ है।

### 3.3.1 समानाधारी या समानाधिकरण समुच्चयबोधक

वाक्य के समानस्तरीय विभिन्न अंगों को जोडने या अलग करने के लिए इनका प्रयोग किया जाता है।

हिन्दी के समानाधारी योजक अव्यय हैं-और, व, एवं, तथा, न....न आदि। इनके लिए अंग्रेजी में **and, neither....nor,** आदि मिलते है।

हिन्दी में समुच्चयबोधक के बिना रूढ, संयुक्त शब्द काफी मिलते हैं। मुहावरेदार प्रयोगों में विपरीतार्थी शब्द होने पर भी संयोजन के समय `और' नहीं आता। अंग्रेजी में संयोजक के बिना संयुक्त शब्द नहीं मिलते।

230. राम और श्याम कॉलेज में पढते हैं।

Ram and Shyam are studying in College.

231. मीना गा रही है और गीता नाच रही है।

Meena is singing and Geetha is dancing.

दो या अधिक समानस्तरीय शब्दों या उपवाक्यों में विकल्प अर्थात् किसी एक के ग्रहण तथा दूसरे के त्याग का बोध करानेवाले अव्यय समानाधारी वियोजक हैं। हिन्दी के समानाधारी वियोजक अव्यय हैं - या, कि, वा, किंवा, अथवा, चाहे....चाहे, न कि, नहीं तो, चाहे...अथवा, चाहे...या, या .....या। अंग्रेजी में इनकेलिए `**but, still, only, or, neither, either.....or, neither.....nor, else**' आदि का प्रयोग किया जाता है।

232. गीता आयेगी या उसके पिता फोण करेंगे।

Geetha will come or her father will call.

233. मैं ने उसको देखा नहीं, पर उसके बारे में सुना है।

I haven't seen him, but I have heard about him.

समानाधारी परिणामबोधक 'अतः, अत एव, इसलिए, सो' के लिए अंग्रेजी में `so, that' आदि का प्रयोग किया जाता है।

समानाधारी तुलनात्मक अत्यय `न सिर्फ.....बल्कि, न केवल.....बल्कि, (ही) नहीं बल्कि' आदि के लिए `not only.....but also' का प्रयोग अंग्रेजी में किया जा सकता है।

### 3.3.2 असमानाधारी या व्यधिकरण समुच्चयबोधक

ये मुख्य तथा आश्रित उपवाक्यों को जोडते हैं। इसके अन्तर्गत `क्योंकि, अर्थात् चूँकि, ताकि, यद्यपि, कि, हालांकि, इसलिए.....कि' आदि कारणसूचक, `जब.....जब, जब कभी, जब कभी.....तो, जब से .....तब से' जैसे कालसूचक, 'जहाँ, जहाँ...वहाँ, जहाँ भी.....वहाँ, जिधर....उधर' जैसे स्थानसूचक, 'यदि....तो, चाहे....तो भी, यधपि.....फिर भी, जो.....तो, चाहे....परन्तु' जैसे संकेतसूचक आदि आते हैं। इनके लिए `so...that, inorder to, whenever, if...then आदि अंग्रेजी में मिलते हैं।

234. वह दिल्ली नहीं जा सका क्योंकि उसकी माँ बीमार थी।

He could not go to Delhi because his mother was ill.

235. जल्दी जाओ जिससे कि ठीक समय पर पहूँच सकोगे।

You go fast inorder to reach in time.

236. तुम जहाँ जाओ वहीं मैं भी आऊँगा।

I will follow you wherever you go.

237 वह ऐसे बोलती है जैसे कोयल बोल रही है।

He speaks as though she is a cuckoo

## 3.4 विस्मयादिबोधक / मनोभावबोधक अव्यय (Interjection)

"वक्ता के लहजे (उच्चारण-सुर) के साथ विस्मय, हर्ष, शोक, ग्लानि, लज्जा, स्वीकृति, तिरस्कार, सम्बोधन, अनुमोदन, व्यंग्य आदि मनोभावों की सूचना देनेवाले शब्द (कभी-कभी शब्द-वाक्य भी) मनोभावबोधक कहलाते हैं।"[3] इन्हें,द्योतक, आवेगी या विस्मयादिबोधक कहलाते हैं। वाक्य की व्याकरणिक संरचना में इनका कोई स्थान नहीं है। ये सहायक शब्द-भेदों की भाँति कोई व्याकरणिक सम्बन्ध भी नहीं व्यक्त करते क्योंकि ये वाक्यगत बन्धनों से मुक्त हैं।

कई मनोभावबोधक बहु-अर्थी हैं तथा विभिन्न उद्‌गार व्यक्त करने के लिए प्रयुक्त होते हैं। ऐ!ए!, अहो,! ओह,! अजी,! ओ,! आह,! हाँ-हाँ! आदि हिन्दी में विस्मयादिबोधक अव्यय हैं। अंग्रेज़ी में what!, Ha! Oh! आदि विस्मयादिबोधक अव्ययों का प्रयोग होता है।

ये उस भाव का अर्थ ग्रहण करता है जिस भाव के लिए उसका प्रयोग होता है। इसलिए इनकेलिए समानार्थी शब्द मिलना कठिन है। अनुवाद करते वक्त श्रोतभाषा में विवक्षित भाव को व्यक्त करने के लिए उसी शब्द या लक्ष्यभाषा में प्रचलित शब्द का ही प्रयोग अपेक्षित है। अत: अनुवाद में इनका महत्व नहीं के बराबर है।

## 3.5 उपपद (Articles)

अंग्रेज़ी भाषा में उपपद (articles) का महत्वपूर्ण स्थान है। ये सार्वनामिक विशेषण हैं और अंग्रेज़ी, जर्मन, फेंच जैसी कुछ यूरोपीय भाषाओ में मिलते है। इनका प्रयोग कुछ विशेष अर्थों की प्रतीति कराने हेतु किया जाता है। हिन्दी में इनके समानार्थी शब्द नहीं है। फिर भी इनके अर्थ या भाव को अनुवाद में लाया जा सकता है। `उपपद' दो हैं- `a/an' (Indefinite) और `the' (Definite) `इन्डेफिनिट आर्टिकिल' `a', अनुवाद में प्राय: छोडा जाता है तो `डेफिनिट आर्टिकिल', `the' का अनुवाद सन्दर्भानुसार निश्चयवाचक `वह' और सम्बन्धवाचक `जो....वह' से किया जा सकता है।

### 3.5.1 `डेफिनिट आर्टिकिल' -`the'

`डेफिनिट आर्टिकिल -`the' का प्रयोग निश्चयवाचक विशेषण के समान होता है तो `वह.....जो' या `जो.....वह' से इसका अनुवाद किया जा सकता है।

238. I read the book you gave me yesterday.

मैं ने वह पुस्तक पढी, जो तुमने कल मुझे दी।

239. The man who came here is my brother.

जो आदमी यहाँ आया, वह मेरा भाई है।

उपर्युक्त दोनों उदाहरणो में दुरवर्ती निश्चयवाचक विशेषण के रूप में `the' आता है।

असाधारण को व्यक्त करने के लिए `the' का प्रयोग हमेशा व्यक्तिवाचक संज्ञा के साथ होता है, जैसे - the Earth, the East, the Equator आदि। लेकिन इसके बिना भी प्रयोग

देखा जा सकता है।

240. Earth, like other planets, revolves around the sun.

ृपृथ्वी, अन्य ग्रहों के समान सूरज की प्रदक्षिणा करती है।

व्यक्तिवाचक संज्ञा से जातिवाचक संज्ञा बनाने के लिए अंग्रेज़ी में `the' का प्रयोग किया जाता है, इससे उसकी समान्य विशेषता का बोध होता है। इसके अनुवाद में `the' का कोई स्थान नहीं है।

241. Tulsidas is the Shakespeare of Hindi Literature.

तुलसीदास हिन्दी साहित्य के षेक्सपियर है।

श्रोता और वक्ता/पाठक, दोनों को परिचित किसी बात या वस्तु के बारे में कहते वक्त `the' का प्रयोग होता है, वहाँ भी उसके अमुवाद में इसका कोई निशान नहीं मिलता।

क्रमवाचक संख्यावाचक विशेषण और (विशेषणों की तुलना में) उत्तमावस्था में प्रयुक्त `the' से कुछ ज़ोर मिलता है।

242. Geetha is the second daughter.

गीता दूसरी बेटी है।

243. Lotus is the most beautiful flower.

सबसे सुन्दर फूल कमल है।

`rich', poor' जैसे विशेषणों के साथ `the' का प्रयोग करने पर सामान्य बात की

अभिव्यक्ति हो जाती है, इनके अनुवाद में भी इनका कोई समानार्थी शब्द नहीं है।

244. The rich should help the poor.

अमीरों को गरीबों की मदद करनी चाहिए।

इसका प्रयोग करने या न करने के कारण जो अर्थ परिवर्तन होता है, उसको हिन्दी में लाना असंभव है।

245. I went to the Hospital.

मैं अस्पताल गया।

246. I went to Hospital.

मैं अस्पताल गया।

इन दोनों में अर्थ भेद है, `the' जोडने से क्रिया व्यापार का प्राथमिक प्रकार्य समाप्त हो जाता है।

## 3.5.2 `इनडेफिनिट आर्टिकिल' -`a/an

एक संज्ञा का परिचय पहली बार कराने के लिए अंग्रेजी में `a/an' का प्रयोग किया जाता है। इसकेलिए कभी-कभी किसी भी शब्द का प्रयोग नहीं किया जाता तो कभी-कभी जोर देने के लिए संख्यावाचक `एक' का प्रयोग किया जाता है।

247. I bought a new book.

मैं एक नई पुस्तक खरीद ली।

248. This is a new book.

यह नई पुस्तक है।

`कोई' के अर्थ में भी `a/an' का प्रयोग मिलता है। इसके अनुवाद में किसी भी शब्द जोडने की जरूरत नहीं है।

249. A snake bit Dinesh.

साँप ने दिनेश को काटा।

संख्यावाचक शब्द `एक' के अर्थ में `a/an' का प्रयोग साधारण है। वहाँ `एक' का प्रयोग ही किया जा सकता है।

250. वहँ एक हज़ार आदमी थे।

There were thousand people there.

`प्रत्येक/प्रति' के अर्थ में `a/an' का प्रयोग मिलता है। इसका अनुवाद सन्दर्भानुसार किया जाना चाहिए।

251. Leela comes here thrice a day.

लीला प्रतिदिन तीन बार यहाँ आती है।

किसी वर्ग की विशेषता व्यक्त करते वक्त `a/an' का प्रयोग किया जाता है। यहाँ `a/an' छोडा जाता है।

252. A deer is a beautiful animal.

हिरण (एक) सुन्दर जानवर है।

`Articles' हिन्दी में न होने पर भी इसके अनुवाद में अपेक्षाकृत कठिनाई कम ही है। उसके प्रयोग से जो विशेष अर्थ व्यंजित होता है उसे समझना ही परम आवश्यक है।

निष्कर्ष

दोनों भाषाओ में कुछ विशेषण और क्रियाविशेषण एक ही है। अंग्रेजी के कुछ क्रियाविशेषण दो रूपों में मिलते हैं। उनमें अर्थभेद पाया जाता है। इसलिए हिन्दी-अंग्रेजी अनुवाद में इसपर ध्यान देना चाहिए। हिन्दी मं द्विरुक्त कृदन्ती क्रियाविशेषण मिलते हैं। अंग्रेज़ी में इसप्रकार कृदन्ती क्रियाविशेषणों की द्विरूक्ति नहीं होती। इनका अनुवाद सन्दर्भानुसार किया जा सकता है। विशेषणों से व्युत्पन्न या संज्ञा से व्युत्पन्न क्रियाविशेषण मिलते है। अंग्रेजी मे इसप्रकार कृदन्ती क्रियाविशेषणों का अनुवाद विशेषण से किया जा सकता है। विशेषण से व्युत्पन्न कुछ क्रियाविशेषण अंग्रेजी में अलग अर्थ देते हैं। उनके अनुवाद में सतर्क रहना चाहिए।

अंग्रेजी में सम्बन्धसूचकों से कारकीय रचना होती है। इनका प्रयोग सन्दर्भाश्रित होता है। ये सूक्ष्म अर्थ भी देते हैं। इसलिए इनका अर्थ ठीक तरह से समझकर ही अनुवाद करना चाहिए। हिन्दी में कारकीय रचना परसर्गों से होती है। इनके भी विशेष प्रयोग मिलते हैं। कुछ क्रियाओ के साथ सभी परसर्ग नहीं जोडा जाता।

हिन्दी में समुच्चयबोधक अव्यय काफी प्रयुक्त है। अंग्रेजी में उनका उतना प्रयोग नहीं होता। फिर भी अनुवाद में कोई कठिनाई नहीं होती।

मनोभावबोधक अव्ययो का, व्याकरणिक संरचना में कोई स्थान नहीं है। जिस भाव के लिए उनका प्रयोग होता है उसे समझकर लक्ष्यभाषा की शैली के अनुसार प्रस्तुत करना

आवश्यक है। कभी-कभी ये निरर्थक शब्द होते है, ये सन्दर्भाश्रित होने के कारण ही शब्द का प्रयोग कई सन्दर्भों में पाया जाता है। तब सन्दर्भानुसार अनुवाद करना संगत है।

अंग्रेजी की एक व्याकरणिक विशेषता है, उपपदों का प्रयोग। हिन्दी में इनके लिए समानार्थी शब्द नहीं मिलते। अनिश्चित उपपद का प्रयोग जब संख्यावाचक के रूप में प्रयुक्त होता है तब संख्यावाचक विशेषण `एक' का प्रयोग किया जाता है। उपपदों का प्रयोग न होने से भी विशेष अर्थबोध होता है। अंग्रेजी में मिश्र वाक्य संरचना में निश्चित उपपद का प्रयोग हो तो उनके लिए हिन्दी में संयुक्त समुच्चयबोधक अव्ययों का प्रयोग किया जाता है।

सन्दर्भ

1.डॉ. लक्षमीनारायण शर्मा, हिन्दी का विवरणात्मक व्याकरण, पृ 327

2. कामता प्रसाद गुरू, हिन्दी व्याकरण, पृ 133, 1977

3. डॉ. सक्ष्मीनारायण शर्मा, हिन्दी का विवरणात्मक व्याकरण, पृ 345, 1991.

# अध्याय - 4
# हिन्दी और अंग्रेजी की वाक्य - संरचना

# अध्याय - 4

## हिन्दी और अंग्रेज़ी की वाक्य-संरचना

संप्रेषण-व्यापार तथा भाव - ग्रहण को सम्पन्न करने में सफल व्याकरणिक इकाई वाक्य, एक विशेष क्रम में विन्यसित सार्थक शब्दों का समूह है। यह अभिव्यक्ति का सबसे महत्वपूर्ण उपादान है। रूप के आधार पर देखें तो "व्याकरणिक दृष्टि से पूर्ण और स्वतंत्र तथा मौन या पूर्णविरामी विवृत्ति एवं विशिष्ट अनुतान की अंतस्थ विवृत्ति के बीच स्थित एकक्रियाकेन्दित विस्तार से युक्तायुक्त उक्ति वाक्य है।"[1]

संरचनात्मक दृष्टि से पूर्ण व स्वतंत्र होते हुए भी वाक्य, आर्थी दृष्टि से अपने सन्दर्भ से जुडा रहता है। इसलिए ही आज अनुवाद में 'प्रोक्ति' (discourse) की संकल्पना को अधिक महत्व दिया जाता है। लेकिन अनुवाद के सन्दर्भ में व्याकरण का विश्लेषण करते वक्त वाक्य-प्रकारों तथा उसके विभिन्न घटकों का अध्ययन अपेक्षित होने के कारण यहाँ वाक्य-स्तर पर अनुवाद की चर्चा की जाती है।

### 4.1. वाक्य-संरचना और शब्द-क्रम

वाक्य में शब्दों का क्रम प्रत्येक भाषा में अलग-अलग होते हैं। हिन्दी में शब्दों का क्रम इस प्रकार होता है-कर्ता, कर्म, क्रिया (sov) तो अंग्रेज़ी में कर्ता, क्रिया, कर्म (svo)। वाक्य में अर्थ की दृष्टि से इस क्रम का महत्वपूर्ण स्थान है। अनुवाद में इसका महत्व और भी बढ़ जाता है क्योंकि क्रम-परिवर्तन से अभिव्यक्ति में अस्पष्टता आने पर अनुवाद अर्थ का अनर्थ हो जाएगा।

1.आगे मन्दिर है।

Next is a temple.

2.मन्दिर आगे है।

Next is the temple.

यहाँ शब्द-क्रम बदलने से अनिश्चित, निश्चित हो गया है। अंग्रेज़ी में उपपदों (articles) के प्रयोग से यह स्पष्ट किया गया है।

3. He also drank milk.

उसने भी दूध पिया।

4. He drank milk also.

उसने दूध भी पिया।

वाक्य -3 में कर्ता के साथ `also' का प्रयोग किया गया है और उसके अनुवाद में भी। वाक्य-4 में कर्म के साथ `also' का प्रयोग है तो अनुवाद में भी। यहाँ अंग्रेज़ी में जिस प्रकार शब्द - क्रम बदलने से अर्थ परिवर्तन हुआ है उसे हिन्दी में उसी प्रकार क्रम-परिवर्तन से ला सका।

बल देने के लिए कर्ता के बाद में आनेवाले कर्म को पहले लाया जा सकता है, लेकिन यहाँ अर्थ-भेद नहीं होता।

5. नौकर ने साँप को मारा।

**Servant killed the snake.**

6. साँप को नौकर ने मारा।

**Servant killed the snake.**

हिन्दी में क्रम बदलने से जो बल मिला है अंग्रेज़ी में क्रम बदलने से नहीं मिलता, उसकेलिए यहाँ `**snake**' शब्द पर बलाघात दिया जा सकता है।

## 4.2 वाक्य भेद

प्रकार्य के आधार पर वाक्यों के 4 मुख्य भेद हैं कथनात्मक, आज्ञार्थक, मनोभावात्मक और संकेतवाचक।

### 4.2.1 कथनात्मक वाक्य

कथनात्मक वाक्य के तीन भेद हैं -विधानात्मक, निषेधवाचक और प्रश्नवाचक।

#### 4.2.1.1 विधानार्थक वाक्य

इससे क्रिया द्वारा कार्य के होने की सूचना मिलती है।

7. लड़की अपना पाठ पढ़ती है।

Girl is learning her lesson.

8. मेरे मामाजी डॉक्टर हैं।

My uncle is a doctor.

विधानार्थक वाक्य सरल, संयुक्त या मिश्र वाक्य हो सकता है।

9. जब हमारे पिताजी आए, तब हम उनके साथ सिनेमा देखने गेए।

When our father came, we went to see a movie along with him.

हिन्दी के मिश्र वाक्यों का अनुवाद मिश्रवाक्य में और संयुक्त वाक्य का अनुवाद संयुक्त वाक्य में किया गया है।

### 4.2.1.2. निषेधवाचक वाक्य

सकारात्मक वाक्य को ही रूपान्तरणों द्वारा निषेधवाचक वाक्य बना लिया जाता है। मूलभूत वाक्य से निषेधवाचक वाक्य बनाने की प्रक्रिया में तीन प्रकार के रूपान्तरण होते हैं 1. आगम, 2. लोप और 3. रूप-परिवर्तन। इनके अलावा अनुतान से भी निषेध व्यक्त किया जा सकता है।

1. आगम

निषेधवाचक वाक्य बनाने की प्रक्रिया में निषेधबोधक शब्द, रहिततबोधक शब्द, प्रश्नबोधक शब्द या अन्य शब्दों का आगम होता है।

हिन्दी में निषेधवाचक वाक्य बनाने के लिए तीन निषेधबोधक शब्दों का प्रयोग किया जाता है, 1. `नहीं' 2. `न' और 3. 'मत'। अंग्रेज़ी में दो निषेधवाचक शब्द मिलते हैं, -1. `no' और 2. `not'.

1. `नहीं' इसका प्रयोग `मत' की अपेक्षा ज्यादा मिलता है। वाक्य में इसका स्थान क्रिया के पूर्व है। अंग्रेज़ी में भी मुख्य क्रिया के पूर्व इसका प्रयोग किया जाता है।

11. सीमा घर से नहीं आया।

Seema didn't come from home.

बलात्मक प्रयोग में कभी-कभी क्रिया के बाद भी `नहीं' का प्रयोग मिलता है। लेकिन अंग्रेज़ी में ऐसा प्रयोग संभव नहीं है।

12. सीमा घर से आया नहीं।

Seema didn't come from home/ Seema did not come from home.

अंग्रेज़ी में योजी (copula) क्रियायुक्त वाक्यों में क्रिया के बाद ही `not' का प्रयोग किया जाता है।

13. I am not a teacher.

मैं अध्यापक नहीं हूँ।

अंग्रेजी में कोशीय/शाब्दिक् क्रिया (lexical verb) का निषेध करने के लिए सहायक क्रिया से रहित वाक्यों में वर्तमान काल में `do/ does' के साथ `not/n't' जोडा जाता है। सहायक क्रिया से युक्त वाक्यों में सहायक क्रिया के साथ `not/ n't' का प्रयोग किया जाता है।

14. He came today.

आज वह आया।

निषेध वाचक बनाने के लिए `do' के भूतकालिक या वर्तमान कालिक रूप के साथ `not, n't का प्रयोग किया जाता है और मुख्य क्रिया के सामान्य रूप का प्रयोग भी किया जाता है।

15. He didn't come today.

आज वह नहीं आया।

16. I have gone there.

मैं वहाँ गया हूँ।

17. I haven't gone there.

मैं वहाँ नहीं गया हूँ।

लेकिन जब `have' के रूप मुख्य क्रिया के रूप में आते हैं तब भी `do' के रूपों के साथ `not/n't' का प्रयोग होता है।

18. I have five brothers.

मेरे पाँच भाई हैं।

19. I don't have five brothers.

मेरे पाँच भाई नहीं हैं।

2. `न' - सीमित स्थलों पर ही `न' का प्रयोग किया जाता है। लेकिन उसमें अर्थ-वैविध्य की पर्याप्त क्षमता है। इसका प्रयोग प्रार्थना और कार्य के निश्चय के अर्थ में होता है। यहाँ भी अंग्रेज़ी में `not' का प्रयोग किया जाता है।

20. आप अब न जाइए।

Please don't go now.

21. मैं वह घटना भूल न सका।

I couldn't forget that event.

आग्रहात्मक प्रश्नवाचक या हाँ /न वैकल्पिक प्रश्नवाचक वाक्यों में भी इसका प्रयोग देखा जा सकता है।

22. आप आएँगे न?

Won't you come?

जब दो या दो से अधिक नकारात्मक उपवाक्यों को संयुक्त करना होता है तब भी `न' की सहायता ली जाती है। अंग्रेज़ी में इसकेलिए `neither....nor' का प्रयोग किया जा सकता है।

23. मीरा न घर जाएगी न खाना खाएगी।

Meera will neither go home nor will take food.

वाक्य में जिस घटक का निषेध करना होता है उसके ठीक पूर्व ही सामान्य रूप से `न' को रखा जाता है। `neither....not' का प्रयोग भी वैसे ही होता है।

24. न मीरा न सीता घर जाएगी।

Neither Meera nor Sita will go home.

वाक्य -23 में क्रिया का निषेध है तो वाक्य -24 में कर्ता का।

3. `मत' - निषेधात्मक आदेश के अर्थ में `मत' का प्रयोग किया जाता है।

25. तुम वहाँ मत जाओ।

Don't go there.

स्थान-परिवर्तन से `मत' का भी अर्थ परिवर्तन हो जाता है।

निषेधवाचक वाक्य बनाने के लिए हिन्दी में प्रयुक्त प्रश्नवाचक शब्द हैं - कब, क्या, क्यों, कौन, कहाँ, केसे। इनसे बनाये जानेवाले निषेघवाचक प्रश्न `न' उत्तरलक्षी प्रश्नवाचक वाक्य हैं।

26. तुम्हारा परिवार क्या मुझसे / मेरे परिवार से छोटा है?

Is your family smaller than that of mine?

27. क्या मैं तुम्हें भूल सकता हूँ?

Can I forget you?

जिसका निषेध करना अभीष्ट है, उसपर बल देकर ही इसप्रकार का निषेधवाचक प्रश्न किया जाता है।

निषेधवाचक वाक्य बनाने के लिए `बिना, मुक्त, रहित, विहीन, शून्य, हीन, रिक्त, लोप आदि रहिततताबोधक शब्दों का प्रयोग किया जाता है। अंग्रेज़ी में इनकेलिए `without' का प्रयोग या परसर्ग -`less' का प्रयोग मिलता है।

28. तुम अध्यायक की मदद के बिना यह सीख नहीं सकता।

You can't learn this without the help of a teacher.

29. रमेश स्वार्थ रहित भाव से दूसरों की मदद किया करता है।

Ramesh is helping others without any selfish motive.

30. वह बिना संतान के मर गया।

He died issueless.

"हिन्दी में `तो' के बाद यदि चुक + आ + ई + ए का प्रयोग किया जाए तो वाक्य निषेधात्मक हो जाता है।"[2] और इस `चुका' का प्रयोग अनुतानिक होता है।

31. मैं तो खा चुका खाना।

I didn't have lunch.

".....यदि संज्ञा या सर्वनाम के साथ `ने' परसर्ग का प्रयोग किया जाता है तो `चुका' का लोप हो जाता है और उसके स्थान पर `लिया' या `दिया' का प्रयोग किया जाता है।"[3]

32. मैं ने तो खाना खा लिया।

I didn't have lunch.

इसी प्रकार निषेध के अर्थ में 'रहे' का प्रयोग भी मिलता है।

33. वह तो मेरे साथ चलने से रहे। (वह मेरे साथ नहीं चलेगा।)

He won't come with me.

अंग्रेज़ी में 'no' विशेषण के स्थान पर आता है। परिमाणवाचक और संख्यावाचक विशेषण के अन्तर्गत इसको रखा गया है।

34. He has no friends.

उसे कोई दोस्त नहीं है।

35. There are no books in that shop.

उस दूकान में कोई पुस्तक नहीं है।

विशेषण के रूप में 'no' का प्रयोग होने पर उसके अनुवाद में 'कोई/कुछ' विशेषण के स्थान पर आता है और विशेषण के बाद नहीं का प्रयोग भी होता है।

2.लोप

सकारात्मक वाक्यों से नकारात्मक वाक्य बनाने के लिए कभी-कभी कुछ सहायक क्रियाओ, संयुक्त क्रियाओ या संज्ञापदबंध का लोप हो जाता है।

"नही' के प्रयोग से सहायक क्रिया सर्वाधिक प्रभावित होती है। जाना, देना, पडना, पाना, बनना, रहना, रुकना, होना सहायक क्रियाओ का प्रयोग 'नहीं' के साथ संभव है लेकिन 'डालना' और 'चुकना' का प्रयोग 'नहीं' के साथ नहीं होता।"[4] अंग्रेज़ी में कभी भी सहायक क्रिया का लोप नहीं होता।

36.मैं ने साँप को मार डाला।

I killed the snake.

37.मैं ने साँप को नहीं मारा।

I didn't kill the snake.

'नहीं' का प्रयोग होने पर कालबोधक 'है' कुछ स्थितियों में लुप्त हो जाता है।

38.वह पुस्तक पढता है।

He is reading a book.

39.वह पुस्तक नहीं पढता।

He is not reading a book.

लेकिन अवस्थाबोधक 'आ' (भूतकालिक रूप) और 'रहा' के बाद 'है' लुप्त नहीं होता।

40.वह पुस्तक पढ रहा है।

He is reading a book.

41.वह पुस्तक नहीं पढ रहा है।

He is not reading a book.

42.उसने दवा खाया है।

He has taken the medicine.

43.उसने दवा नहीं खाया है।

He hasn't taken the medicine.

'नहीं' के साथ आने पर सत्तार्थक 'है' का लोप नहीं होता।

44.वह स्वस्थ नहीं है।

He is not well.

3.रुप-परिवर्तन

'`हर', 'सब','सारा' जैसे विशेषणों के निषेधात्मक रूप बनाने के लिए 'कोई' या 'कुछ' (अनिश्चयवाचक सर्वनाम) का प्रयोग किया जाता है। इनके प्रयोग करने पर क्रिया पुल्लिंग एकवचन में आती है।

45.सब लोग गए।

Everybody / All went.

46.कोई नहीं गया।

No one / Nobody went.

47.हर बच्चा खेल-कूद में भाग लिया।

Every child participated in sports.

48.कोई (भी) बच्चा खेल-कूद में भाग नहीं लिया।

Any of the children did not participate in sports.

49. उसने काम किया।

He worked.

50. उसने कोई काम नहीं किया।

He didn't do any work.

उपर्युक्त उदाहरणों से पता चलता है कि अंग्रेज़ी में `कोई....नहीं' या `कुछ....नहीं' के लिए सहायक क्रिया do/ does / did not / n't...any का प्रयोग किया जा सकता है। लेकिन अंग्रेज़ी में कई प्रकार से इसका अनुवाद किया जा सकता है।

निषेध के अर्थ में `बिना' का प्रयोग करने पर भी क्रिया के रूप में परिवर्तन आता है।

51. बिना दवा खाए उसकी बीमारी कैसे दूर हो जाएगी।

Without taking medicine how will he recover from illness.

यहाँ अंग्रेज़ी में भी रूप परिवर्तन हो जाता है, क्रियार्थक संज्ञा `taking' का प्रयोग किया गया है।

संरचना के आधार पर दोनों भाषाओ में निषेधवाचक वाक्य तीन प्रकार के मिलते हैं साधारण, मिश्र और संयुक्त। आज्ञार्थक / प्रार्थनार्थक वाक्यों में मध्यम पुरुष के साथ `न', 'नहीं' और `मत' का प्रयोग ध्यान देने योग्य है।

52. तू मत जा।

Don't go.

53. तुम मत चलो।

(You) don't go.

54. आप न जाइए।

Will you please don't go.

लेकिन विशेष बल न देना हो तो `तू' और `तुम' के साथ `न' तथा विशेष बल देने के लिए `आप' के साथ `मत' का प्रयोग भी मिलता है। हिन्दी-अंग्रेज़ी अनुवाद में इसका कोई प्रभाव नहीं पड़ता तो अंग्रेज़ी-हिन्दी अनुवाद में इसप्रकार निषेधवाचक शब्दों से भी बल दिया जा सकता है।

निषेधाज्ञा में `नहीं' का प्रयोग `न' और `मत' के समान क्रिया के पहले प्राय: नहीं होता, लेकिन `नहीं' का प्रयोग वाक्यांत में किया जा सकता है।

55. तू दौड़ नहीं।

Don't run.

`मत' का भी प्रयोग वाक्यांत में हो सकता है।

56. वहाँ जाओ मत।

Don't go there.

हाँ-`न' प्रश्नवाचक वाक्यों के अन्त में `न' का प्रयोग मिलता है।

57. आप उसके साथ जाइए, जाएँगे न?

Will you please go with him, won't you?

`नहीं' का निषेध `न' की तुलना में अधिक सशक्त तथा `मत' की तुलना में कम सशक्त होता है।

58. तुम न जाओ।

You don't go.

59. तुम नहीं जाओ।

Don't go.

60. तुम मत जाओ।

You don't go.

उपर्युक्त विश्लेषण से पता चलता है कि नकारात्मकता की अभिव्यक्ति अंग्रेज़ी से भी ज्यादा हिन्दी में संभव है। इसलिए अंग्रेजी-हिन्दी अनुवाद में निषेधवाचक/ नकारात्मक वाक्यों का अध्ययन बहुत ही आवश्यक है।

### 4.2.1.3 प्रश्नवाचक वाक्य

"किसी भी भाषा के प्रश्नवाचक वाक्य वे हैं, जो कभी तो प्रश्न का बोध कराते हैं, कुछ पूछने के लिए प्रयुक्त होते हैं तथा श्रोता से भाषावैज्ञानिक प्रतिक्रिया की अपेक्षा रखते हैं, और कभी संदर्भ विशेष में संरचना से भिन्न, वक्ता के अभिप्रेत अर्थ को व्यक्त करते हैं।"[5] हिन्दी के प्रश्नवाचक वाक्यों के, मुख्य दो वर्ग किए जा सकते हैं क प्रश्नवाचक वाक्य और वैकल्पिक प्रश्नवाचक वाक्य (Alternative Question). क प्रश्नवाचक वे हैं जिनमें प्रश्नवाचक शब्दों (कौन, कहाँ, क्या, कैसे) का प्रयोग अनिवार्य रूप से होता है और ये उत्तर में निश्चित सूचना की अपेक्षा रखते हैं। वैकल्पिक प्रश्नवाचक वाक्य वे हैं, जिनमें दो या अधिक इकाइयाँ उत्तर के लिए विकल्प के रूप में उपस्थित रहती हैं। वैकल्पिक प्रश्नवाचक वाक्य दो प्रकार के होते हैं 1. सामान्य वैकल्पिक प्रश्नवाचक वाक्य, 2. `हाँ/न' प्रश्नवाचक वाक्य (yes/no question) जिनके उत्तर में `हाँ' या `नहीं' का प्रयोग किया जाता है।"[6] इनके अलावा डॉ चित्रा गुप्ता के अध्ययन के आधार पर `प्रतिध्वनि प्रश्नवाचक वाक्य (echo question), `आधायित प्रश्नवाचक वाक्य' (embedded question) तथा अनुतान के आधार पर प्रश्नवाचक वाक्यों के अनुवाद भी यहाँ विश्लेषण का विषय है। अंग्रेज़ी में भी इसप्रकार ही प्रश्नवाचक वाक्यों का वर्गीकरण किया जा सकता है।

#### 4.2.1.3.1 क-प्रश्नवाचक वाक्य

हिन्दी के क - प्रश्नवाचक वाक्यों का शब्द-क्रम वही होता है, जो साधारण वाक्य का होता है प्रश्नवाचक शब्द + क्रिया? / पश्न्रवाचक शब्द + कर्ता + क्रिया?, लेकिन अंग्रेज़ी में सहायक क्रियाओ की सहायता से ही प्राय: प्रश्नवाचक वाक्य बनाया जाता है। इसलिए शब्द-क्रम है प्रश्नवाचक शब्द + सहायक क्रिया + कर्ता + मुख्य क्रिया?

61. कौन आया?

Who came?

यहाँ दोनों भाषाओ में शब्द-क्रम एक ही है।

अंग्रेज़ी में ऐसा प्रयोग और भी मिलता है।

62. Who goes there?

कौन वहाँ जाता है?

63. Who gave you this book?

किसने तुम्हें यह पुस्तक दी?

लेकिन हिन्दी में प्रश्नवाचक शब्द कहीं भी आ सकता है।

64.तुम कैसे आया?

How did you come?

65. वह तुम्हारा कौन है?

Who is he to you? / What is the relation between you and he?

विशिष्ट परिस्थितियों में वक्ता इनका क्रम बदल भी सकता है, याने प्रश्नवाचक शब्द का प्रयोग वाक्य के आदि मध्य और अन्त में - कहीं भी कर सकता है।

66. वह कौन है?

Who is he?

67. कौन है वह?

Who is he?

68. वह है कौन?

Who is he?

अंग्रेज़ी में उपर्युक्त तीन वाक्यों का अनुवाद देखिए, तीनों एक ही है। अत: अंग्रेज़ी में इसप्रकार क्रम-परिवर्तन संभव नहीं है। यहाँ आदि, मध्य और अन्त में प्रश्नवाचक शब्द के प्रयोग से जो बल मिलता है उससे विशेष अर्थ भी मिलता है। अत: हिन्दी में प्रश्नवाचक शब्द का स्थान वक्ता की इच्छा और परिस्थिति पर निर्भर होने के कारण स्थान वाक्य में निश्चित नहीं है।

दोनों भाषाओ में एक ही प्रश्नवाचक वाक्य से एकाधिक प्रश्न किया जा सकता है

69. वह कब, कैसे और कहाँ से आया?

How, when, why and from where did he come?

हिन्दी में प्रश्नवाचक वाक्य की द्विरूक्ति भी की जाती है। यह वहुवचन उत्तरलक्षी प्रश्न है। अंग्रेज़ी में इसप्रकार नहीं होती।

70. तुमने क्या-क्या खरीदा?

What (all things) did you buy?

71. क्या-क्या खाओगे?

What all would you eat?

### 4.2.1.3.2 वैकल्पिक प्रश्नवाचक वाक्य

#### 4.2.1.3.2.1. सामान्य वैकल्पिक प्रश्नवाचक वाक्य

"सामान्य वैकल्पिक प्रश्नवाचक वे हैं, जिनकी बाह्य संरचना में दो या अधिक भिन्न वाक्यीय इकाइयाँ स्पष्ट रूप से विकल्प के रूप में उपस्थित रहती हैं, और श्रोता उनमें से एक का प्रयोग उत्तर के लिए करता है।"[7]

72. तुम आ रहे हो या मैं जाऊँ?

Are you coming, if not let me go.

अंग्रेज़ी में इसप्रकार ही इसका अनुवाद किया जा सकता है।

### 4.2.1.3.2.2 हाँ-न वैकल्पिक प्रश्नवाचक वाक्य

हिन्दी में `हाँ' `न' वैकल्पिक प्रश्नवाचक वाक्य भी अनुतान के आधार पर बनते हैं। अंग्रेज़ी में भी ऐसे भी प्रश्नवाचक वाक्य बनते हैं।

73. वह आया?

He came?

बाह्य संरचना में भी दो विकल्पों से युक्त `हाँ-न' वैकल्पिक प्रश्नवाचक वाक्य मिलते हैं।

74. वह आयेगा या नहीं?

He will come or not?

उपर्युक्त उदाहरण सकारात्मक विकल्पयुक्त प्रश्नवाचक वाक्य है।

हिन्दी में `क्या' प्रश्नवाचक शब्द का प्रयोग भी `हाँ-न' वैकल्पिक प्रश्नवाचक वाक्यों में मिलता है।

75. आप आएँगे क्या?

Will you come?

76. क्या मैं आप के साथ चलूँ ?

May I come with you? / Can I come with you?

अंग्रेज़ी में जिसप्रकार निषेधवाचक वाक्यों में सहायक क्रियाएँ अलग की जाती हैं उसी प्रकार प्रश्नवाचक वाक्य में भी सहायक क्रिया को अलग करके वाक्य के आदि में रखा जाता है।

77. Did he go?

वह गया? / क्या वह गया?

`हाँ-न' वैकाल्पिक प्रश्नवाचक वाक्यों के उत्तर में `हाँ' अथवा `नहीं' के अतिरिक्त अन्य कुछ शब्दों का भी प्रयोग किया जाता है, जैसे, ज़रूर, बिलकुल, अवश्य, बेशक, शायद आदि। यह अंग्रेज़ी में भी मिलता है।

## 4.2.1.3.3 प्रतिध्वनि प्रश्नवाचक वाक्य

एक व्यक्ति से कही गई बात को विशिष्ट अनुतान के साथ प्रश्न के रूप में दोहराने से प्रतिध्वति प्रश्नवाचक वाक्य बनता है। "प्रतिध्वनि प्रश्नवाचक वाक्य के रूप में जिन वाक्यों की आवृत्ति की जाती है, उन्हें `आदर्श' वाक्य कहते हैं। यह आदर्श वाक्य साधारण वाक्य भी होता है और प्रश्नवाचक वाक्य भी"[8]। दोनों भाषाओ में प्रतिध्वनि प्रश्नवाचक वाक्य मिलते हैं।

हिन्दी के प्रतिध्वनि प्रश्नवाचक वाक्यों का रूप, क-प्रश्नवाचक वाक्य या `हाँ/न' प्रश्नवाचक वाक्य जैसे हैं।

78. वह नहीं गया? (`वह नहीं गया' की प्रतिध्वनि के रूप में)

He didn't go?

79. कैसे तू आयेगा? (`कैसे तू आयेगा' की प्रतिध्वनि के रूप में)

How will you come?

### 4.2.1.3.4 आधायित प्रश्नवाचक वाक्य

आधायित प्रश्नवाचक वाक्य किसी अन्य वाक्य में अन्तर्भुक्त होकर आते हैं। अंग्रेज़ी में भी इस प्रकार के वाक्य मिलते है।

80. तू जानता है मैं क्या कर रहा हूँ?

Do you know what am I doing?

## 4.2.2. आज्ञार्थक वाक्य

"भाषा प्रयुक्ति का दूसरा मुख्य प्रयोजन दूसरों की क्रियाओं को नियंत्रित करना है जिसे भाषा का निर्देशात्मक (conative) प्रकार्य कहते हैं। इस प्रकार्य को पूरा करने के लिए सामान्यत: आज्ञार्थक वाक्यों का प्रयोग किया जाता है, इसमें श्रोता की प्रमुखता लक्षित होती है।"[9] दोनों भाषाओं में विभिन्न प्रकार से आज्ञार्थक वाक्य बनाया जा सकता है। इनके दो भेद हैं- प्रत्यक्ष और परोक्ष आज्ञार्थक वाक्य। "आज्ञासूचक वाक्यों में आज्ञा मूलत: क्रिया के रूप में होती है।"[10]

### 4.2.2.1. प्रत्यक्ष आज्ञार्थक वाक्य

हिन्दी में क्रिया के विधि रूपों से प्रत्यक्ष आज्ञार्थक वाक्य बनाया जा सकता है। यह वर्तमानकालिक होता है। अंग्रेज़ी में इसप्रकार क्रिया के विधि रूप नहीं मिलते।

81. तू जा।

Go.

82. तुम जाओ।

(You) go.

83. आप जाइए।

Will you please go/ Please go.

84. आप चलें।

You may please go.

### 4.2.2.2 परोक्ष आज्ञार्थक वाक्य

यह भविष्यत्कालिक होता है और इसके दो भेद हैं- 1. सामान्य परोक्ष आज्ञार्थक वाक्य और 2. आदरार्थ परोक्ष आज्ञार्थक वाक्य।

1. सामान्य परोक्ष आज्ञार्थक वाक्य

इसमें क्रिया के सामान्य (infinitive) रूप का प्रयोग किया जाता है

85 तुम शाम को यहाँ आना।

You have to (are to) come here in the evening/(Come here in the evening)

86 तू शाम को यहाँ आना।

You have to(are to) come here in the evening/(Come here in the evening)

87 आप शाम को यहाँ आना।

You (shall)(are to) have to come here in the evening/(Please come here in the evening)

उपर्युक्त उदाहरणों में मध्यमपुरुष के तीनों सर्वनामों के साथ `आना' का प्रयोग किया गया है। अँग्रेजी में भी तीनो केलिए एक ही रुप का प्रयोग किया जा सकता है।

88 वहाँ मत जाइएगा।

Please don't go there

89 कल मत जाइएगा।

Kindly do not go tomorrow

90 आप यह काम कीजिएगा।

Please be kind enough to do this work

उपर्युक्त उदाहरणों से स्पष्ट हो जाता है कि हिन्दी के आदरार्थ परोक्ष आज्ञार्थक वाक्य, क्रिया के एक ही रूप से बनते हैं तो अंग्रेज़ी में इनकेलिए क्रियाविशेषण या क्रियाविशेषण पदबन्ध का प्रयोग किया जा सकता है।

2. आदरार्थ परोक्ष आज्ञार्थक वाक्य

इसमें प्रत्यक्ष आदरार्थ आज्ञार्थक क्रिया के साथ `गा' जोडा जाता है।

अंग्रेज़ी में प्रार्थना सूचित करने के लिए will, would, can, could, won't, may, might आदि का प्रयोग किया जाता है।

91. Will you give me a glass of water.

आप मुझे एक गिलास पानी दीजिए।

`would' से इससे भी अधिक आदर सूचित किया जा सकता है।

92. Would you please accompany me?

कृपया आप मेरे साथ आइए।

बल देने के लिए `do' का प्रयोग भी किया जाता है।

93. Do come with me.

मेरे साथ ज़रूर आना।

`Must', `have to' और `are to' का प्रयोग परोक्ष आज्ञार्थक वाक्य के लिए होता है।

94. You are to reach here on Monday.

तुम मंगलवार को यहाँ आना।

अनुमति के लिए `let' का प्रयोग उत्तम और अन्यपुरुष के साथ होता है।

95. Let me go.

मैं चलूँ।

96. Let him go.

वह चले।

## 4.2.3 मनोभावात्मक वाक्य

"भाषा प्रयुक्ति का तीसरा मुख्य प्रयोजन वक्ता के विभिन्न प्रकार के मनोभावों या संवेगों को व्यक्त करना है जिसे भाषा का संवेगात्मक (expressive) प्रयोग कहते हैं। यह प्रकार्य मनोभावात्मक वाक्यों द्वारा पूरा किया जाता है।"[11] संदेह, इच्छा तथा विस्मयादि भाव मनोभावों से व्यक्त होने के कारण संभावनार्थक / संदेहार्थक, इच्चार्थक तथा विस्मयादिबोधक वाक्य इसके अन्तर्गत आते हैं।

### 4.2.3.1. संभावनार्थक/संदेहार्थक वाक्य

इनसे संदेह, शंका, संभावना आदि की सूचना मिलती है।

97. शायद वह आ जाए।

Perhaps he may come.

98. तुमने उसे देखा होगा।

You may have seen him.

99. वह जाता होगा।

He may be going.

अंग्रेजी में वृत्तिबोधक सहायक क्रिया `may' के प्रयोग से ही, संदेह, शंका या संभावना की अभिव्यक्ति की जाती है। हिन्दी में संदेहार्थक वाक्यों में `शायद' का प्रयोग होता है तो अंग्रेज़ी में `perhaps' का प्रयोग होता है।

4.2.3.2 इच्छार्थक वाक्य

इनसे इच्छा, शुभकामना या आशीर्वाद प्रकट किया जा सकता है। इनके लिए अंग्रेज़ी में प्राय: `May' का ही प्रयोग होता है।

100. तुम्हारे सब दु:ख दूर हों।

May all your sorrows be removed.

101. भगवान तुम्हें सुखी रखे।

May God make you happy.

4.2.3.3 विस्मयादिबोधक वाक्य / आश्चर्यसूचक वाक्य

जो वाक्य विस्मय, आश्चर्य आदि भाव प्रकट करता है, उसे विस्मयादिबोधक वाक्य कहते हैं।

102. वह गया!

He went!

इनमें विस्मयादिबोधक अव्ययों का प्रयोग किया जाता है। वाक्यों से अनिवार्यत: इनका कोई सम्बन्ध नहीं है। व्याकरण से अत्यल्प प्रभावित ये शब्द वक्ता के मनोभावों को व्यक्त करने में सफल हो जाते हैं। कभी-कभी इसका का रूप प्रश्नवाचक वाक्य का होता है

103. What am I hearing!

मैं क्या सुन रहा हूँ!

दोनों भाषाओ में प्रश्नवाचक शब्दों का प्रयोग विस्मयादिबोधक वाक्यों में होता है। अंग्रेजी में तब शब्द-क्रम बदल जाता है।

104.कैसी सुन्दर आँखें!

What a beautiful pair of eyes (it is)!

105.How beautiful she is!

वह कैसी सुन्दर लडकी है!

106.What a terrible storm it was!

वह कैसा भीषण तूफान था!

## 4.2.4.संकेतवाचक वाक्य

इनसे शर्त या संकेत सूचित होता है। परंपरागत हिन्दी व्याकरण में जो हेतुहेतुमद् भूतकाल मिलता है, उसका प्रयोग भी संकेतवाचक वाक्यों में मिलता है।

107.अगर मैं जाता, तो वह यहाँ आता।

Had I gone, he would have come here.

108.नौकरी मिल जाती तो मेरा संकट दूर हो जाता।

If I get a job, I will be free from this crisis.

109.यदि तुम चलोगे तो मैं भी तुम्हारे साथ चलूँगा।

If you go, I also will come with you.

अंग्रेज़ी में 'If' या If.....then' का प्रयोग संकेतवाचक वाक्यों में मिलते हैं।

"संरचनात्मक उच्चाधिक्रम (Hierarchy) की दृष्टि से वाक्यों के दो स्थूल भेद करना अधिक युक्तिसंगत है-सरल तथा असरल। असरल वाक्यों के फिर दो उपभेद किए जा सकते हैं-संयुक्त तथा मिश्र वाक्य।"[12]

## 4.2.5 सरल वाक्य

जिस वाक्य में एक ही विधेय हो, उसे सरल या साधारण वाक्य कहते हैं। संकेतवाचक को छोडकर सात प्रकार के सरल वाक्य हो सकते हैं।

इसमें एक उद्देश्य होता है और वह एक संज्ञा/संज्ञा पदबंध सर्वनाम/सर्वनाम पदबंध होता है।

110.बच्ची खेल रही है।

The child is playing.

111.लक्ष्मी के पिताजी डॉक्टर है।

Lakshmi's father is a doctor.

112.वह कमरा साफ करता है।

He is cleaning the room.

113.उनमें से कोई यहाँ आया।

One of them came here.

विधेय में क्रिया अनिवार्य है,वह एक क्रिया पदबंध भी हो सकता है।

114.He came here to stay with me.

मेरे साथ टहरने के लिए वह यहाँ आया।

## 4.2.6 असरल वाक्य

असरल वाक्यों में संयुक्त और मिश्र वाक्य शामिल हैं।

### 4.2.6.1 संयुक्त वाक्य

"संयुक्त वाक्यों में दो या अधिक आभ्यन्तर वाक्य होते हैं जो बाह्य संरचना में सामान्यतया किसी समानाधिकरण समुच्चयबोधक अव्ययों द्वारा जुड़े होते हैं और रचना या आर्थी इकाई की दृष्टि से परस्पर आश्रित नहीं होते।"[13] अथवा संयुक्त वाक्य में दो या अधिक स्वतंत्र/प्रधान उपवाक्य होते हैं और दोनों में समानाधिकरण सम्बन्ध भी होते हैं।

उपवाक्यों में स्थान-विपर्यय की संभावना के आधार पर संयुक्त वाक्यों को दो वर्गों में बाँट सकते हैं-

1.संयुक्त वाक्य जिनके उपवाक्य स्थान-विपर्य की क्षमता रखते हैं।

ये विभाजक समुच्चयबोधक अव्यय (या, अथवा) या संयोजक संमुच्चयबोधक अव्यय (और,तथा) से जुड़कर बनते हैं।

115.वह अकेला था और किसी ने उसकी मदद नहीं की।

**He was alone and no one helped him.**

संयुक्त वाक्य जिनके उपवाक्यों में स्थान-विपर्यय से केन्द्रीय अर्थ बदल जाता है।

116.माँ खाना पकाती है और बच्चे खेलते हैं।

**Mother is preparing lunch and children are playing.**

हिन्दी के संयुक्त वाक्यों को रुपान्तरण प्रक्रिया के आधार पर तीन संरचनात्मक वर्गों में बाँट सकते हैं 1 पूर्णांग संयुक्त वाक्य, जिसमें केवल संयोजन प्रक्रिया काम करती है। 2. अल्पांग संयुक्त वाक्य जिसमें संयोजन तथा लोप दोनों प्रक्रियाएँ काम करती है। 3. संकुचित संयुक्त वाक्य जिसमें संयोजन, लोप तथा स्थानांतरण, ये तीनों प्रक्रियाएँ काम करती हैं।

1. पूर्णांगसंयुक्त वाक्य

इस वाक्य-रचना प्रक्रिया में केवल संयोजन नियम लागू होता है। और उनमें दो आभ्यंतर वाक्य समानाधिकरण समुच्चयबोधक अव्ययों द्वारा संयोजित होते हैं। वाक्य-116 एक पूर्णांग संयुक्त वाक्य है। इसका अनुवाद भी पूर्णांग संयुक्त वाक्य ही है।

2.अल्पांग संयुक्त वाक्य

दो या अधिक संरचक वाक्यों में समानधर्मा समरूप अंश (पद, पदबंध) हों तो दूसरे वाक्य के समरूप अंश का लोप कर और इन संरचक वाक्यों के बीच समानाधिकरण समुच्चयबोधक अव्ययों के आरोप से अल्पांग संयुक्त वाक्य बनते हैं।

117.मैं ने उसको देखा है, उसकी पत्नी को नहीं।

I have seen him, but not seen his wife.

3.संकुचित संयुक्त वाक्य

"यदि दो या अधिक संरचक वाक्यों में समानधर्मा समरूप अंश (पद, पदबंध) हों तो दूसरे वाक्य के समरूप अंश का लोप के और उसके असमान अंश को अपने स्थान से हटाकर पहले वाक्य के समकक्ष अंश के साथ समानाधिकरण समुच्चयबोधक अव्ययों द्वारा संयोजित कर संयुक्त वाक्य बनाया जा सकता है।"[14]

118. सीना और राधा सुबह मन्दिर जाती हैं।

Seena and Radha go to temple in the morning.

119.उसका घर छोटा और सुन्दर है।

His house is small and beautiful.

उपर्युक्त उदाहरणों से मालूम होता है कि संयुक्त वाक्यों की संरचना दोनों वाक्यों में प्राय: समान है।

### 4.2.6.2 मिश्र वाक्य

"मिश्र वाक्य वह है जिसमें एक प्रधान वाक्य होता है तथा एक या एकाधिक आश्रित उपवाक्य होते है। हिन्दी के मिश्र वाक्यों के विवेचन में आश्रित उपवाक्यों के स्वरुप-विवेचन की अपेक्षा है।"[15]

उपवाक्यों के स्थान-क्रम पर ध्यान देना पडता है। हिन्दी की मिश्र वाक्य-संरचना में अंग्रेज़ी की मिश्र वाक्य-संरचना का प्रभाव है। इसलिए अनुवाद कभी-कभी आसान हो जाता है।

120.मुझे वह व्यक्ति पसन्द है जो ईमानदार है।

I like the(those people) who are honest./ I like the person who is honest.

121.जहाँ वह गया था तुम भी जाओ।

You also go where he went.

अनुवाद करते वक्त लक्ष्यभाषा की शैली के अनुसार संयुक्त वाक्य या मिश्र वाक्य को सरल वाक्यों में परिवर्तित किया जा सकता है।

122."Meanwhile Warren Hastings was sent from England, and he became the first Governor General"(Jawaharlal Nehru,Glimpses of World History, P.336.)

"इसी अर्से में इंग्लैण्ड से वॉरन हेस्टिंग्ज भेजा गया। वह यहाँ का पहला गवर्णर जनरल हुआ।"(विश्व इतिहास की झलक, पृ.425)

123."Jesus was a Jew, and the Jews were and are a peculiar and strongly persevering people"(Jawaharlal Nehru, Glimpses of World History, P.87.)

ईसा यहूदी थे। यहूदी एक निराली और अजीब-तौर पर उध्यमी कौम थी, और अब भी है।

अंग्रेज़ी के प्रभाव से हिन्दी अनुवाद में भी लम्बे लम्बे संयुक्त और मिश्र वाक्य बनाने की प्रवृत्ति देखी जा सकती है।

124. "I should have liked to place vivid messages of the past before you, one after another, to make you sense how this world of ours has changed, step by step, and developed and progressed, and sometimes apparently gave back; to make you see something of the old civilization and how they are risen like the tide and then subsided; to make you realize how the river of history has run on from age to age, continuously,interminably, with its eddies and whirlpools and backwaters, and still rushed on to an unknown sea."(Jawaharlal Nehru, Glimpses of World History, P.177).

"मैं चाहता था कि तुम्हारे सामने एक-एक पुराने ज़माने की जीती जागती तस्वीरें रखूँ ताकि तुम्हें यह भान हो सके कि हमारी यह दुनिया सीढी-दर-सीढी किस तरह बदली, कैसे विकसित और उन्नत हुई, और कैसे कभी-कभी पीछे हटती हुई नज़र आई; तुम्हें दिखलाऊँ कि पुरानी सभ्यताएँ कैसी थी और वे ज्वार-भाटे की तरह कैसे आगे बढीं और पीछे फिर हटी;तुम्हें महसूस कराऊँ कि इतिहास की नदी, चक्कर, भंवर और हद बनाती हुई; किस तरह बराबर युग-युगों से निरन्तर बहती चली आ रही है और अनजाने समुद्र की तरफ दौडी चली जा रही है।" (विश्व इतिहास की झलक, पृ. 244.)

## 4.3 वाच्य

"वाच्य को वाक्य-रचना प्रक्रिया के अन्तर्गत विचारणीय तत्व माना जा सकता है क्योंकि वाक्य-प्रयोक्ता की दृष्टि में वाक्य-प्रयोग के समय कौन-सा तत्व अधिक महत्वपूर्ण है, अर्थात् क्रिया व्यापार को करनेवाला 'कर्ता' या फल को भोगनेवाला 'कर्म' या स्वयं कार्य 'क्रिया'; अत: वाच्य वाक्य-रुपान्तरण का एक प्रकार है न कि शुद्ध व्याकरणिक कोटि।"[16] हिन्दी में वाच्य दो हैं -कर्तृवाच्य और अकर्तृवाच्य। अकर्तृवाच्य के अन्तर्गत कर्मवाच्य और भाववाच्य आते हैं। अंग्रेज़ी में भी दो वाच्य हैं Active voice और Passive voice.

### 4.3.1 कर्तृवाच्य

कर्तृवाच्य में वास्तविक प्रकार्यकर्ता ही कर्ता होता है।

125.पेड़ गिर पडा।

The tree fell down.

126.अश्विन ने दरवाजा खोला।

Ashwin opened the door.

## 4.3.2. कर्मवाच्य

यहाँ कर्म व्याकरणिक कर्ता का स्थान लेता है, व्याकरणिक कर्ता (कर्म) के लिंग-वचनानुसार ही क्रिया बदलती है।

127. कपड़े घुले जा रहे हैं।

Dresses are being washed.

क्रिया-व्यापार वास्तविक कर्ता से परोक्षत: सम्बन्धित है। हिन्दी में कर्मवाच्य में मुख्य क्रिया के सामान्य भूतकालिक रुप के साथ-'जा' के रूपों का व्याकरणिक कर्ता (कर्म) के लिंग-वचनानुसार प्रयोग किया जाता है। कभी-कभी वास्तविक कर्ता अनुपस्थित रहता है। मूल कर्म ही वाक्य का उद्देश्य होता है। अंग्रेज़ी में मुख्य क्रिया के काल के अनुसार कालवाचक सहायक क्रिया रहती है और मुख्य क्रिया भूतकालिक कृदन्तीय (Past participial) रूप में रहती है।

## 4.3.3. भाववाच्य

यहाँ क्रिया के कर्ता या कर्म में से कोई भी, वाक्य का उद्देश्य नहीं है।

128. इस तेज़ धूप में कैसे चला जाएगा।

How is it possible to walk in this smoke.

कर्ता के उल्लेख के बिना कर्मवाच्य वाक्यों की क्रिया अकर्मक रखी जाने पर 'मिथ्यावाच्य' (pseudo-passive) कहलाता है।

129.पेड़ कटा।

The tree was cut.

130.खिड़की खुली।

The window was opened.

## निष्कर्ष

हिन्दी गद्य का विकास अंग्रेजी के अनुकरण पर होने से हिन्दी वाक्य संरचना में अंग्रेजी का स्पष्ट प्रभाव देखा जा सकता है।

हिन्दी और अंग्रेजी वाक्यों में शब्द क्रम अलग है। वाक्य में अर्थ की दृष्टि से इस क्रम का महत्वपूर्ण स्थान है। क्रम परिवर्तन से अर्थ में भी परिवर्तन किया जा सकता है। हिन्दी में इसकी कई संभावनाएँ हैं।

हिन्दी में निषेधवाचक शब्द विभिन्न प्रकार से बनाया जा सकता है। निषेधवाचक शब्द भी हिन्दी में अंग्रेजी से ज्यादा मिलते हैं। निषेधात्मक शब्द `नहीं', `न' और `मत' का प्रयोग सन्दर्भानुसार किया जा सकता है। अंग्रेजी में निषेधवाचक शब्दों के साथ सहायक क्रियाओ का प्रयोग मिलता है। हिन्दी में विशेष प्रकार के निषेधवाचक वाक्य भी मिलते हैं। इनका अनुवाद बडी सावधानी से करना चाहिए।

हिन्दी के प्रश्नवाचक वाक्यों में प्रश्नवाचक शब्द कहीं भी रख सकते हैं। परन्तु अंग्रेजी के प्रश्नवाचक वाक्यों में आरंभ में ही उनका प्रयोग किया जाता है। हिन्दी में द्विरूक्त प्रश्नवाचक वाक्यों में प्रश्नवाचक शब्दों का प्रयोग नहीं होता तो हिन्दी में यह संभव नहीं। अंग्रेज़ी में हाँ-न प्रश्नवाचक वाक्यों में प्रश्नवाचक शब्दों का प्रयोग नहीं होता तो हिन्दी में यह प्रश्नवाचक शब्द के साथ और उसके बिना भी प्रयुक्त होता है।

हिन्दी के आज्ञार्थक वाक्यों में क्रिया के विधिरूपों का प्रयोग किया जाता है। अंग्रेजी में क्रियाविशेषण, सहायक क्रिया आदि से आज्ञा/प्रार्थना की जाती है।

हिन्दी के विस्मयादिबोधक वाक्यों में शब्द क्रम विधानार्थक वाक्यों का होता है। अंग्रेजी में कभी कभी शब्द क्रम बदलता है, याने क्रिया (योजक क्रिया) अन्त में आती है।

सरल वाक्य, संयुक्त वाक्य और मिश्र वाक्यों में अंग्रेजी की वाक्य संरचना की स्पष्ट छाप देखा जा सकता है। हिन्दी की प्रकृति सरल वाक्यों के अनुकूल है। लेकिन अंग्रेजी के अनुकरण पर हिन्दी में भी लम्बे-लम्बे वाक्य मिलते हैं। अंग्रेजी के लम्बे-लम्बे संयुक्त और मिश्र वाक्यों का अनुवाद हिन्दी मे सरल वाक्यों में किया जा सकता है।

अंग्रेजी में अकर्तृवाच्य का प्रयोग वैज्ञानिक, प्रशासनिक या कार्यालयीन साहित्य में काफी मिलता है। सभी सन्दर्भ में इसका अनुवाद अकर्तृवाच्य में नहीं किया जा सकता। असमर्थता बोधन केलिए हिन्दी में अकर्तृवाच्य का प्रयोग ज्यादा होता है।

हिन्दी में अप्रत्यक्ष कथन में वाक्य-संरचना नहीं बदल जाती। अंग्रेजी में क्रिया और सर्वनाम उससे प्रभावित है।

सन्दर्भ

1. डा० भोलानाथ तिवारी, हिन्दी भाषा की वाक्य संरचना, 1986, पृ. 10

2. डॉ० कमलेश महाजन, हिन्दी भाषा की वाक्य संरचना, 1986, पृ. 128

3. डॉ० कमलेश महाजन, हिन्दी भाषा की वाक्य संरचना, 1986, पृ. 129

4.डॉ० कमलेश महाजन, हिन्दी भाषा की वाक्य संरचना, 1986, पृ. 131

5.डॉ० चित्रा गुप्ता, हिन्दी भाषा की वाक्य संरचना, 1986, पृ. 103

6.डॉ० चित्रा गुप्ता, हिन्दी भाषा की वाक्य संरचना, 1986, पृ. 104

7.डॉ० चित्रा गुप्ता, हिन्दी भाषा की वाक्य संरचना, 1986, पृ. 112

8.डॉ० चित्रा गुप्ता, हिन्दी भाषा की वाक्य संरचना, 1986, पृ. 118

9.डॉ० सूरजभान सिंह, हिन्दी का वाक्यात्मक व्याकरण, 1985, पृ.25-26

10. डॉ० भोलनाथ तिवारी, हिन्दी भाषा की वाक्य-संरचना, 1986, पृ.143

11.डॉ० सूरजभान सिंह, हिन्दी का वाक्यात्मक व्याकरण, 1985, पृ.26

12.डॉ० सूरजभान सिंह, हिन्दी का वाक्यात्मक व्याकरण, 1986, पृ.92

13. डॉ० सूरजभान सिंह, हिन्दी का वाक्यात्मक व्याकरण, 1986, पृ. 93

14. डॉ० सूरजभान सिंह, हिन्दी का वाक्यात्मक व्याकरण, 1986, पृ.99

15. डॉ० महेन्द, हिन्दी भाषा की वाक्य-संरचना, 1986, पृ.27

16. डॉ० लक्ष्मीनारायण शर्मा, हिन्दी का विवरणात्मक व्याकरण, 1990 पृ. 304

# अध्याय - 5

## साहित्यिक एंव साहित्येतर अनुवाद तथा मशीनी अनुवाद की संभावनाएँ

अध्याय -5

# साहित्यिक एवं साहित्येतर अनुवाद तथा मशीनी अनुवाद की संभावनाएँ

सृजनात्मक साहित्य और वैज्ञानिक या तकनीकी साहित्य का ध्येय अलग है। सृजनात्मक साहित्य में तथ्य को काल्पनिक धरातल पर प्रस्तुत किया जाता है; वह संवेदना -प्रधान है, लक्षणा-व्यंजना उसका सौन्दर्य पक्ष है। यहाँ भाषा का सौन्दर्य भी भाव-सौन्दर्य की तरह महत्वपूर्ण है। वैज्ञानिक साहित्य तथ्यप्रधान है, इसलिए उसकी भाषा शैली या सौन्दर्य का ध्यान नहीं रखता और वह अभिधाप्रधान, स्पष्ट, सरल, सपाट, तार्किक तथा गद्यात्मक है।

भाषाशौली, मुहावरेदार प्रयोग आदि भाषा की अस्मिता की पहचान है। इन्हें दूसरी भाषा में लाना कठिन अवश्य है। इसलिए सृजनात्मक साहित्य का अनुवाद 'अनुवाद' (Translation) नहीं, पुन:प्रस्तुतीकरण 'Re-creation' है। सृजनात्मक साहित्य के अनुवाद में समतुल्य प्रभाव के तत्व को अनुवाद की श्रेष्ठता (merit) आँकने का माप-दण्ड माना जा सकता है। जब वह पुन:सृजन हो तो कभी-कभी पाठक के मन में मूल से बढ़कर ज्यादा प्रभाव डाल सकता है।

सृजनात्मक साहित्य का अनुवाद, अनुवादक के व्यक्तित्व से प्रभावित होता है, परन्तु वैज्ञानिक एवं तकनीकी साहित्य के अनुवाद में अनुवादक के व्यक्तित्व एवं उसकी साहित्यिक भाषा का कोई स्थान नहीं होता। उसमें मूल की शैली और अभिव्यक्ति की रीति `mode of expression' कथ्य के समान ही महत्वपूर्ण है। वैज्ञानिक साहित्य के अनुवाद में अभिव्यक्ति की शैली से बढ़कर कथ्य का महत्व है। इसलिए विषय का सम्यक ज्ञान

अनुवादक के लिए अनिवार्य है। अनुवादक का ध्यान भाषा की रचना एवं रूप पर न होकर विषयवस्तु पर केन्दित होता है क्योंकि इसमें व्यावहारिकता तथा तथ्यात्मकता महत्वपूर्ण होती है। साहित्यिक तथा साहित्येतर अनुवाद में व्याकरण के महत्व के अध्ययन के लिए यहाँ कुछ उदाहरण प्रस्तुत किए जाते हैं -

## 5. 1 सृजनात्मक साहित्य का अनुवाद

(अंग्रेज़ी से हिन्दी में)

निबन्ध

"We shall now consider what is called the Industrial Revolution.It began in England, and in England therefore we shall study it briefly.I can give no exact date for it, for the change did not take place on a particular date as if by magic.Yet it was rapid enough, and from the middle of the eighteenth century onwards, in less than 100 years, it changed the face of life.We have followed the course of history, you and I in these letters, from the earliest days for several thousand years and we have noted many changes.But all these changes, great as they sometimes were, did not vitally after the way life was lived by the people.If Socrates or Ashoka or Julius Ceasar had suddenly appeared in Akbar's court in India, or in England or France in the early eighteenth century, they would have noticed many changes.They might have approved of some of these changes and disapproved of others.But

on the whole they would have recognised the world, outwardly at any rate, for ideas would not have differed greatly.And again so far as outward appearances went, they would not have felt wholly out of place in it.If they wanted to travel, they would have done so by horse or carriage drawn by horses, much as they used to do in their own time, and the time occupied in the journey would have been about the same." [Jawaharlal Nehru, Glimpses of World History.]

"अब हम उसकी चर्चा करेंगे जो उद्योगी क्रान्ति कहलाती है। इसकी शुरूआत इंग्लैण्ड में हुई, इसलिए इंग्लैण्ड में ही हम संक्षेप में इसपर गौर करेंगे। मैं इसके लिए कोई ठीक सन् नहीं बतला सकता, क्योंकि यह परिवर्तन जादू की तरह किसी खास साल में नहीं हुआ। लेकिन फिर भी वह काफी तेज़ी के साथ हुआ और अठारहवीं सदी के बीच से लगाकर आगे के सौ वर्षो से कम समय में ही उसने जिन्दगी की सूरत बदल दी। इन पत्रों में तुमने और मैं ने, दोनों ने दुनिया की शुरूआत से लगाकर हज़ारों वर्षों के इतिहास के सिलसिले का सिंहावलोकन किया है और बहुत-से परिवर्तन हमारी निगाह में आए हैं। लेकिन ये सब परिवर्तन, जो कभी-कभी बहुत बडे भी हुए, लोगों की ज़िन्दगी और रहन-सहन के ढंग को गहराई के साथ नहीं बदल सके। अगर सुकरात या अशोक या जूलियस सीज़र भारत में अकबर के दरबार में अचानक चले आते, या अठारहवीं सदी के शुरू में इंग्लैण्ड या फ्रान्स में पहुंच जाते, तो बहुत-से परिवर्तन उनकी नज़र में आते। इनमें से कुछ परिवर्तनों को वे पसन्द करते और कुछ को नापसन्द। लेकिन सरसरी तौर पर, कम-से-कम बाहर से, वे दुनिया को पहचान लेते, क्योंकि विचारों में उन्हें बहुत फर्क नहीं मालूम होता। और जहाँ तक ऊपरी बातों से ताल्लुक है वे अपने को बिलकुल अजनबी नहीं महसूस करते। अगर वे सफर करना चाहते तो घोड़े पर या घोडा-गाडी

पर करते, जैसाकि अपने ज़माने में किया करते थे; और सफर में वक्त भी करीब-करीब उतना ही लगता।

मूल को इसी प्रकार ही अनुवाद में लाने का सफल प्रयास यहाँ भी मिलता है। मूल की व्याकरणिक संरचना के निकट अनुवाद की व्याकरणिक संरचना भी खडी हो जाती है।

"The period of the Crusades was the great period of faith in Europe, of common aspiration and belief, and the people sought relief from their daily misery in this faith and hope.There was no science; there was very little learning; for faith and science and learning do not easily go together.Learning and knowledge make people think, and doubt and questioning are difficult companies for faith to have. And the way of science is the way of inquiry and experiment, which is not the way of faith.We shall see later how this faith weakened and doubt arose."[Jawaharlal Nehru, Glimpses of World History]

"क्रूसेडों का ज़माना, यूरोप में श्रद्धा, सामूहिक आकांक्षा और विश्वास का महान ज़माना था और जनता अपनी आये दिन की मुसीबतों से शान्ति पाने के लिए इसी श्रद्धा और आशा का सहारा लेती थी। उस समय विज्ञान नहीं था और विद्या भी बहुत कम थी, क्योंकि आस्था के साथ विज्ञान और विद्या का मेल आसानी से नहीं बैठता। विद्या और ज्ञान से लोग सोचने-विचारने लगते हैं और संशय व तर्क-वितर्क श्रद्धा के साथ मुश्किल से मेल खाते हैं। विश्वास का रास्ता जांच-पडताल और प्रयोग का रास्ता है। लेकिन श्रद्धा

इस रास्ते नहीं जाती। आगे चलकर हम देखेंगे कि किस तरह यह श्रद्धा कमज़ोर पड़ गई और संशय पैदा हुआ।"

यहाँ दूसरे वाक्य में 'there' के स्थान पर अनुवाद में क्रियाविशेषण 'उस समय' का प्रयोग किया गया है। तीसरे वाक्य में प्रेरणार्थक प्रयोग है तो उसके अनुवाद में व्याकरणिक कर्ता और क्रियाव्यापार का कर्ता एक ही है। चौथा वाक्य मिश्र वाक्य है, उसका अनुवाद दो वाक्यों में किया गया है।

हिन्दी से अंग्रेजी में

कहानी का अंश

(क) "वाजिद अली शाह का समय था। लखनऊ विलासिता के रँग में डूबा हुआ था। छोटे-बडे, गरीब-अमीर सभी विलासिता में डूबे हुए थे। कोई नृत्य और गान की मज़लिस सजाता था, तो कोई अफीम की पीनक ही में मजे लेता था। जीवन के प्रत्येक विभाग में आमोद-प्रमोद का प्राधान्य था। शासन-विभाग में साहित्य-क्षेत्र में, सामाजिक अवस्था में, कला-कौशल में, उद्योग-धंधों में, आहार-व्यवहार में सर्वत्र विलासिता व्याप्त हो रही थी।" [प्रेमचन्द, शतरंज के खिलाडी]

"Those were the days of Wajid Ali Shah.Lucknow was lost in the luxuries of life.The big and the small, the rich and the poor were all indulging themselves.Some adorned the concerts of dance and music,others would get their thrills from opium.In all walks of life, the dominant fashion was the enjoyment of the pleasures of life.In the Government, in the

literary world, in the social set up, in the cultural world, in business, in the routine of daily life,there was a total devotion to the precious and delicate."

यहाँ अनुवादक ने मूल के साथ न्याय करने का प्रयास किया है, समानार्थी शब्दों का प्रयोग न करके उस भाव को अनुवाद में लाने में वह सफल निकला।

(ख) "सहसा ईदगाह नज़र आया। ऊपर इमली के धने वृक्षों की छाया है। नीचे पक्का फर्श है, जिस पर जाजिम बिछा हुआ है। और रोज़ेदारों की पंक्तियाँ एक के पीछे एक न जाने कहाँ तक चली गयी हैं, पक्की जगत के नीचे तक, जहाँ जाजिम भी नहीं है। नये आनेवाले आकर पीछे की कतार में खडे हो जाते हैं आगे जगह नहीं है। यहाँ कोई धन और पद नहीं देखता। इस्लाम की निगाह में सब बराबर हैं। इन ग्रामीणों ने भी वजू किया और पिछली पंक्ति में खडे हो गये। कितना सुन्दर संचालन है, कितनी सुन्दर व्यवस्था! लाखों सिर एक साथ सिजदे में झुक जाते हैं, फिर सब के सब एक साथ खडे हो जाते है, एक साथ झुकते हैं, और एक साथ घुटनों के बल बैठ जाते हैं। कई बार यही क्रिया होती है, जैसे बिजली की लाखों बत्तियाँ एक साथ प्रदीप्त हों और एक साथ बुझ जाएँ और यही क्रम चलता रहे"।

"Suddenly they could see the Idgah. Above it are massive tamarind trees cesting their shade on the cemented floor on which sheets are spread. And there are rows upon rows of worshipers as far as the eyes can see, spilling well beyond the mosque courtyard. Newcomers line themselves behind the others.Here neither wealth nor status matters, because in the

eyes of the Islam all men are equal.These villagers wash their hands and feet and line up behind the others.What a beautiful morning sight it is!What perfect co-ordination! A hundred thousand heads bow together in prayer!And then all together they stand erect, bow down and sit on their knees.Many times they repeat this movement like thousands of electric lights being switched on and off in an upending line."

विदित है कि अनुवाद में सरल वाक्यों को जोडकर संयुक्त वाक्य वनाया गया है। वाक्य-संरचना भी बदल गई है। लेकिन यहाँ भी भाव को पूरी तरह व्यक्त करने में अनुवादक सफल हुआ है। यह अनुवाद ही नहीं प्रतीत होता, बलिक मूल जैसा लगता है।

कविता का अनुवाद (अंग्रेज़ी से हिन्दी में)

Apparition

The moon was saddening, seraphim in tears,

Dreaming, bow in hand, in the calm of vapours

Flowers,were drawing from dying violines

While sobs gliding down blue corollas

.....It was the blessed day of your first kiss.

My dreaming loving to torment me

Was drinking deep the perfume of sadness

That even without regret and deception is left-

By the gathering of a dream in the heart which has

gathered it.

रुप-छल

तुम्हारे प्रथम चुम्बन का वरद दिन था।

चाँद उदास हो रहा था

सुमनों की लहकती बास के बीच

सपनों में डूबी सजल परियाँ

जिनकी सिसकियाँ सितार की बन्द मोड-सी

फूलों के सम्पुट में बिछल पडती थी।

मेरे स्वप्न-

मेरी यातना के स्रोत-

उस भीनी उदासी में विसुध थे

जिसे सपनों की छबीली भी

अकारण ही उज़ड़कर

हृदय में छोड़ जाती है।

.....It was the blessed day of your first kiss' पंक्ति अनुवाद में प्रकृति वर्णन के पहले ही आया है। इसलिए अनुवाद में इस कविता के सौन्दर्य में कुछ कमी आ गई है। लेकिन हिन्दी की सुन्दर शब्दावली इस अनुवाद में देख सकते हैं।

## The Wind

This is the end of me, but you live on.

The Wind, crying and complaining,

Rocks the house and the forest,

Not each pine-tree seperately

With the whole boundless distance,

Like the hulls of sailing ships

Ridding as anchor in a bay

It shakes them not out of mischief,

And not in aimless fury,

But to find for you, out of its grief

The words of a lullaby.

मैं व्यतीत हुआ, पर तुम अभी रहो, रहो।

हवा, चीखती चिल्लाती हुई हवा-झकझोर रही है।

मकानों को, जंगलों को

चीड़ के अलग-अलग पेडों को नहीं

वरन सबों को एक साथ-तमाम सीमाहीन दूरियों को-

किसी खाडी में लंगर डाले हुए, लहरों पर उठते-गिरते हुए

तमाम ज़हाजों की तरह,

और हवा उन्हें झकझोर रही है

केवल चंचलतावश नहीं

न निष्पयोजन क्रोध से अन्धी होकर

वरन अपनी चरम पीडा में से

मन्थन में से

तुम्हारी लोरी के लिए उपयुक्त शब्द

खोजते हुए।

यह अनुवाद हिन्दी की शौली के अनुसार किया गया है। इसमें भाव को पकडने का सफल प्रयास देखा जा सकता है। लेकिन `मैं व्यतीत हुआ' से अंग्रेज़ी का सौन्दर्य नहीं मिला है। कविता के अनुवाद में व्याकरणिक अनुवाद को ढूँढना व्यर्थ प्रयास ही है क्योंकि यह पुनः प्रस्तुतीकरण ही है।

## 5.2 प्रशासनिक, बैंकिंग और कानूनी सामग्री का अनुवाद

**The admission is provisional. It is found later on that you do not fulfil any of the conditions of eligibility, yours candidature will be cancelled and no appeal against such cancellation will be entertained. You are therefore adviced to check carefully and satisfy yourself that you fulfil all the conditions of eligibility.**

आपका दाखिला अख्यायी है। यदि बाद में कभी यह पाया गया कि आप पात्रता की शर्त को पूरा नहीं करते तो आपकी उम्मीदवारी रह कर दी जाएगी तथा इसके विरुद्ध कोई अपील नहीं सुनी जाएगी। अतः आपको यह सलाह दी जाती है कि आप अच्छी तरह चैक कर यह देख लें कि आप पात्रता की सब शर्तों को पूरा करते हैं।

पहला वाक्य और अनुवाद देखें, `The admission is provisional'- `आपका दाखिला अस्थाती है'। अनुवाद में `the' के स्थान पर `आपका' का प्रयोग करके मूल से भी अधिक निश्चितता लायी गई है, दूसरे वाक्य में कोई `if....then' शर्तसूचक उपवाक्य नहीं है, फिर भी हिन्दी में `यदि....तो' के प्रयोग से शर्तसूचक वाक्य बनाना गया है।

`Such cancellation' को अनुवाद में छोड़ दिया गया है और उसके स्थान पर सर्वनाम (`इसके') का प्रयोग किया गया है।

We would particularly ask you to assist us by complying with the condition that the manuscript of the talk/short story should be in the hands of the station Director not less than 10 days before the date fixed for Broadcast. The normal routine of the station is seriously hampered of this condition is not observed.

हमारा विशेष निवेदन यह है कि आप कृपया इस शर्त का पालन करके हमारी सहायता करें कि प्रसारण के लिए जो तारीख नियत की गई है उससे कम से कम दस दिन पहले वार्ता/लघुकथा की पांडुलिपि केन्द निदेशक के पास पहूँच जाए। इस शर्त का पालन न करने पर केन्द के सामान्य कार्यक्रम में गंभीर अवरोध पैदा हो जाता है।

अनुवाद में दो उपवाक्यों के बदले तीन उपवाक्य मिलते है। हिन्दी और अंग्रेज़ी में कार्यालयीन सामग्री की शौली अलग है इसलिए ही अंग्रेज़ी में वृत्तिबोधक क्रिया `would' का प्रयोग किया गया है तो हिन्दी में इसको `निवेदन' शब्द से व्यक्त किया गया है।

उपर्युक्त दोनों अनुवादों में तथ्य का संप्रेषण अपनी-अपनी भषा-षौली के अनुसार की गई है, जिसमें व्याकरणिक अनुवाद का कोई स्थान नहीं है।

1. PROGRESSIVE USE OF HINDI IN THE BANK-QPR

Administrative Office.....

Ref. No. Date.....

The Manager,

Branch Office,

Dear Sir,

Sub: Progressive use of Hindi in the Bank- Progress Report for the Quarter ending.....

You are well aware that the captioned report is to be sent to the Head Office at the end of every quarter.

It has been observed that some of our branches including your branch do not send the report regularly and the Head Office has to issue reminders which results in the wastage of time.

You are requested to send the report to for this quarter to the Head Office by...positively under intimation to us and further please ensure that in

future the captioned report is sent within 15 days after the expiry of the relevant quarter.

Yours faithfully,

(.....)

Regional Manager.

बैंक में हिन्दी का प्रगामी प्रयोग तिमाही प्रगति रिपोर्ट

संदर्भ सं..... प्रशासनिक कार्यालय.....

प्रबंन्धक दिनांक.....

शाखा कार्यालय

प्रिय महोदय,

विषय: बैंक में हिन्दी का प्रगामी प्रयोग.....को समाप्त तिमाही की प्रगति रिपोर्ट

आपको विदित ही है कि उपर्युक्त रिपोर्ट प्रत्येक तिमाही के अंत में प्रधान कार्यालय को भेजी जाती है।

यह देखा गया है कि हमारी कुछ शाखाएँ, जिनमें आपकी शाखा भी शामिल है, अपनी रिपोर्ट नियमित रूप से नहीं भेजती हैं और प्रधान कार्यालय को अनुस्मारक जारी करने पड़ते हैं, जिनसे समय की बरबादी होती है।

आपसे अनुरोध है कि आप इस तिमाही की रिपोर्ट प्रधान कार्यालय को.....तक अवश्य भेज दें और हमें भी उसकी सूचना दें। कृपया भविष्य में यह रिपोर्ट प्रासंगिक तिमाही की समाप्ति से 15 दिन के अन्दर भेजने की सुनिश्चित व्यवस्था करें।

भवदीय

(.....)

क्षेत्रीय प्रबंधक

यहाँ पहला वाक्य `आदेश सूचक' है, उसका अनुवाद सामान्य बात के समान ही अकर्तृवाच्य वाक्य है। .....which results in the wastage of time' का अनुवाद ` जो समय की बरबादी में परिणत होता है' । हिन्दी की शैली के अनुसार `जिससे समय की बरबादी होता है' ही उचित प्रयोग है। तीसरा वाक्य संयुक्त वाक्य है, उसका अनुवाद दो वाक्यों में किया गया है।

## 2. LETTER REGARDING ACCOUNT OPERATIONS

Ref. No.....

Branch.....

Date.....

Mr./Smt./Kum.....

Dear Sir/ Madam,

Sub: Your Savings Bank Account No.....

Your above account is not being operated since long. We shall be thankful if you will start operating the said account and give us an opportunity to serve you.

We request you to kindly call on us in this connection along with the relevant pass book.

Yours faithfully,

(.....)

Manager.

खाते के संचालन के बारे में पत्र

संदर्भ सं. शाखा.....

श्री श्री/श्रीमती/कु.....

दिनांक:.....

प्रिय महोदय / महोदया,

विषय: आपका बैंक खाता सं.....

आपका उपर्युक्त खाता काफी समय से संचालित नहीं हो रहा है। हमारा अनुरोध है कि आप उक्त खाते का संचालन प्रारंभ करके हमें सेवा का अवसर दें।

हमारा अनुरोध है कि आप इस संबन्ध में हमसे मिलें। कृपया संबन्धित पास बुक साथ लेते आयें।

भवदीय

(.....)

प्रबंधक

यहाँ `We shall be thankful.....' का अनुवाद (हम आभारी रहेंगे) नहीं किया गया है और `if.....' शर्तसूचना को छोड़ दिया गया है। अगले सरल वाक्य का अनुवाद दो वाक्य हैं जिनमें एक मिश्रवाक्य है।

1. Presidential Order on the recomendation made by the Committee of Parliament on official Language in the First Part of its Report.

Copy of the Govt. of India, Ministry of Home Affairs (Department of Official Language)

Resolution No. 1/20012/1/87-0L (A-I) dated 30th December 1988.

The Committee of Parliament of Official Language was constituted under section 4(1) of the Official Languages Act 1963 (as amended). In accordance with the provisions of section 4(2) of the same act, the commitee was constituted with 20 members of the Lok Sabha and 10 members of the Rajya Sabha. The Committee submitted the Ist part of its Report to the President in January, 1987, wherein it had made recommendations regarding the translation arrangements, training facility in translation and availability of reference and help literature in Central Government Offices. The 1st volume of the Report was placed before both Houses of Parliament on 8th May, 1987 and its copies were duly sent to all the State Governments and Union Territories. As the recommendations concerned the transaction of official business in various Ministries/ Departments, their opinion was also taken.

संसदीय राजभाषा समिति के प्रतिवेदन के प्रथम खण्ड में की गई सिफारिशों पर राष्टपति जी का आदेश।

भारत सरकार, गृह मंत्रालय (राजभाषा विभाग) के दिनांक 30 दिसंबर, 1988 के संकल्प संख्या 1/20012/1/87-रा. भा. (क-1) की प्रति

राजभाषा अधिनियम 1963 की धारा 4(1) के अधीन संसदीय राजभाषा समिति गठन की गई थी। धारा 4(2) के अधीन इस समिति में बीस सदस्य लोक सभा से और दस सदस्य राज्य सभा से नियुक्त किए जाए। समिति ने अपने प्रतिवेदन का प्रथम खण्ड राष्टपति को जनवरी, 1987 में प्रयुक्त किया, जिसमें समिति ने कन्दीय सरकार के कार्यालयों में अनुवाद व्यवस्था, अनुवाद प्रशिक्षण, संदर्भ और संपूरक साहित्य के सम्बन्ध में अपनी सिफारिशें दी हैं। प्रतिवेदन का प्रथम खण्ड अधिनियम की धारा 4(3) के अनुसार तारीख 8 मई 1987 को संसद के दोनों सदनों के पटल पर रखा गया तथा इसकी प्रतियाँ सभी राज्यों / संध राज्य क्षेत्रों की सरकारों को भेजी गई। चूँकि सिफारिशों का सम्बन्ध विभिन्न मंत्रालयों / विभागों में होनेवाले कामकाज से था, अतः इस सम्बन्ध में उनसे भी राय ली गई।

यह अनुवाद प्रायः मूल के अनुरूप है। इसमें कोई हरे-फेर नहीं देखा जा सकता।

Development of a technology as sophisticated as that of space, especially in a developing country, has to be necessarily a step-by-step process. Thus, over the years, the Indian Space Programme has had to go through exprimental and developmental phases before attaining operational status. In the crucial field of satellite communication, the operational phase has already been attained. For example, India's first multipurpose domestic satellite system, INSAT-1, is already providing operational services to the nation in telecommunications, nationwide telecast, disaster warning, meteorology etc. Similarly, the National Natural Resources Management System (NNRMS) which includes generation of integrated data and analy-

sis and dissemination of information derived from remotely sensed imageries, is fast progressing towards operational status.

अंतरिक्ष जैसे परिष्कृत तकनीकी विकास में, वह भी विशेष रूप में, विकासशील देश का सीढी-दर-सीढी बढते जाना ज़रूरी है। अत: वर्षों तक भारतीय अंतरिक्ष कार्यक्रम को प्रचालनात्मक स्थिति प्राप्त करने के पहले प्रयोगात्मक एंव विकासात्मक चरणों से गुज़रना पडा। उपग्रह संचार जैसे जटिलतम क्षेत्र में प्रचालनात्मक चरण पहले ही प्राप्त कर लिया गया है। उदाहरण के लिए भारत की प्रथम बहु उद्देशीय घरेलू उपग्रह प्रणाली, इन्सैट 1 देश को दूर संचार, देशव्यापी दूरदर्शन प्रसारण, आपदा चेतावनी, मौसम विज्ञान, इत्यादि में प्रचालनात्मक सेवाएँ प्रदान कर रही है। इसी प्रकार राष्टीय प्राकृतिक संसाधन प्रबंध प्रणाली (एन. एन. आर.एम. एस), जिसमें समेकित आँकडों का निर्माण, तथा सुदूर संवेदित प्रतिबिंबिकियों से व्युत्पन्न सूचना का विश्लेषण तथा प्रसारण शामिल है, प्रचालनात्मक स्थिति की और तीव्रगति से बढ रही है।

यहाँ अनुवाद मूल के तथ्य को संप्रेषित करने में सफल है। दोनों भाषाओ की शैली के अनुसार ही यहाँ अनुवाद किया गया है। मूल की व्याकरणिक संरचना का पालन तो पूर्ण रूप से नहीं किया गया है।

## 5.3 मशीनी अनुवाद

अनुवाद का मशीनीकरण मानवराशि का एक स्वप्न था, जो बीसवीं सदी में पूरा हो गया। लेकिन अब तक कोई ऐसी मशीन नहीं बना सका जो किसी भी सामग्री का सफल अनुवाद बिना मनुष्य की सहायता से कर सके।

मशीनी अनुवाद की मुख्य समस्या संगणक या कंप्यूटर से सम्बन्धित नहीं है, भाषावैज्ञानिक समस्या है। अर्थपरक अस्पष्टता, वाक्य संरचना की जटिलता, समानार्थी शव्दों का अभाव, व्याकरणिक भिन्नता, शैली का वैविध्य, संस्कृति से सम्बद्ध शब्द आदि इसके अन्तर्गत आते हैं।

भाषावैज्ञानिक दृष्टि से अनुवाद में समानार्थी शब्दों की खोज ही पहली समस्या है। इसकेलिए कंप्यूटर में एक शब्दकोश की तैयारी की जाती है। उससे दोनों भाषाओ के शब्दों से संबन्धित सभी जानकारी भी मिलती है। फिर भी `Homographs', `Homophones' और `Polesemes' मशीनी अनुवाद में समस्या पैदा करती हैं। किन्हीं दो भाषाओ में सभी स्तर पर /सभी शब्दों के लिए `एक-एक विनिमय' (one-to-one correspondence) नही मिलता, कभी-कभी `अनेक-एक विनिमय' (many-to-one correspondence) और कभी-कभी `एक-अनेक विनिमय' (one-to-many correspondence) मिलते हैं।

यहाँ कुछ वाग्भागों के विनिमय का विश्लेषण करके अनुवाद के लिए उपयुक्त एक `मेटालैंग्वेज' (Meta language) की तैयारी के बारे में चर्चा की जाती है। यह `P-C-G theory' [P.C. Ganesasundaram, The Problems of Translation, 1993, लोकभारती प्रकाशन, अलहाबाद] के आधार पर किया जा सकता है।

स्रोतभाषा और लक्ष्यभाषा के शब्दों को उसके मूल रूप में `कंप्यूटर शब्दकोश' में रखकर उनके साथ चिह्न लगाया जाता है। व्यक्तिवाचक संज्ञा (जिसमें कोई परिवर्तन नहीं

होता) को सूचित करने के लिए ' लगाना चाहिए। संज्ञा हो तो पुल्लिग एकवचन रूप को मूल समझकर उसके साथ परसर्ग या पूर्वसर्ग जोडा जाता है, जैसे-

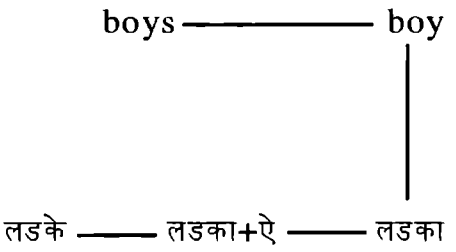


छोटा 0 ——— छोटा ——— small 0

छोटा 1 ——— छोटी ———small 1

छोटा 2 ——— छोटे ——— small 2

छोटी 3 ——— छोटी——— small 3

अंग्रेज़ी में विशेषण शब्दों का विकार नहीं होता, इसलिए `छोटा' के सभी रूपों के लिए समानार्थी शब्द (equivalent) चिह्न लगाकर बनाया गया है।

वह1 He/ that

वह2 She/that

यह1 He/this

यह2 She/this

तू1 You1

तुम2 You 2

आप3 You 3

यहाँ 0,1,2..... के स्थान पर अन्य चिह्न लगाया जा सकता है, सभी वाग्भागों के साथ एक ही चिह्न नहीं लगाना चाहिए क्योंकि उससे अस्पष्टता होने की संभावना है। अंग्रेजी और हिन्दी का शब्द-क्रम अलग होने के कारण इसे अन्त में लक्ष्यभाषा के अनुसार परिवर्तित करना है। उसके बाद ही चिह्नों को जोडकर अनुवाद पूरा किया जाता है। इस प्रक्रिया में कम से कम आठ प्रक्रियाएँ शामिल हैं। यह कंप्यूटर प्रोग्रोम, कंप्यूटर भाषा `प्रोलोग' (PROLOG) में आसानी से तैयार किया जा सकता है। सरल वाक्यों का अनुवाद इसप्रकार किया जा सकता है, लेकिन मिश्र -वाक्यों के अनुवाद में गणित प्रतिरूपों (Mathematical models) का उपयोग किया जाता है।

## निष्कर्ष

साहित्यिक और साहित्येतर सामग्रियों के अनुवाद के विश्लेषण से विदित होता है कि साहित्यिक विषयों के अनुवाद में अनुवादक काफी स्वतंत्र है। उसमें मूल की व्याकरणिक संरचना के साथ चलना नहीं उस भाव को लक्ष्यभाषा में उसी सौन्दर्य के साथ अभिव्यक्त करना मात्र पर्याप्त है। लेकिन साहित्येतर या कार्यालयीन सामग्री या वैज्ञानिक साहित्य के अनुवाद में अनुवादक उतना स्वतंत्र नहीं है। उसमें लक्ष्य भाषा की शैली के अनुसार अनुवाद किया जा सकता है लेकिन तथ्यात्मक होने के कारण भाव का कोई स्थान नहीं है इसलिए कुछ भी नहीं छोड या जोड दिया जा सकता है। प्रशासनिक भाषा के वाक्य प्राय: लम्बे और संश्लिष्ट होते हैं। हिन्दी गद्य का विकास प्राय: अंग्रेज़ी के अनुकरण पर होने के कारण प्रशासनिक सामग्री के अनुवाद में इसका स्पष्ट प्रभाव देखा जा सकता है। विज्ञान में तथ्य की प्रधानता के कारण मूल की कोई परवाह नहीं की जाती। तथ्य की अभिव्यक्ति किसी भी प्रकार-से लक्षय भाषा में लानी चाहिए।

मशीनी अनुवाद के क्षेत्र में आजकल काफी शोध किए जा रहे हैं। इस सिलसिले में `P.C.G. Theory' का प्रयोग करके स्रोत और लक्ष्यभाषा की संरचना का विश्लेषण किया जा सकता है और उससे अनुवाद के लिए एक मेटालैंग्वेज (Metalanguage) तैयार किया जा सकता है। यह मशीनी अनुवाद में एक नया कदम ही है।

# उपसंहार

अनुवाद अन्त:संप्रेषण की प्रक्रिया है जिसका विश्वसंस्कृति, सभ्यता और सब तरह की प्रगति में अत्यन्त महत्वपूर्ण योगदान रहा है। शब्दों के व्याकरणिक अन्वयन से वाक्यार्थ पूर्ण हो जाता है। इसलिए भाषा में व्याकरण के महत्व के समान या उनसे भी अधिक अनुवाद में व्याकरण का महत्व है। इसीलिए स्रोतभाषा के शब्दों के लिए लक्ष्यभाषा में समानार्थी शब्द मिलने पर भी अनुवाद नहीं किया जा सकता। अत: दोनों भाषाओ की व्याकरणिक विशेषताओ का सम्यक ज्ञान अनुवादक के लिए आवश्यक है।

हिन्दी और अंग्रेजी की व्याकरणिक विशेषताएँ ही अनुवाद में कठिनाई उत्पन्न करती हैं। संज्ञा-संबन्धी समस्याओ में हिन्दी संज्ञा की जटिल लिंग-व्यवस्था से उत्पन्न समस्यायें ही मुख्य हैं। सचेतन और अचेतन सभी संज्ञा शब्दों को दो व्याकरणिक लिंगों के अन्तर्गत रखने से अंग्रेजी-हिन्दी अनुवाद में हिन्दी के सारे के सारे संज्ञा शब्दों का व्याकरणिक लिंग-ज्ञान आवश्यक है। अंग्रेजी और हिन्दी दोनों भाषाओ में कुछ शब्दों का प्रयोग मात्र एकवचन में होता है, तथा कुछ शब्दों का प्रयोग मात्र बहुवचन में। अंग्रेजी-हिन्दी और हिन्दी-अंग्रेजी अनुवाद में इन शब्दों पर विशेष ध्यान देना चाहिए। अंग्रेजी में कारकीय रचना के लिए सम्बन्ध सूचकों का प्रयोग होता है। सम्बन्धकारक (Possessive case) में चेतन वस्तुओ के साथ ही `'s' जोडा जाता है। हिन्दी में कारक के अनुसार वाक्य रचना में परिवर्तन होने के कारण अंग्रेजी-हिन्दी अनुवाद में हिन्दी की कारकीय रचना की जानकारी अवश्य होनी चाहिए।

सर्वनाम संख्या में कम होने पर भी इनकेलिए समानार्थी सर्वनामों का प्रयोग कभी-कभी कठिन हो जाता है। इनके लिए किन्हीं नये शब्दों का निर्माण तो नहीं हो सकता। मध्यम पुरुष सर्वनामं अंग्रेजी में एक ही है, तो हिन्दी में तीन मिलते हैं। इनके अनुसार क्रिया भी बदलती है। इसलिए इनका अनुवाद सन्दर्भानुसार करना पडता है। हिन्दी में `कुछ-

कुछ', `कोई-कोई', `क्या-क्या', `कौन-कौन' जैसे द्विरुक्त सर्वनाम मिलते हैं। इनके स्थान पर समानार्थी द्विरुक्त सर्वनाम अंग्रेजी में नहीं मिलता। पुरुवाचक सर्वनाम `it' के लिए भी हिन्दी में ठीक समानार्थी शब्द नहीं है। इसके लिए `यह' और `वह' का प्रयोग किया जाता है। `it' के विशेष प्रयोगों में समानार्थी शब्द का प्रयोग ही नहीं होता। अंग्रेजी सर्वनाम `some' और `any' के लिए हिन्दी में `कुछ' का प्रयोग और `somebody' और `anybody' के लिए `कोई' का प्रयोग होता है। उस प्रकार सर्वनामों के प्रयोग में हिन्दी की क्षमता अंग्रेजी की अपेक्षा कम है।

अंग्रेजी के विशेषण शब्द विकारी नहीं हैं, परन्तु हिन्दी के विशेषण शब्द विकारी हैं। इसलिए विशेष्य के लिंग, वचन और कारक के अनुसार होनेवाले परिवर्तन पर भी ध्यान देना चाहिए। अंग्रेजी में कुछ विशेषणों का प्रयोग विशेष्य के पहले या बाद में आने से अर्थ में थोडा सा अन्तर पाया जाता है। इनके अनुवाद में भी सतर्क रहना चाहिए।

क्रिया की सकर्मकता-अकर्मकता के कारण हिन्दी में कर्ता के साथ `ने' का प्रयोग होता है। वाक्य-रचना भी इसपर आधृत है। इसलिए अंग्रेजी-हन्दी अनुवाद में इसपर भी ध्यान देना चाहिए। हिन्दी की रंजक क्रियाओ का वास्तविक प्रकार्य समझना कभी-कभी कठिन हो जाता है। इसलिए इनका अनुवाद भी कठिन है। दोनों भाषाओ में सहायक क्रियाओं का प्रयोग विशेष ध्यान देने योग्य है। काल की अभिव्यक्ति में भी अंग्रेजी और हिन्दी दोनों भिन्नता रखती है।

अव्ययों में क्रियाविशेषण के अनुवाद में कठिनाई अपेक्षाकृत कम है। अंग्रेजी के कुछ क्रियाविशेषण के दो रूप होते हैं और इनमें अर्थभेद भी होता है। अनुवाद करते वक्त इन्हें ठीक से ग्रहण कर प्रयोग करना चाहिए। द्विरुक्त कृदन्ती क्रियाविशेषण हिन्दी की एक विशेषता है, जो अंग्रेजी में नहीं पायी जाती। इनके अनुवाद में रीतिवाचक क्रियाविशेषणों का भी प्रयोग कृदन्ती विशेषणों के अलावा किया जा सकता है। हिन्दी के परसर्ग और

अंग्रेजी के सम्बन्धसूचक इन दोनों का प्रयोग निश्चित नहीं है। ये सन्दर्भाश्रित है। अत: इसका प्रयोग बडी सावधानी से करना चाहिए। हिन्दी में समुच्चयबोधक अव्ययों की भरमार है, जिससे अंग्रेजी-हिन्दी अनुवाद के कई संभावनायें हैं। वास्तव में मनोभवाबोधक अव्ययों का, व्याकरणिक संरचना में कोई स्थान नहीं है। इसलिए इनका प्रयोग सन्दर्भानुसार करना चाहिए। अंग्रेजी के उपपदों के लिए हिन्दी में कोई समानार्थी शब्द नहीं मिलता। ये दो ही हैं फिर भी वाक्य में इनका महत्वपूर्ण स्थान है। हिन्दी-अंग्रेजी और अंग्रेजी-हिन्दी अनुवाद में इसपर ध्यान देना चाहिए।

हिन्दी वाक्यों में शब्दों का स्थान क्रम अंग्रेजी से भिन्न है। दोनों भाषाओं में एक हद तक शब्दों का क्रम बदल भी सकता है। लेकिन हिन्दी में इसकी अधिक संभावनाएँ हैं। क्रम बदलने से अर्थ भी बदल जाता है। इस अर्थ पर ध्यान देकर अनुवाद करना चाहिए। नहीं तो अर्थ का अनर्थ हो जाएगा। हिन्दी में निषेधवाचक वाक्यों की अभिव्यक्ति कई प्रकार कर सकते हैं। क्योंकि निषेधवाचक शब्द हिन्दी में अंग्रेजी से ज्यादा मिलता है। इनका प्रयोग सन्दर्भाश्रित है। अत: अंग्रेजी-हिन्दी अनुवाद में सही निषेधवाचक शब्दों को चुनने में सतर्क रहना चाहिए। हिन्दी के विशेष प्रकार के निषेधवाचक वाक्यों का अर्थ समझना मुश्किल है। यही अर्थ-ग्रहण से ही सही अनुवाद किया जा सकता है। हिन्दी के प्रश्नवाचक वाक्यों में प्रश्नवाचक शब्द का प्रयोग कही भी कर सकते हैं, अंग्रेजी में यह संभव नहीं है। `हाँ'-`न' प्रश्नवाचक वाक्यों में अंग्रेज़ी में प्रश्नवाचक शब्दों का प्रयोग नहीं होता। सहायक क्रियाओ के प्रयोग से ये बनाये जाते हैं। अंग्रेजी में क्रिया के विधिरूप नहीं मिलते। हिन्दी में तीनों मध्यम पुरुष सर्वनामों के लिए विधि रूप मिलते हैं। अंग्रेजी के विस्मयादिबोधक वाक्यों में शब्द-क्रम में परिवर्तन देखा जा सकता है। इस प्रकार शब्द-क्रम में परिवर्तन हिन्दी में नहीं मिलता।

हिन्दी वाक्य-संरचना पर अंग्रेजी वाक्य-संरचना का प्रभाव देखा जा सकता है। लम्बे-लम्बे, संयुक्त और मिश्र वाक्य हिन्दी की प्रकृति के अनुकूल न होने पर भी ये काफी मिलते हैं। इनका अनुवाद भी लम्बे-लम्बे वाक्यों में होते हैं; इन्हें सरल वाक्यों में अनुवाद करना चाहिए।

अंग्रेजी में अकर्तृवाच्य का प्रयोग काफी मिलता है, इनका अनुवाद हिन्दी में कर्तृवाच्य में भी किया जाता है। अत: लक्ष्यभाषा की शैली के अनुसार कर्तृवाच्य या अकर्तृवाच्य में अनुवाद करने के लिए अनुवादक स्वतंत्र है।

साहित्यिक और साहित्येतर विषयों के अनुवाद की समस्यायें अलग हैं। साहित्यिक विषयों के अनुवाद में अनुवादक स्वतंत्र है। साहित्येतर अनुवाद में तथ्य को केन्दित करके अनुवाद किया जाना चाहिए। साहित्यिक और साहित्येतर विषयों के अनुवाद में व्याकरण का अपना महत्व है।

मशीनी अनुवाद आज बहुचर्चित क्षेत्र है। अंग्रेजी और हिन्दी में मशीनी अनुवाद के क्षेत्र में अध्ययन काफी हो रहा है। इसके लिए कंप्यूटर शब्दकोश और मेटालैंग्वेज की तैयारी करनी चाहिए। मेटालैंग्वेज तैयार करने के लिए लक्ष्यभाषा और श्रोतभाषा दोनों का व्यतिरेकी व्याकरण बहुत ही सहायक है। कंप्यूटर भाषा `प्रोलोग' (Prolog) इसकेलिए उपयुक्त अनुयोज्य भाषा है।

इस व्यतिरेकी अध्ययन से स्पष्ट हो जाता है कि अंग्रेजी-हिन्दी और हिन्दी-अंग्रेजी अनुवाद में आनेवाली व्याकरणिक समस्याओ का समाधान दोनों भाषाओ की व्याकरणिक विशेषताओ के सम्यक ज्ञान से हो सकता है। वाक्यार्थ का स्पष्टीकरण व्याकरण का उद्देश्य है। अत: इस प्रकार के अध्ययन का अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान है। वस्तुत: व्याकरण के एक एक पक्ष को लेकर अनुवाद के संदर्भ में विस्तार से गहन अध्ययन की काफी गुंजाइश है।

# संदर्भ ग्रन्थ सूची:- (हिन्दी)


1. अच्छी हिन्दी कैसे बोलें, कैसे लिखें, डॉ० भोलानाथ तिवारी, 1988, लिपि प्रकाश न।

2. अच्छी हिन्दी: सुन्दर हिन्दी, श्री शरण, 1990, दिनमान प्रकाशन, नई दिल्ली।

3. अनुवाद अवधारणा और अनुप्रयोग, डॉ० चंद्रभान रावत, डॉ० दिलीप सिंह, 1988, नेशनल पब्लिशिंग हाउस।

4. अनुवाद कला, डॉ० एन० ई० विश्वनाथ अय्यर, 1990, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली।

5. अनुवाद चिन्तन के सैद्धान्तिक आयाम, डॉ० गार्गी गुप्त, डॉ० ओमप्रकाश सिंहल, 1991, भारतीय अनुवाद परिषद।

6. अनुवाद: भाषाएँ, समस्याएँ, डॉ० एन० ई० विश्वनाथ अय्यर, 1992, ज्ञान गंगा।

7. अनुवाद विज्ञान, डॉ० भोलानाथ तिवारी, 1989, शब्दकार, दिल्ली।

8. अनुवाद सिद्धान्त और स्वरूप, डॉ० मनोहर सराफ, डॉ० शिवकान्त गोस्वामी, 1989, विधा प्रकाशन, कानपुर।

9. अनुवाद सिद्धान्त और प्रयोग, डॉ० जी० गोपीनाथन, 1990, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद।

10. अनुवाद सिद्धान्त की रूपरेखा, डॉ० सुरेश कुमार, 1989, वाणी प्रकाशन।

11. आधुनिक भाषा विज्ञान, कृपाशंकर सिंह, चतुर्भुज सहाय, 1977, नेशनल पब्लिषिंग

हाउस, नई दिल्ली।

12. आधुनिक भाषा विज्ञान (चिन्तन की कतिपय दिशाएँ), 1972, डॉ० मोतीलाल गुप्त, Research Publications in Social Sciences.

13. खडीबोली का व्याकरणिक विश्लेषण, तेजपाल चौधरी, 1990, विकास प्रकाशन कानपुर।

14. प्रयोजन मूलक हिन्दी व्याकरण, डॉ० द्विजराम यादव, 1989, साहित्य रत्नाकर, कानपुर।

15. भाषा चिंतन, डॉ० भोलनानाथ तिवारी, 1971, स्मृति प्रकाशन, इलाहाबाद।

16. भाषिकी (खंड-एक), डॉ० भोलानाथ तिवारी, डॉ० रवींद्र श्रीवास्तव, 1971, नेशनल पब्लीषिंग हाउस, नई दिल्ली।

17. विदेशी भाषाओ से अनुवाद की समस्यायें, भोलानाथ तिवारी, नरेश कुमार, 1981, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली।

18. व्यावहारिक हिन्दी व्याकरण, जगदीश प्रसाद कौशिक, 1985, साहित्य सहकार, जयपुर।

19. व्यावहारिक हिन्दी व्याकरण, डॉ० हरदेव बाहरी, 1982, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद।

20. सर्वनाम, अव्यय और कारकचिह्न, डॉ० सीता किशोर, 1989, आराधना ब्रदर्स, कानपुर।

21. हिन्दी भाषा का परिचय, बिन्दुमाधव मिश्र, 1972, राजेश प्रकाशन, दिल्ली।

22. हिन्दी भाषा की आर्थी-संरचना, डॉ० भोलानाथ तिवारी, डॉ० किरण बाला, 1984, साहित्य सहकार, दिल्ली।

23. हिन्दी व्याकरण, कामता प्रसाद गुरू, 1972, नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी।

24. हिन्दी भाषा की रूप-रचना, डॉ० भोलानाथ तिवारी, 1986, साहित्य सहकार, दिल्ली।

25. हिन्दी भाषा का वर्तनमान रूप, चंद्रगुप्त वाष्णेय, 1989, साहित्य सहकार, जयपुर।

26. हिन्दी भाषा शब्द संरचना, डॉ० भोलानाथ तिवारी, डॉ० किरण बाला, 1985, साहित्य सहाकार, दिल्ली।

27. हिन्दी का विवरणात्मक व्याकरण, डॉ० लक्ष्मीनारायण शर्मा, 1991, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।

28. हिन्दी भाषा पर फारसी और अंग्रेजी का प्रभाव, डॉ० मोहनलाल तिवारी, 1969, नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी।

29. हिन्दी में व्यावहारिक अनुवाद, डॉ० आलोक कुमार रास्तोगी, डॉ० पवनकुमार मिश्र, 1984, जीवनज्योति प्रकाशन, दिल्ली।

30. हिन्दी शब्दानुशासन, किशोरीदास वाजपेयी, 1957, नागरी प्रचारिणी सभा, वाराण सी।

शोध पत्रिकाएँ

1. अनुवाद, दिसंबर 1986, अंक 4, भारतीय अनुवाद परिषद।

2. अनुवाद, अक्तूबर-दिसंबर 1990, भारतीय अनुवाद परिषद।

3. अनुवाद, फरवरी 1966, अंक 3, भारतीय अनुवाद परिषद।

4. अनुवाद, आगस्त 1966, भारतीय अनुवाद परिषद।

5. अनुवाद, फरवरी 1966, अंक 3, भारतीय अनुवाद परिषद।

6. भाषा, मार्च-जून 1975, केंद्रीय हिन्दी निदेशालय।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची (अंग्रेजी)

1. A Description of English, A.E. Darbyshire, 1967, Edward Arnold Ltd., London.

2. An Introduction to Machine Translation, W. John Hutchins & Harold L. Somers, 1992, Academic Press Inc. San Diego.

3. An Introduction to Descriptive Linguistics, H.A. Gleason Jr. Holt, Rinehart and Winston.

4. A Handbook of Applied Grammar and Composition, M.P. Bhatia, 1993, M.I. Publications, Agra.

5. A Modern English Grammar, Knud Shibsbye, 1965, Oxford University Press, London.

6. A Practical English Grammar, A.J. Thomson, A.V Martinet, 1987, Oxford University Press.

7. Aspects of Hindi Grammar, Yamuna Kachru, 1980, Manohar.

8. Aspects of Translation - Studies in Communication - 2, 1958, Secker and Warburg, University College, London.

9. A University Grammar of English, Randolph Quirk, Sydney Greenbaum, 1989, ELBS, Longman, Harlow.

10. High School English Grammar and Composition, Wren & Martin, 1990, S. Chand & ompany, New Delhi.

11. Hindi Vyakaran, S.R. Sastri, Balachandra Apte, 1991, Dakshin Bharath Hindi Prachar Sabha, Madras.

12. Language, Leonard Bloomfield, 1962, Ruskin House, George Allen & Unwin Ltd.

13. Linguistics, Archibald A Hill, 1969, Voice of America Forum Literature.

14. Linguistics and English Grammar, H.A. Gleason Jr., 1965, Harold

Seminary Foundation, Holt, Rinehart and Winston, Inc., New York.

15. Problems of Translation, H. Lakshmi, 1993, Booklinks Corporation, Hyderabad.

16. Scientific and Technical Translation, Isadore Pinchuck, 1977, Andre' Deutsch Ltd., London.

17. Syntactic Structres, Noam Chomsky, 1969, Mouton, The Hague, Paris.

18. The English Language, Vol. 2, W.F. Botton & D. Crystal, 1969, Cambridge University, Press.

19. The Foreign Language Barier, J.A. Large, 1983, Andre Deutsch Ltd., London.

20. The Problems of Translation, G. Gopinathan, S. Kandaswamy, 1993, लोकभारती प्रकाशन, अलाहाबाद।

21. The Philosophy of Grammar, Otto Jesperson, 1963, George Allen & Unwin Ltd.

22. The Practical Study of Languages, Henry Sweet, 1964, J.M. Dent & Sens Ltd., Oxford University Press, Amen House, London.

23. Translation, Richard W. Brislin, 1976, Gardner Press, Inc., New

York.

24. The Theory and Practice of Translation, Eugene A. Nida & Charles R. Taber, 1982. E.J. Brill, Leiden.

25. What is Linguistics? David Crystal, 1971, University of Reading, Edward Arnold Ltd.

शोध पत्रिकाएँ (अंग्रजी)

1. Indian Journal of Applied Linguistics Vol. III, No. 1. Jan. 1982, Bahri Publication Pvt. Ltd. New Delhi.

2. Indian Journal of Applied Linguistics, Vol. 15, No. 2, July-Dec. 1989, Bahri Publications Pvt. Ltd. New Delhi.

3. Indian Journal of Applied Linguistics, Vol. VII, No. 1 & 2, Jan. & June 1981, Bahri Publications Ltd. New Delhi.

4. Indian Journal of Applied Linguistics Vol. 15, No. 2, Jul. Dec. 1989, Bahri Publications Pvt. Ltd., New Delhi.

5. Indian Linguistics Vol. 38, No. 1. March 1977. Linguistic Society of India.

6. Indian Linguistics Vol. 50, March Dec. 1989. Linguistic Society of

India.

7. Indian Linguistics Vol. 41, No. 2, June 1979

8. Indian Linguistics Vol. 41, No. 3 - 4, Sept. - Dec. 1990

9. Indian Linguistics Vol. 41, No. 2, June 1980.

शब्दकोश

1. बृहत परिभाषिक शब्द संग्रह-मानविकी खण्ड I & II, 1979, वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग, केन्दीय हिन्दी निदेशालय, नई दिल्ली।

2. मानक अंग्रेजी हिन्दी कोश, सं० सत्यप्रकाश, बलभद्र प्रसाद मिश्र 1983, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग।

---

UNIVERSITY LIBRARY * COCHIN UNIVERSITY OF SCIENCE AND TECHNOLOGY * COCHIN - 682 022